Vol.22, Issue 5 | Annual Subscription ₹480

@NewsRotary
/RotaryNewsIndia

मार्च 2023

रोटरी समाचार

भारत
www.rotarynewsonline.org

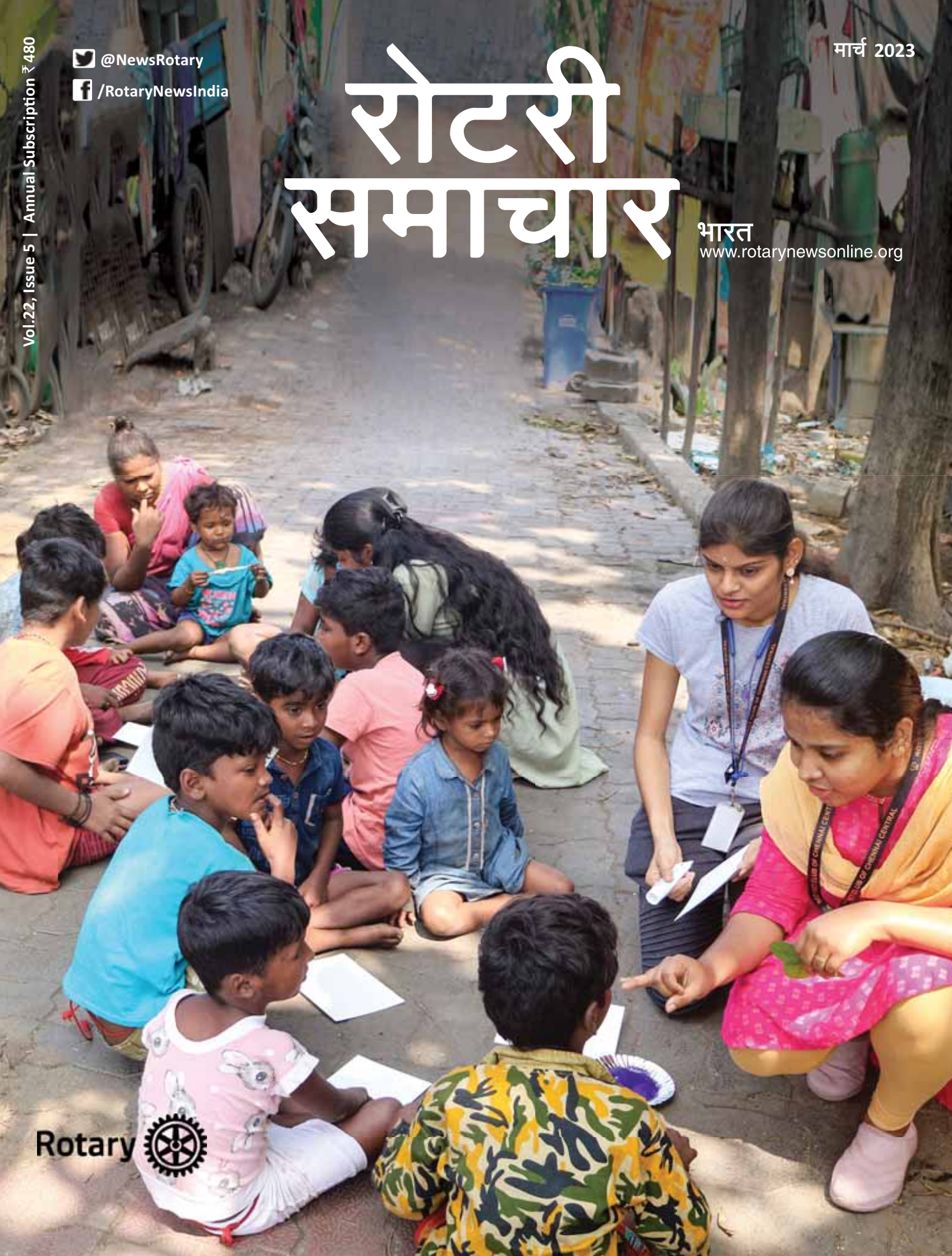

Rotary

पोलियो खत्म करने के लिए लंबी उड़ान

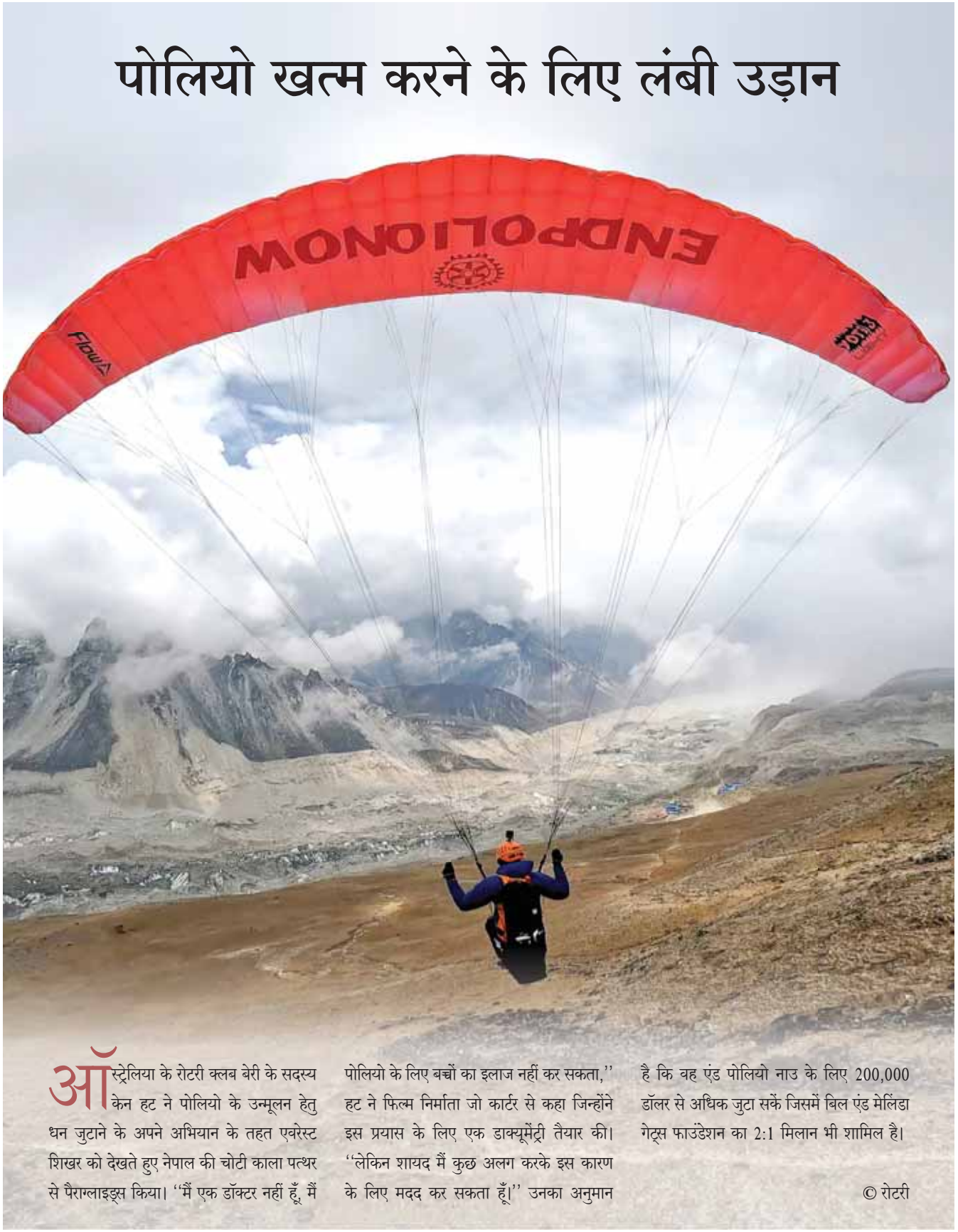

ऑस्ट्रेलिया के रोटरी क्लब बेरी के सदस्य केन हट ने पोलियो के उन्मूलन हेतु धन जुटाने के अपने अभियान के तहत एवरेस्ट शिखर को देखते हुए नेपाल की चोटी काला पत्थर से पैराग्लाइड्स किया। ''मैं एक डॉक्टर नहीं हूँ, मैं पोलियो के लिए बच्चों का इलाज नहीं कर सकता,'' हट ने फिल्म निर्माता जो कार्टर से कहा जिन्होंने इस प्रयास के लिए एक डाक्यूमेंट्री तैयार की। ''लेकिन शायद मैं कुछ अलग करके इस कारण के लिए मदद कर सकता हूँ।'' उनका अनुमान है कि वह एंड पोलियो नाउ के लिए 200,000 डॉलर से अधिक जुटा सकें जिसमें बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन का 2:1 मिलान भी शामिल है।

© रोटरी

विषयसूची

12
रोटरेक्टर पुल के किनारे एक विशेष कक्षा चलाते है

16
टीआरएफ का विकास

22
पांडुरंगा सेट्टी: एक अनुकरणीय व्यक्ति, एक प्रेरणादायक और भरोसेमंद मित्र

26
सिंगापुर के रोटेरियनों ने की रोटरी क्लब सोनकच्छ के साथ साझेदारी

32
नागपुर के रोटेरियन आदिवासी कल्याण के लिए काम करते है

36
वरकारी बच्चों के लिए शिक्षा

38
रोटरी को जनता से जुड़ना चाहिए

44
ग्रामीण महिलाओं की प्रसव पूर्व देखभाल

48
अखिल-महिला कार रैली ने तोड़ी बेड़ियां

52
अध्यक्ष जोन्स ने श्रीलंका के कई कार्यक्रमों में भाग लिया

54
रोटरी एक्सपो जालना में स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है

68
वाणी जयराम: एक अद्भुत आवाज़ मौन

74
साधारण व्यायाम से रक्त शर्करा को नीचे लाएं

76
बेहतर विकल्प की ओर

आपके पत्र

एक उपयुक्त स्कूल परियोजना

फरवरी अंक के कवर फोटो में रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली द्वारा तैयार किए गए गांव के स्कूल के एक खेल मैदान में स्कूली बच्चों को उनके प्रिंसिपल के साथ देखकर खुशी हुई। यह तस्वीर सेवा के प्रति रोटरी की प्रतिबद्धता को उपयुक्त तरीके से दर्शाती है। आगे के आंतरिक कवर पर *असेंबली के कुछ पलों* को दर्शाने वाली तस्वीरें उत्कृष्ट है। रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने युगांडा की नाकीवले बस्तियों में शरणार्थियों के जीवन को उद्धृत करते हुए लड़कियों के सशक्तिकरण के महत्व को अच्छी तरह से समझाया।

संपादक का संदेश जोशीमठ में सामने आ रही पर्यावरणीय आपदा को अच्छी तरह से बताता है और साथ में यह भी इंगित करता है कि ऐसी आपदाओं को कैसे रोका जा सकता है। रो ई निदेशक महेश कोटबागी और ए एस वेंकटेश के संदेश बहुत प्रासंगिक है और प्रत्येक स्तर पर सीखने और प्रशिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालते है।

संस्थान न्यासी अध्यक्ष इयान रिसले समझाते है कि कैसे रोटरी दुनिया भर में शांति को बढ़ावा देती है। रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली और स्कूल के प्रिंसिपल रवि कजाले को उनके समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए सलाम। अन्य लेख जैसे *भारतीय रोटेरियनों से अनुरोध..., रोटरी को अनूठा बनाना, भारतीय कानूनों को सक्रिय नागरिकों की आवश्यकता है, DGयों ने भारत को गौरवान्वित किया और रो ई*

मंडल 3231 एक बहु-मंडलीय बैठक आयोजित करता है, हेमंत, 'नशीली, दिलकश और मखमली आवाज़ के सम्राट' पढ़कर अच्छा लगा। 2023-24 के लिए रोटरी थीम, *दुनिया में उम्मीद जगाना* सार्थक है और वर्तमान विश्व व्यवस्था के हिसाब से उपयुक्त है।

PRID पांडुरंगा सेट्टी के निधन की खबर सुनकर मुझे वास्तव में बहुत दुख हुआ जिनकी सराहनीय सेवा को रोटरी द्वारा हमेशा याद किया जाएगा। सभी शोक संतप्त व्यक्तियों के प्रति मेरी संवेदनाएं। *रोटरी न्यूज़* को अपने समूह में सर्वश्रेष्ठ में से एक बनाने हेतु आपके समर्पित प्रयासों के लिए धन्यवाद।

फिलिप मुलप्पोने एम टी,
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

फरवरी अंक का कवर जो रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली द्वारा एक जुगरेवाड़ी स्कूल में नवीन रूप से तैयार किए गए खेल के मैदान को दर्शाता है, सराहनीय है। गांव का पूर्ण परिवर्तन हुआ है जिसमें आदिवासी स्कूल में एक बढ़िया सुसज्जित पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला के साथ एक नया भवन भी शामिल है। यह पढ़कर खुशी हुई कि लड़कियों एवं लड़कों दोनों के लिए बहते पानी के साथ अलग-अलग शौचालय खंड भी प्रदान किए गए थे।

गाँव के जीवन स्तर एवं आदिवासी स्कूल की सुविधाओं को बेहतर बनाने हेतु क्लब और स्कूल प्रिंसिपल के समर्पण को सलाम।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

प्रत्येक विषय को लिखने से पहले संपादक का गहन अध्ययन प्रशंसनीय है क्योंकि वह हर मुद्दे को स्पष्ट और समझने में आसान बनाने की पूरी कोशिश करती है। जोशीमठ पर उनका हालिया संपादकीय, एक पर्यावरणीय हादसा इंतजार कर रहा है आत्म-व्याख्यात्मक है। अंतिम छंद पठनीय है क्योंकि यह अनियोजित और अराजक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं जैसी गलतियों से सीखे गए सबक का वर्णन करता है।

करोड़ों रुपये खर्च करके एक आदिवासी गांव को बदलने के लिए रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली को

पांडुरंगा सेट्टी को किया याद

जहाँ PRID पांडुरंगा सेट्टी के निधन की खबर ने रोटरी जगत को दुखी कर दिया वहीं रोटरी क्लब करूर में यह खबर हम सभी के लिए बेहद दुखद थी क्योंकि हम उनके साथ एक विशेष संबंध साझा करते है। 1997-98 में, जब हमारा क्लब छोटा था तो हमने उन्हें उस वर्ष के लिए हमारे क्लब अधिकारियों की नियुक्ति के अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। बेंगलुरु से करूर के बहुत दूर होने के बावजूद भी उन्होंने तुरंत हमारे निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। उन्होंने और उनकी पत्नी ने न केवल इस कार्यक्रम में भाग लिया बल्कि करूर में निराश्रित बच्चों के एक घर को एक पंपिंग लाइन, एक ओवरहेड टैंक और डिलीवरी लाइनों के साथ पीने के पानी की सुविधा भी प्रदान की। आज तक जब भी उस घर के वार्डन हमसे मिलते है तो वह कृतज्ञता के साथ उस परियोजना को याद करते है।

उनकी यात्रा से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा भी है। बेंगलुरु से ट्रेन सुबह 4.30 बजे करूर पहुंचती है। हम उन्हें लेने के लिए रेलवे स्टेशन गए थे मगर वो हमें मिले ही नहीं। हुआ यह था कि शेट्टी और उनकी पत्नी की गहरी नींद लगने के कारण वे डिंडीगुल में उतरे और वहाँ से उन्होंने करूर के लिए कैब ली। इस यात्रा और परियोजना की वजह से निश्चित रूप से उनकी एक बड़ी राशि खर्च हो गई होगी। एक बड़े दिल वाले व्यक्ति होने के नाते उन्होंने उनकी यात्रा खर्च को हमारे द्वारा वहन किए जाने के हमारे अनुरोध को अस्वीकार करते हुए अपनी जेब से पैसे खर्च किए। उस दिन उनके द्वारा नियुक्त किए गए तत्कालीन क्लब अध्यक्ष के रूप में मुझे इस कहानी

आपके पत्र

सलाम। रोटेरियनों के अलौकिक प्रयास सराहना के पात्र है। बच्चों और प्रिंसिपल के मुस्कुराते हुए चेहरे आंतरिक खुशी को दर्शाते है। विभिन्न क्लबों द्वारा शुरू की जा रही विभिन्न परियोजनाओं के संबंध में यात्रा करके सारी जानकारी एकत्रित करने और पूरे भारत में चल रही रोटरी गतिविधियों पर हमें अपडेट प्रदान करने के लिए संपादक रशीदा भगत द्वारा दिखाई गई मेहनत की प्रशंसा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

रो ई अध्यक्ष जोन्स ने उचित रूप से कहा है कि लड़कियों और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता का एहसास कराने हेतु उन्हें सशक्त बनाने से सदस्यता वृद्धि के नए रास्ते खुलेंगे और बेहतर समुदायों के लिए स्थायी परिवर्तन की शुरुआत होगी।

एक आदिवासी गांव के उत्थान में रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली के सदस्यों के अथक प्रयास सराहनीय है। उनकी कड़ी मेहनत की बदौलत गांव को अब सर्वसुविधा युक्त एक उन्नत स्कूल मिल गया है। साथ ही, इतनी कठिनाइयों के बावजूद स्कूल के नवीनीकरण की प्रतिबद्धता के लिए स्कूल के प्रिंसिपल रवि कजाले को वास्तविक श्रेय जाता है।

एस मुनियांदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

को साझा करने में गर्व और दुख दोनों एक साथ महसूस हो रहा है।

के रवींद्रकुमार
रोटरी क्लब करूर
मंडल 3000

रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश द्वारा सीखना और प्रशिक्षण शीर्षक वाला छोटा लेकिन शानदार संदेश सभी रोटेरियनों के लिए प्रेरणादायक है। हमारी प्रगति के लिए प्रशिक्षण पद्धति को अपडेट करना, प्रतिक्रिया लेना और निरंतर सुधार अति आवश्यक कारक है। महोदय, आपकी एक मिलियन डॉलर की कीमत की बातों के लिए धन्यवाद।

पूर्व भारतीय राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम, जिनके साथ मैं दो दशकों से अधिक समय से ISRO के एक वाहन कार्यक्रम के शुभारंभ हेतु संपर्क में था, हमें कहा करते थे कि ज्ञान के बिना सीखना अज्ञानता सीखने जैसा है। वह बहुत विनम्र और सरल व्यक्ति थे। हमें बहुत दुख होता है जब हमें पता चलता है कि हमारे कुछ मंडल नेता अपनी छवि को बढ़ावा देने और अपने व्यवसाय को विकसित करने के लिए रोटरी फोरम का उपयोग करते है।

एन आर यू के कर्था
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

मैं फरवरी अंक में रो ई निदेशक महेश कोटबागी के लेख से बहुत प्रभावित हुआ जिसका शीर्षक था अपने आसपास की दुनिया से प्यार करें। मैंने इसे दो बार पढ़ा। उन्होंने रोटेरियनों को उन समुदायों की सेवा करने के लिए प्रेरित किया है जिनमें हम रहते है। हमें अपने शीर्ष नेतृत्व पर गर्व है जिन्होंने हमें *वसुधैव कुटुंबकम* का संदेश दिया।

एस के सबलोक
रोटरी क्लब नाहन सिरमौर हिल्स
मंडल 3080

एक मजेदार पठन

रो *टरी न्यूज़* के बारे में जानने के बाद लेख *गावस्कर की तीसरी पारी* (जनवरी अंक) को पढ़कर अच्छा लगा। कृपया मुझे अपनी सक्रिय पोस्ट सूची में रखें। संपादक रशीदा के लेख हमेशा की तरह ही इस प्रकाशन में भी पठनीय है।

योगिंदर दीवान, रोटरी क्लब परवाणू - मंडल 3080

रोटरेकटरों का अच्छा काम

रो टेरियनों को रोटरेकटरों की कार्यवाही से प्रभावित होना चाहिए जिन्होंने विशाखा विस्टा संस्थान में रक्तदान अभियान आयोजित किया। भारत में एक युवा आबादी है और युवाओं को रोटरेकटर बनने हेतु आकर्षित किया जाना चाहिए। वे भविष्य में रोटरी की रीढ़ होंगे क्योंकि उन्हें रोटरेक्ट क्लबों में रहते हुए महान परियोजनाएं करने का उत्साह मिलेगा।

टी डी भाटिया
रोटरी क्लब मयूर विहार - मंडल 3012

रोटरी न्यूज़ प्लस मूल्य जोड़ता है

रो *टरी न्यूज़ प्लस रोटरी* की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने की एक बढ़िया पहल है। इस ई-पत्रिका के माध्यम से हमारी परियोजनाएं जनता तक पहुंचती है। बहुत-बहुत बधाई।

गजानन माने
रोटरी क्लब कराड - मंडल 3132

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए। *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अधिक रोटरी परियोजनाओं के बारे में पढ़ने के लिए हमारी वेब साइट *www.rotarynewsonline.org* पर Rotary News Plus पर क्लिक करें।

कवर पर: RAC चेन्नई सेंट्रल, रो ई मंडल 3232 के रोटरेक्टर्स, ब्रिज प्रोजेक्ट के तहत चेन्नई की एक झुग्गी में बच्चों को पढ़ाते हुए।

चित्र: किरण ज़ेहरा

चाय मास्टर से सबक

यूरासेनके चाय परंपरा के पूर्व ग्रैंड मास्टर जेनशित्सु सेन ने नवंबर में रो ई अध्यक्ष जेनिफ़र जोन्स की उनकी जापान यात्रा के दौरान एक पारंपरिक जापानी चाय परंपरा का प्रदर्शन किया। चाय समारोह, जिसे चाडो के नाम से जाना जाता है, सदियों पुराना है और यह कला, धर्म, दर्शन और सामाजिक जीवन को समाविष्ट करता है।

मैं नवंबर में जापान की अपनी यात्रा के दौरान चाय मास्टर जेनशित्सु सेन से मिलने के सौभाग्य को कभी नहीं भूल सकती।

न केवल सेन उरसेनके चाय परंपरा के पूर्व ग्रैंड मास्टर है, बल्कि वह एक निपुण रोटेरियन भी है। उन उपलब्धियों में जापान के रोटरी क्लब ऑफ क्योटो-साउथ को अधिकृत करने में मदद करना, रोटरी क्लब ऑफ क्योटो के अध्यक्ष और मंडल 2650 के गवर्नर के रूप में सेवा करना और रोटरी इंटरनेशनल एवं रोटरी फाउंडेशन में नेतृत्व की भूमिका निभाना शामिल है।

उनके साथ समय बिताना सम्मान की बात थी। वह एक उल्लेखनीय इंसान और एक आनंदित व्यक्ति है। और रोटरी में उनका नेतृत्व और जुड़ाव मजबूत बना हुआ है।

जापान में उसी सप्ताह के दौरान, मुझे 100 वर्षीय द्वितीय विश्व युद्ध के नौसैनिक नायक और पार्क सिटी, यूटा, से दो बार के रोटरी मंडल गवर्नर के लिए एक वीडियो रिकॉर्ड करने का अवसर मिला।

सेन और पार्क सिटी के रोटेरियन ने सामान प्रकार की कहानियां साझा की, हालांकि दोनों ने युद्ध में विरोधी पक्षों की ओर से सेवा दी थी। मेरे लिए उल्लेखनीय बात यह थी कि दोनों ने शांति का जीवन जीने के लिए रोटरी को चुना। मैं इस बात से प्रभावित हुई कि हम सभी इस ग्रह पर बस अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहे है, और हम अलग होने के बजाय बहुत हद तक एक जैसे ही है।

मैं इन कहानियों को देखने और ऐसे अविश्वसनीय लोगों से मिल पाने के लिए अविश्वसनीय रूप से भाग्यशाली महसूस करती हूं।

जेनिफर जोन्स
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

सेन यूरासेनके टी-रूम परिसर के बाहर खड़े है जहां वह क्योटो में रहते है। रोटरी पत्रिका ने अगस्त 2022 के अंक में सेन की उल्लेखनीय कहानी के बारे में लिखा था। rotary.org/peace-through-bowl-tea पर कहानी का एक ऑडियो संस्करण सुन सकते है।

चित्रः (समारोह) क्योको नोज़ाकी;
तस्वीरः मिनमिन वू

संपादक
का संदेश

नफरत पर मुहब्बत की जीत...

भारत, इसका सामाजिक और सांस्कृतिक ताना-बाना, लोकाचार, मूल्य... संक्षेप में, इसके दिल की धड़कन, किसी भी फिल्म की तुलना में बड़ी, बहुत बड़ी है। जब मैं ये सम्पादकीय लिख रही हूँ, शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण अभिनीत बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर फिल्म *पठान,* जिसने हाल ही में बॉक्स ऑफिस पर ₹1,000 करोड़ का अभूतपूर्व आंकड़ा पार किया है, जिसने एक नहीं कई तरह से ये लगभग साबित कर दिया है कि भारत और भारतीय की सोच क्या हैं, वो क्या महसूस करते हैं और कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। और इसलिए भी, क्योंकि यह तुलना रोटरी के नवीनतम और सबसे अद्भुत मंत्र DEI - विविधता, समानता और समावेशन से पूरी तरह मेल खाती है।

बड़े पर्दे पर फिल्म की रिलीज से कुछ दिनों पहले जो हंगामा बरपा, हम सबने देखा, और नफरत से सराबोर आवाजों का कोलाहल जो सोशल मीडिया पर लोगों को इस फिल्म का बहिष्कार करने के लिए किस प्रकार उकसा रहा था। घृणा और नफरत फैलाने वाली इन आवाजों को बिलकुल सही नाम दिया गया था, 'हेट ब्रिगेड' या 'बॉयकॉट गैंग', इन के *पठान* फिल्म पर बवाल खड़े करने की वजह थी इसके नायक का मुस्लिम होना। पूर्व में उनके द्वारा दिए गए तमाम बयानों की खुदाई की गई, तोड़-मरोड़ कर, गलत तरीके से पेश किया गया और उनकी राष्ट्र-विरोधी छवि गढ़ने के लिए ऊल-जलूल और वाहियात दलीलें दी गईं जिनका कोई सरोकार नहीं था। और तो और, फिल्म की नायिका, दीपिका पादुकोण, पहले भी वो विचारों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता से जुड़े कुछ बुनियादी मसलों पर एक निर्भीक और स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाया है, फिल्म के एक गाने में उनकी बिकनी के रंग को ले कर और अपने शरीर को उघाड़ने के आक्षेप लगाए गए। वहीं खान पर एक लोकप्रिय हिंदी पत्रकार ने ''एब्स वाला कॉकरोच'' कह कर प्रहार किया था, और पादुकोण को निहायत ही भद्दी जुबान में गाली दी गई जिसे यहां नहीं छाप सकते। एक बार फिर, क्या यह क्रोध दिलाने वाली बात नहीं है कि हमेशा महिला के लिए ही सबसे अपमानजनक व घृणित व्यवहार और भाषा का प्रयोग किया जाता है? और रोटरी के शानदार सिद्धांत, महिलाओं को सशक्त बनाने पर आज अधिक ध्यान दिया जा रहा है, इसलिए भी क्योंकि महिला होने की वजह वो अधिक संवेदनशील होती है ।

परन्तु घृणा के विस्फोट के इस गुबार के बीच, एक आश्चर्यजनक और बड़ी आनंददायक घटना हुई। लगभग पूरे भारत में ... हर क्षेत्र, नुक्कड़ और कोने में, जो हुआ, इस घृणित अभियान का करारा जवाब सिर्फ एक तरीके से दिया। इस फिल्म को देखने के लिए सिनेमाघरों में हर रंग... धर्म, जाति, वर्ग, अलग-अलग भाषा बोलने वालों की भीड़ उमड़ पडी। ऐसे कई लोगों को मैं जानती हूं जो इस बात का हिसाब रखते हैं कि फलां फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कैसा प्रदर्शन करती है, हर दिन जांच करते हैं कि फिल्म ने कितना कलेक्शन किया। एक ट्वीट ने साफ़ कह दिया: एक ट्वीट में तो लिखा था : 'हर रोज़, *पठान* की बॉक्स ऑफिस कमाई की जांच मैं ऐसे करता हूँ ... मानो पैसा सीधे मेरे बैंक खाते में आ रहा हो !'

लेकिन यहां बात पैसे की नहीं है। बात उन लोगों की है जो अपना प्यार उंडेलते हुए कहते हैं : रुको हमारे नाम पर नहीं। यह एक ऐसे राष्ट्र के महत्वपूर्ण चरित्र के सन्दर्भ में है जिसकी संरचना बहुत बारीकी से, निहायत खूबसूरती और बड़ी एहतियात से, हजारों जीवंत रंगों के महीन धागों से की गई है जिसे नफरत और द्वेष फैलाने वालों द्वारा इतनी इतनी आसानी से नष्ट नहीं किया जा सकता।

साथ ही, इसमें दो और चीजें सहायक रहीं। पूरे घमासान के दौरान मेगास्टार बिलकुल शांत रहे, धैर्यपूर्वक अपना मुंह बंद रखा और जब वो कोलकाता फिल्म फेस्टिवल आए तो उनका एक ही संदेश था- आइए सकारात्मक रहें। और उसी मंच से, भारतीय सिनेमा के दिग्गज और बेहद सम्मानित सुपरस्टार ने कोलकाता को सलाम किया ''आपके कलात्मक मिज़ाज़ के लिए, जो बहुलता और समानता दोनों के सार को आत्मसात करता है,'' साथ ही फिल्म निर्माताओं और दर्शकों दोनों से भारत की विविधता का उत्सव मनाने का आग्रह किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फिल्म की रिलीस से कुछ ही दिन पहले बीजेपी के एक मंच से खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी पार्टी के नेताओं/मंत्रियों से आग्रह किया था कि वे फिल्मों पर टिप्पणी करने से दूर रहें और जो काम उन्हें दिया गया है उस पर ध्यान दें - राष्ट्र निर्माण और इसके विकास का काम। बिलकुल सटीक !

रशीदा भगत

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 सेल्वनाथन वी
RID 2982 सरवनन पी
RID 3000 आई जेराल्ड
RID 3011 अशोक कंटूर
RID 3012 डॉ ललित खन्ना
RID 3020 भास्कर राम वी
RID 3030 डॉ आनंद ए झुंझुनूवाला
RID 3040 जिनेंद्र जैन
RID 3053 राजेश कुमार चुरा
RID 3054 डॉ बलवंत एस चिराना
RID 3060 श्रीकांत बालकृष्ण इंदानी
RID 3070 डॉ दुष्यंत चौधरी
RID 3080 कल्टा वी पी
RID 3090 गुलबहार सिंह रेटोले
RID 3100 दिनेश कुमार शर्मा
RID 3110 पवन अग्रवाल
RID 3120 अनिल अग्रवाल
RID 3131 डॉ अनिल लालचंद परमार
RID 3132 रुक्मेश पन्नालालजी जकोटिया
RID 3141 संदीप अग्रवाला
RID 3142 कैलाश जेठानी
RID 3150 तल्ला राजा शेखर रेड्डी
RID 3160 वोम्मिना नागा सतीश बाबू
RID 3170 वेंकटेश एच देशपांडे
RID 3181 एन प्रकाश कारंथ
RID 3182 डॉ जयगौरी हदीगाल
RID 3190 जीतेंद्र अनेजा
RID 3201 राजमोहन नायर एस
RID 3203 बी इलंगकुमारन
RID 3204 वी वी प्रमोद नयनार
RID 3211 के बाबूमोन
RID 3212 मुत्तु वी आर
RID 3231 पलनी जे के एन
RID 3232 डॉ नंदकुमार एन
RID 3240 कुषाणवा पाबि
RID 3250 संजीव कुमार ठाकुर
RID 3261 शशांक रस्तोगी
RID 3262 प्रवुदत्त सुबुद्धि
RID 3291 अजॉय कुमार लॉ

प्रकाशक एवं मुद्रक पीटी प्रभाकर द्वारा रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014 से मुद्रित एवम दुगर टावर्स, तीसरा फ्लोर, 34, मार्शल रोड, एग्मोर, चेन्नई से प्रकाशित। संपादक : रशीदा भगत।

प्रकाशित सामग्री में अभिव्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के स्वतंत्र विचार हैं, और आवश्यक नहीं कि वे रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट (आरएनटी) के संपादक या रोटरी इंटरनेशनल के ट्रस्टी के विचारों से मेल खाते हों। संपादकीय या विज्ञापन सामग्री से होने वाली किसी भी क्षति के लिए आरएनटी जिम्मेदार नहीं होगा। लेख और रचनाओं का स्वागत है किन्तु उन्हें संपादित किया जा सकता है। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

निदेशकों

रोटरी की त्वरित आपदा प्रतिक्रिया

जीवन संघर्ष है और जीवन में हमें लगातार समस्याओं से जूझना पड़ता है और हमें उचित निर्णय लेने पड़ते हैं। मैंने देखा है कि जब मैं खुद से सही सवाल पूछता हूँ तो मैं बेहतर निर्णय ले पाता हूँ। इसके परिणामों से मैं खुश हूँ। पिछले साल ठीक ऐसा ही हुआ था, तीन अलग-अलग आपदाओं में - यूक्रेन, पाकिस्तान और अब तुर्की और सीरिया ।

तुर्की और सीरिया दो प्रलयकारी भूकंपों से दहल गए थे, जिसमें हजारों काल का ग्रास बने और हज़ारों घर ध्वस्त हो गए थे, और बचे हुए लोगों को कड़ाके की ठंड में छोड़कर। इसमें साफ पानी और वॉशरूम की अनुपलब्धता को शामिल कर दें तो कड़ाके की ठंड से बचने के लिए टेंट और आश्रय किट, स्टोव, गर्म कंबल और कपड़े और निश्चित रूप से भोजन और ईंधन खरीदने के लिए नकदी की नितांत आवश्यकता थी।

रोटरी विश्व ने तुरंत हरकत में आते हुए इस आपदा का तुरंत जवाब दिया। रो इ ने हमारे आपदा प्रतिक्रिया प्रयासों को सक्रिय किया, प्रभावित जिलों के साथ बात की और उन क्षेत्र के मंडल अध्यक्षों को आपदा प्रतिक्रिया अनुदान आदि के लिए आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया। टीआरएफ ने फैसला किया कि तुर्की/सीरिया आपदा प्रतिक्रिया कोष में अब से 31 मार्च तक प्राप्त हुई सम्पूर्ण दान राशि का उपयोग भूकंप राहत परियोजनाओं के लिए किया जाएगा। इसने भूकंप प्रभावित रोटरी जिलों को आपदा प्रतिक्रिया अनुदान के माध्यम से 125,000 डॉलर से अधिक की राशि दी हैं। रोटरी के प्रोजेक्ट पार्टनर शेल्टरबॉक्स और हैबिटेट फॉर ह्यूमैनिटी इंटरनेशनल मंडल के नेताओं के साथ इस बारे में बातचीत कर रहे हैं।

रोटरी तीन चरणों में सहायता करती है। तत्काल प्रतिक्रिया जिसके तहत स्थानीय क्लब और सहयोगी संस्थाएं सहायता करते हैं और सामग्री देते हैं; समुदायों को रोजमर्रा की ज़रूरतों के लिए धन और सामग्री उपलब्ध करा के अल्पकालिक सहायता; और दीर्घकालिक पुनर्निर्माण जिसके अंतर्गत क्लब प्रभावित समुदायों के पुनर्निर्माण के लिए परियोजनाओं की रूप रेखा बना कर उनका क्रियान्वयन करते हैं।

तुर्की/सीरिया डिजास्टर रिस्पांस फण्ड, यूक्रेन रिस्पांस फण्डऔर पाकिस्तान फूड रिस्पांस फण्ड में *rotary.org* पर ऑनलाइन दान करके एक बड़ा असर डाल सकते हैं। डिजास्टर रिस्पांस फण्ड में नकद योगदान और मंडल नामित निधि (DDF) दोनों स्वीकार्य हैं।

आज भी हमारे वैश्विक मिशन की आधारशिला 'शांति का प्रसार' ही है। हम जो कुछ भी करते हैं वो हमें उस दिशा और एक ऐसे वातावरण की रचना करने में सहायक होता है जिससे शांति कायम हो सके, जिसमें शिक्षा का समर्थन कर उसे बढ़ावा देना, बीमारी से लड़ना आदि शामिल हैं।

अंत में मैं केवल इतना ही कह सकता हूं, दुख एक ऐसा प्यार है जिसे अब बांटा नहीं जा सकता है। कमी बनी रहती है। यह समय के साथ कम नहीं होता है। तो चलिए आज से ही लोगों को प्यार करना और उनकी देखभाल शुरू कर दें।

महेश कोटबागी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

परिवर्तन आपके साथ शुरू होता है

हाल ही में मैं एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित था जहाँ एक बहुत ही वरिष्ठ रोटरी नेता ने दर्शकों से एक सरल किंतु शक्तिशाली प्रश्न पूछा। उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वे उसी क्लब में शामिल होंगे जिसमें वे आज है, क्या उन्हें अब एक संभावित रोटेरियन होना चाहिए।

इस सवाल ने मुझे औरों की तरह ही सोचने पर मजबूर कर दिया। कितनी बार हम किसी अन्य क्लब में वैसा ही कुछ देखते है जो हम हमारे क्लबों में देखना चाहते है। फैलोशिप की प्रकृति, एक जुनून जगाने वाली परियोजना, एक मजेदार गतिविधि, सदस्यता रेफरल प्रणाली...। हालांकि हम में से बहुत लोग विलाप करने के अलावा कुछ नहीं करते है। महात्मा गांधी ने प्रसिद्ध रूप से कहा, ''वो परिवर्तन बनें जो आप बनना चाहते है।'' यह हम रोटेरियनों पर भी लागू हो सकता है।

हमारे पास हमेशा से ऐसे भी कुछ सदस्य मौजूद होंगे जिनकी चिंताएं एक समान हो सकती है लेकिन किसी भी प्रत्यक्ष परिवर्तन के अभाव में उनका मोहभंग हो सकता है और अंततः वे उदास होकर संगठन छोड़ सकते है। अगर हम अपने क्लब और अपने संगठन की परवाह करते है तो कम से कम हम अपने क्लबों में बदलाव लाने का नेतृत्व कर सकते है। आइए हम उन चीजों की एक सूची बनाने के साथ शुरूआत करें जिन्हें हम अपने क्लबों में देखना चाहते है पर वो वर्तमान में वहाँ मौजूद नहीं है। यदि हम में से प्रत्येक यह अभ्यास करें तो हमारे पास विचारों का ढेर होगा और हम अपने सदस्यों के सामूहिक ज्ञान के साथ उन परिवर्तनों को अपनाने में सक्षम हो सकते है जो हमारे क्लबों के लिए सबसे उपयुक्त और प्रासंगिक है।

इससे हमारे हितधारकों से अधिक खरीद का अतिरिक्त लाभ भी है जिससे कार्यान्वयन में आसानी होती है। मैं आप में से प्रत्येक से शुरुआत करने का आग्रह करता हूँ। इस रोटरी वर्ष के समाप्त होने तक हम सभी को एक ऐसे क्लब का सदस्य होना चाहिए जो एक गतिशील क्लब के हमारे दृष्टिकोण को संतुष्ट करते हुए हर संभव उत्तम चीज़ को जोड़ता है। जैसा कि अक्सर कहा जाता है दर्शक शोर मचाते है और खिलाड़ी प्रदर्शन करते है! तो अब से दर्शक बनना बंद करें और अपने क्लबों के सक्रिय खिलाड़ी बनें।

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

न्यासी मंडल

ए एस वेंकटेश **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3232
डॉ महेश कोटबागी **रो ई निदेशक**	RID 3131
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3232
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

रो ई निदेशक-निर्वाचित

अनिरुध्धा रॉयचौधरी	RID 3291
टी एन सुब्रमण्यन	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2022-23)

डॉ दुष्यंत चौधरी **अध्यक्ष,गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
वेंकटेश एच देशपांडे **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3170
डॉ एन नंदकुमार **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3232
दिनेश कुमार शर्मा **सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3100

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

ROTARY NEWS
Magazine

पानी अनमोल है

मेलबर्न से कुछ दूर समशीतोष्ण तट पर, जहां जूलियट और मैं रहते है, मुझे वह समय याद है जब पानी की आपूर्ति इतनी कम थी कि पानी के इस्तेमाल पर गंभीर प्रतिबंध लगाए गए थे। अब हम बारिश के पानी पर निर्भर है जो हमारी छत पर गिरता है और एक टंकी में एकत्रित होता है। दुनिया के कई हिस्सों में, लोगों के पास यह विलासिता नहीं होती है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2 बिलियन लोगों के पास सुरक्षित रूप से प्रबंधित पीने के पानी तक पहुंच की कमी है। यह दिल तोड़ने वाली बात है कि हर साल, 5 साल से कम उम्र के लगभग 300,000 बच्चों की खराब स्वच्छता, खराब सफाई, या असुरक्षित पेयजल के कारण होने वाली डायरिया सम्बन्धी बीमारियों से मौत हो जाती है - जिन सभी को रोका जा सकता है।

यहीं पर रोटरी अपनी भूमिका निभाती है। आपके समर्थन के माध्यम से, रोटरी संस्थान दुनिया भर के अनगिनत समुदायों के लिए पानी और स्वच्छता प्रदान करता है। संस्थान के वैश्विक अनुदान फिलीपींस के गांवों में शौचालय और स्वच्छता शिक्षा प्रदान करने से लेकर ब्राजील में सुरक्षित, सस्ती, एवं साल भर मिलने वाले पेयजल के बुनियादी ढांचे के निर्माण तक अपना कार्य करते है।

हमारे द्वारा सामना की जाने वाली पानी और स्वच्छता की समस्याएं हम में से किसी के लिए भी अकेले हल करने के लिए बहुत बड़ी है। लेकिन चाहे हम दुनिया भर के वैश्विक अनुदान भागीदार मंडलों या फिर USAID जैसी बड़ी एजेंसियों के साथ काम करते हो, हम एक अंतर लाते है।

सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता एवं सफाई प्रदान करने के लिए टीम बनाने के बारे में सोचते समय, याद रखें कि हमारे सबसे बड़े भागीदारों में से एक रोटरेक्ट है।

इस रोटरी वर्ष से, रोटरेक्ट क्लब वैश्विक अनुदानों के लिए आवेदन कर सकते है। मैं रोटरी और रोटरेक्ट क्लबों को मौजूदा अनुदानों पर एक साथ काम करने और रोटारेक्ट क्लबों द्वारा प्रायोजित अनुदान का समर्थन करने के लिए रोटरी क्लबों को प्रोत्साहित करता हूं। साथ में, रोटरी और रोटरेक्ट क्लब संस्थान की शक्ति को एक नए स्तर पर ले जाने जा रहे है।

आपके उदार समर्थन की वजह से, रोटरी संस्थान के पास हम सभी के सामने आने वाली पानी और स्वच्छता चुनौतियों में अंतर लानी की पहले से कहीं अधिक क्षमता है।

इयान एच एस राइसली
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

आइए मिलकर अपने संस्थान को मजबूत बनाएं

भारत में आए एक चीनी तीर्थयात्री ज़ुआनजेंग ने अपने 7वीं शताब्दी के संस्मरण में कई पुण्य-शालाओं (भलाई और दान के घर) का वर्णन किया है। उन्होंने टक्का (पंजाब) और अन्य भारतीय स्थानों पर इन पुण्यशालाओं और धर्मशालाओं का उल्लेख किया है। ज़ुआनजेंग ने उल्लेख किया है कि इन स्थानों पर गरीबों और वंचितों की सेवा की जाती है और उन्हें भोजन, कपड़े और दवाएं प्रदान की जाती है इसके साथ ही यहाँ पर यात्रियों और निराश्रितों का भी स्वागत किया जाता है। उन्होंने लिखा कि ''ये बात इतनी आम है कि उनके जैसे यात्री भी कभी निराश नहीं हुए।''

फारसी इतिहासकार अल-बिरूनी, जो 1017 में भारत आए और 16 वर्षों तक यहाँ रहें, ने अपने प्रवास के दौरान ''भारतीयों के बीच दान और भिक्षा देने के अभ्यास को देखा और उसका उल्लेख किया। उन्होंने लिखा, भारतीयों के साथ हर दिन यह अनिवार्य है कि वे जितना संभव हो उतनी भिक्षा देते है।''

दान देना भारतीय लोकाचार में निहित है। और दान देने के सर्वोत्तम रूपों में से एक यह है कि दानकर्ता और प्राप्तकर्ता एक-दूसरे को जानते ही न हो और उस दान से प्राप्तकर्ता को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती हो। उसी प्रकार संस्थान को देना भी दान का 'सबसे अच्छा' रूप है। TRF केवल मछली ही नहीं देता बल्कि मछली पकड़ना भी सिखाता है।

चूंकि हम 22-23 रोटरी वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश करने जा रहे है तो अब समय आ गया है कि हम रोटेरियनों को TRF में देने और निवेश करने हेतु प्रोत्साहित करें। TRF में देने के लिए प्रत्येक रोटेरियन को प्रोत्साहित करके दान के आधार को और विस्तृत करें।

महत्वपूर्ण उपलब्धियां हमेशा बड़ी छलांग से नहीं बल्कि सही दिशा में उठाए गए छोटे और उचित कदमों से हासिल की जाती है। प्रत्येक क्लब को पहले दिए गए दान से अधिक दान करने हेतु प्रोत्साहित करें। क्लबों और रोटेरियनों को एंड पोलियो नाउ फण्ड में योगदान करने हेतु प्रेरित करें। आइए हम सभी पोलियो मुक्त दुनिया बनाने के अपने वादे को पूरा करने और अपने समुदाय एवं अपनी दुनिया के लिए अच्छा करते रहने हेतु तैयार रहें।

जहाँ पर दृष्टिकोण एक वर्ष का है, वहाँ पर फूल लगाएं
जहाँ पर दृष्टिकोण दस साल का है, वहाँ पर पेड़ लगाएं।
जहाँ पर दृष्टिकोण जीवन भर के समर्थन का है, वहाँ पर रोटरी संस्थान को मजबूत करें
हमारे रोटरी संस्थान के भविष्य की राह का नेतृत्व करें।

भरत पांड्या
ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

Rotarians!

Visiting Chennai for business?

Looking for a compact meeting hall?

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

Tariff:

₹2,500 for 2 hours
₹5,000 for 4 hours
₹1,000 for every additional hour

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

रोटरी संख्या

रोटरी क्लब	:	36,904
रोटरेक्ट क्लब	:	11,185
इंटरेक्ट क्लब	:	19,227
आरसीसी	:	12,750
रोटरी सदस्य	:	1,187,842
रोटरेक्ट सदस्य	:	174,891
इंटरेक्ट सदस्य	:	442,221

फ़रवरी 16, 2023 तक

सदस्यता सारांश

1 फ़रवरी 2023 तक

रो ई मंडल	रोटरी क्लब	रोटेरियनों की संख्या	महिला रोटेरियन (%)	रोटरेक्ट क्लब	रोटरेक्ट सदस्य	इंटरेक्ट क्लब	आरसीसी
2981	136	6,394	7.32	71	462	55	243
2982	82	3,730	6.94	30	760	115	76
3000	131	5,428	10.32	102	1,521	324	215
3011	123	4,697	28.42	82	2,637	141	37
3012	151	3,752	23.08	73	1,393	94	61
3020	84	4,896	7.21	40	1,159	168	350
3030	100	5,414	14.94	126	2,169	369	382
3040	113	2,572	15.05	59	794	94	190
3053	65	2,729	16.75	35	566	55	128
3054	168	6,898	19.67	107	1,537	209	575
3060	102	4,931	14.87	66	2,400	81	152
3070	127	3,395	16.52	47	559	64	59
3080	107	4,322	12.86	120	2,232	213	118
3090	104	2,455	5.66	46	634	120	164
3100	103	2,173	11.83	14	109	39	151
3110	142	3,895	12.37	16	126	33	106
3120	90	3,674	15.68	35	404	36	55
3131	142	5,699	24.57	135	2,975	262	144
3132	91	3,625	12.72	36	499	126	168
3141	109	6,128	26.88	149	6,591	216	151
3142	103	3,873	21.25	90	3,016	148	89
3150	111	4,362	12.98	150	1,968	159	124
3160	78	2,617	9.09	32	233	20	82
3170	145	6,609	15.72	103	1,787	270	177
3181	87	3,629	10.00	36	422	223	117
3182	88	3,662	10.16	44	180	132	106
3190	168	6,932	20.04	217	5,131	288	74
3201	167	6,518	9.79	130	2,027	114	91
3203	93	4,937	7.80	75	942	243	39
3204	73	2,495	7.25	23	201	33	13
3211	156	5,061	8.52	8	108	31	133
3212	127	4,750	11.45	85	3,511	303	153
3231	95	3,430	8.37	37	411	99	417
3232	171	6,851	19.85	133	7,558	247	101
3240	109	3,652	16.59	70	1,417	414	226
3250	103	3,903	21.14	68	1,093	85	188
3261	90	3,258	19.74	17	50	26	44
3262	125	3,838	14.64	75	788	659	277
3291	152	3,974	24.89	138	2,042	111	697
India Total	**4,511**	**171,158**		**2,920**	**62,412**	**6,419**	**6,673**
3220	71	2,122	16.16	98	4,958	147	77
3271	160	3,211	18.44	161	2,485	255	28
3272	162	2,433	14.59	70	933	22	47
3281	311	7,302	18.34	281	2,270	157	207
3282	184	3,605	10.26	202	1,720	50	47
3292	154	5,790	18.65	182	4,864	146	133
S Asia Total	**5,553**	**195,621**		**3,914**	**79,642**	**7,196**	**7,212**

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

रोटरेकटर पुल के किनारे एक विशेष कक्षा चलाते है

किरण ज़ेहरा

नन्ही जैस्मीन क्रेयॉन से कागज के एक टुकड़े पर कुछ लिखती हुई।

चेन्नई में पूनमली पुल के पास एक झुग्गी में कुछ पेड़ों की छाया के नीचे RAC चेन्नई सेंट्रल, रो ई मंडल 3232 ने एक कक्षा स्थापित की। प्रत्येक रविवार को यह जगह 20 बच्चों से भर जाती है जो उत्साही होकर नोट्स बनाते है और उन्हें पढ़ाए जा रहे पाठों को सुनते है। क्लब के अध्यक्ष जी कीर्ति कहते है, ''इस सप्ताह वे अंग्रेजी में फलों और सब्जियों के नाम, राज्यों की राजधानियों के नाम और गणित के जोड़ करना सीखना शुरू कर देंगे।''

इस खुली कक्षा की ओर जाने वाला रास्ता कीचड़ से भरा हुआ है जो एक बड़े गंदे तालाब के सामने अस्थायी झोपड़ियों से घिरा हुआ है। इस रास्ते से लगी छोटी खुली नालियों में कुत्ते, बिल्लियां और मुर्गियां स्वतंत्र रूप से घूमते है। ''यहाँ की जीवन स्थिति दयनीय है लेकिन बच्चे सीखने को लेकर उत्साहित है और उनमें से कई एक भी कक्षा से चूकते नहीं है,'' वह आगे कहती है।

चेन्नई स्थित एक गैर सरकारी संगठन, लुर फॉर लाइफ के साथ साझेदारी में क्लब ने वंचित बच्चों के सीखने के परिणामों में सुधार लाने के लिए *ब्रिज* नामक पहल शुरू की। ''हमारी कक्षा में जिप्सी और शरणार्थी बच्चों का मिश्रण है। क्लब के सचिव एम लावण्या कहते है, वे असमानता और अभाव से जूझ रहे है और कूड़ा बीनने जैसे अन्य छोटे कामों में लिप्त है।''

इन कक्षाओं में भाग लेने वाले तीन बच्चों को अनाथालयों और छात्रावासों में नामांकित किया गया है। कीर्ति ने माता-पिता को समझाया कि ''उन्हें स्कूल भेजना एक बेहतर विचार है। लेकिन उनका तर्क है कि उनके बच्चे को अनाथालय में रहने हेतु तीन समय का उचित भोजन और रहने की एक सभ्य जगह मिले। कुछ माताएं अपने बच्चों को स्कूल भेजना चाहती है लेकिन उनमें से किसी के पास आधार कार्ड नहीं है। इसके बिना, कोई भी स्कूल उन्हें स्वीकार नहीं करेगा।''

जब क्लब को हैदराबाद के पास बालापुर में केंद्र सरकार की सर्व शिक्षा अभियान पहल के अंतर्गत स्थापित रोहिंग्या स्कूल के बारे में पता चला जहाँ लगभग 100 शरणार्थी बच्चे नियमित स्कूल जाते है, तो उन्होंने ''चेन्नई में इसी तरह के स्कूलों की तलाश की। लेकिन यहाँ ऐसी कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, क्लब के अध्यक्ष आगे कहते है हम इन बच्चों को आधार कार्ड दिलाने की कोशिश कर रहे है लेकिन हम असफल रहे। फिल्हाल ये कक्षाएं सर्वोत्तम है जो हम उन्हें पेश कर सकते है।''

पहुंचते ही रोटरेकटर तुरंत काम करना शुरू कर देते है। कीर्ति समझाते है, प्रत्येक मिनट कीमती है। ''हमें सप्ताह में सिर्फ एक दिन मिलता है और हम इसका पूरा फायदा उठाना चाहते है।'' जहाँ लावण्या प्रत्येक झोपड़ी में जाती है और बच्चों को कक्षा में शामिल होने के लिए बाहर बुलाती है वहीं क्लब की एक अन्य सदस्य, मैथिली एम, अपने बच्चे के साथ जाने वाली एक जिप्सी महिला को रोककर पूछती है कि वह उसे कक्षा में भेजने के बजाय कहाँ लेकर जा रही है। ''मुझे पैसे कमाने है इसलिए यह मेरे साथ जाकर आईने और कंघे बेचेगा,'' उस महिला ने कहा। रोटरेकटरों ने तर्क दिया कि ''यह बच्चा कक्षा में नियमित रहा है। इसलिए उसे यहीं रहने दें।'' उसे बहुत समझाने के बाद अंततः वो महिला अपने बेटे के बिना चली गई।

कुमार डी और कीर्थना सी, दो अन्य रोटरेकटर कक्षा के फर्श को साफ करते है क्योंकि बच्चे इकट्ठा होना शुरू हो जाते है। कुमार फिर पानी की एक छोटी बाल्टी लाते है और लावण्या उनके हाथ धुलाती है। रोटरेकटरों सहित हर कोई फर्श पर बैठता है और कक्षाएं शुरू होती है। सबसे पहला अभ्यास 'स्वयं की पहचान बताने' का होता है। राघव (12), आत्मविश्वास से कहता है, ''नमस्ते, मेरा नाम राघव है, आप कैसे है?'' उसका अंग्रेजी उच्चारण स्पष्ट है और वह प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में मुस्कुराता है।

ऊपर: रोटरेक्टर्स मैथिली एम (दाएं) और कीर्तना सी (बाएं) बच्चों के साथ बातचीत करते हुए।

नीचे: क्लब अध्यक्ष जी कीर्ति (दाएं) और एम लावण्या (बाएं) बच्चों को पेंटिंग सिखाती हुई।

''हमने जहाँ से शुरुआत की थी वहाँ से हम काफी आगे आ चुके है। ये बच्चे जो अब एक भी कक्षा से चूकना नहीं चाहते है एक समय ऐसा था जब उनकी इस कक्षा में शामिल होने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।'' क्लब के सदस्यों को उन्हें व्यस्त रखने के लिए दिलचस्प खेल, पुरस्कार और नवीन विचार लाने पड़े। ''यह कोई नियमित कक्षा नहीं है और वे यहाँ बैठने के लिए बाध्य नहीं है। उन्हें व्यस्त रखने हेतु हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ी। यह चुनौतीपूर्ण था,'' परियोजना अध्यक्ष एस कोकिला आगे कहते है कि इन कक्षाओं में नियमित रूप से अच्छी संख्या में बच्चों को आते देख बहुत अच्छा लगता है। ''मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि अगर उन्हें औपचारिक तौर पर स्कूली शिक्षा मिले तो वे क्या हासिल कर सकते है।''

क्लब इन बच्चों को एक बुनियादी शिक्षा किट प्रदान करता है और उनकी जरूरत अनुसार उन्हें पेंसिल और नोटबुक प्रदान करता रहता है। ''सितंबर 2022 की शुरूआत के बाद से हम उनके व्यवहार में बदलाव देख सकते है। जैसे कुछ लोग उन्हें संबोधित करते है उनमें से कोई भी 'झुग्गी का बच्चा' नहीं है। वो केवल झुग्गी में रहने वाले बच्चे है। वे अन्य बच्चों से अलग नहीं है और वे उसी गति से कोई भी चीज़ सीखते है जैसे प्राइवेट स्कूल के बच्चे सीखते है,'' कोकिला कहते है।

माताओं की मदद

इन बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा के अलावा रोटरेक्टरों ने उनके लिए अंग्रेजी बोलने, लिखने और पढ़ने, कला और कौशल, व्यायाम और योग, सरल कौशल, जीवन कौशल और सामाजिक जागरूकता पर विशेष सत्र भी आयोजित किए। झुग्गियों की कुछ माँओं के प्रयासों की वजह से बच्चे पूरी कक्षाओं में भाग लेते है। तीन साल की वैशाली की मां पुष्पा कक्षा का ध्यान रखती है और कोई भी बच्चा जो कक्षा से बाहर निकलना चाहता है या कक्षा में सबका ध्यान भंग करने की कोशिश करता है उसे वो घूर के देखती है और उसे सख्त आदेश देती है ''बैठ जाओ नहीं तो मैं छड़ी उठाऊंगी।''

यास्मीन की मां कहती है, ''मुझे नहीं पता कि मेरा बच्चा कभी स्कूल जा पाएगा या नहीं लेकिन ये कक्षाएं हमें उम्मीद दी है। शायद हमारे बच्चों का भविष्य हमसे बेहतर होगा।'' ये माताएं खड़ी होकर न केवल कक्षा का ध्यान रखती है बल्कि कुछ वो सब भी सीखने की कोशिश करती है जो कक्षा में पढ़ाया

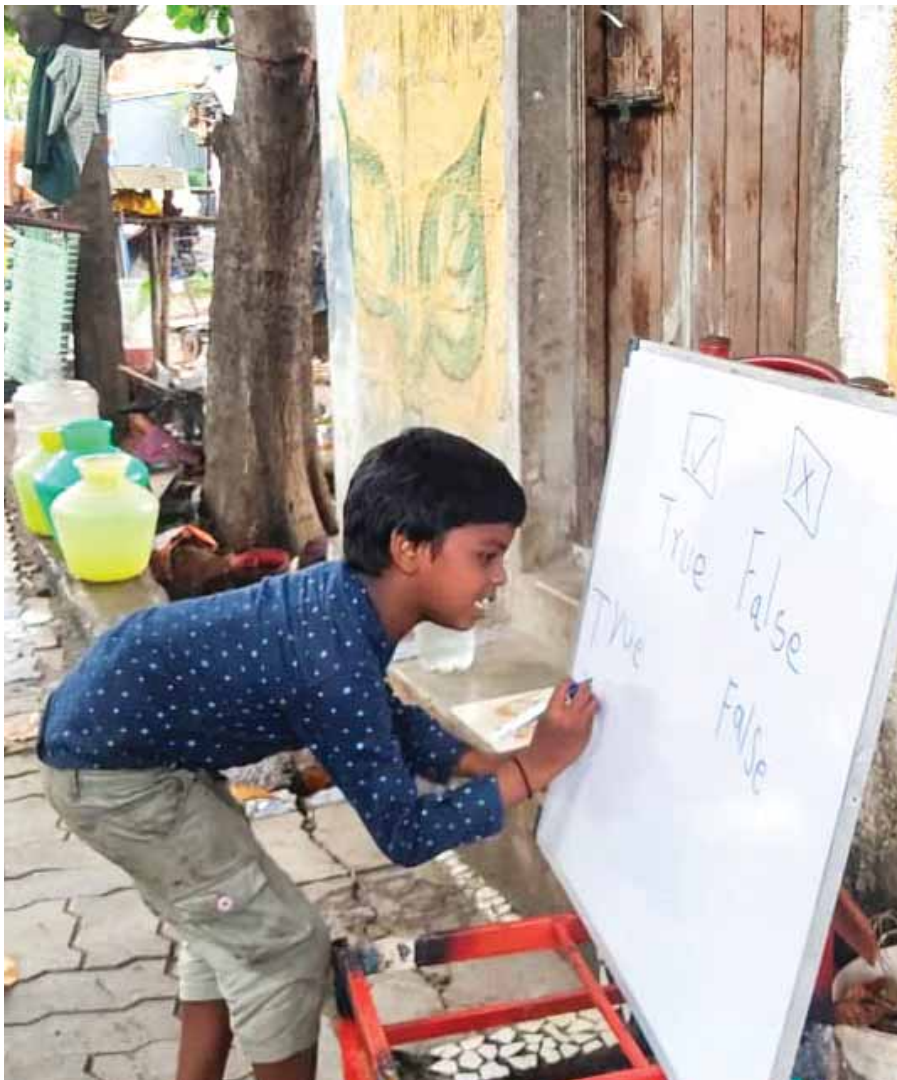

ऊपर से दक्षिणावर्त, दाएं: पुल के पास स्कूल में राइम टाइम; क्लब अध्यक्ष कीर्ति, कीर्थना सी और क्लब सचिव लावण्या एम बच्चों के लिए एक कला गतिविधि प्रदर्शित करती हुई; एक बच्चा एक अभ्यास में भाग लेते हुए; एक क्लब सदस्य एक बच्चे को लिखने में मदद करती हुई; लावण्या एक बच्चे को हाथ धोने में मदद करती हुई; रोटरेक्टर्स (बाएं से) कीर्तना, मैथिली, कोकिला एस, कीर्ति, कुमार डी और लावण्या और एक मां की उपस्थिति में अपनी कलाकृति प्रदर्शित करते बच्चे।

जाता है। ''रोटरेक्टरों की वजह से मुझे अंग्रेजी के कुछ शब्द आते है,'' वह मुस्कुराती है।

बच्चों के भी अपने बड़े सपने है। जहाँ कोई क्रिकेटर या शिक्षक बनना चाहता है। जैसे कि राघव चाहता है ''मैं किताबें या कंघे नहीं बेचना चाहता। मैं एक शिक्षक बनना चाहता हूँ।''

कीर्ति का कहना है कि माताओं के साथ उनके बंधन को मजबूत करने से इस परियोजना को स्थायी बनाने में मदद मिल सकती है। ''इससे उनके समुदाय के सदस्यों को इस परियोजना में प्रत्यक्ष भूमिका निभाने में प्रोत्साहन मिलेगा। वे चीजों को बेहतर बनाने में रुचि रखते है। साथ ही, हमें मौजूदा सेटअप को बेहतर बनाने के लिए भी निधि की आवश्यकता है।''

क्लब ने इन बच्चों के साथ दिवाली और क्रिसमस मनाया।

चित्र: किरण ज़ेहरा

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

टीआरएफ का विकास

रशीदा भगत

पिछले कई वर्षों से, रोटरी फ़ाउंडेशन रोटेरियनों से दान एकत्र करने के अपने लक्ष्य में निरंतर वृद्धि कर रहा है, ताकि यह सम्पूर्ण विश्व के रोटरी क्लबों को बेहतर, बड़ी, अधिक प्रभावशाली और अधिक टिकाऊ सेवा परियोजनाओं के क्रियान्वन में सक्षम कर सके। प्रत्येक वर्ष, ''रो ई बोर्ड टीआरएफ संग्रहण का एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित करता है। 2019-20 में यह लक्ष्य 370 मिलियन डॉलर था; अगले वर्ष, 2020-21 में लक्ष्य 410 मिलियन डॉलर था। और हम सब जानते हैं कि वो साल कोविड से शुरू हो कर कोविड के साथ ही ख़त्म हुआ था,'' तिरुवनंतपुरम में रो ई मंडल 3211 द्वारा आयोजित जोन 5 के लिए बहु-मंडलीय टीआरएफ सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए टीआरएफ ट्रस्टी भरत पांड्या ने कहा।

इसने, पांड्या ने जोड़ा, कई रोटेरियनों को अचरज में डाल दिया था, ''जिन्होंने सोचा कि यह निरा पागलपन था। उनका मत था कि हमें अपने लक्ष्य को 370 मिलियन डॉलर से घटाकर 350 मिलियन डॉलर कर देना चाहिए था न कि बढ़ाकर 410 मिलियन डॉलर। लेकिन आप जैसे लोगों की उदारता के कारण, 410 मिलियन डॉलर लक्ष्य को

पीछे छोड़ते हुए TRF ने उस वर्ष 440 मिलियन डॉलर एकत्र किए। और यह टीआरएफ के प्रति रोटेरियनों की प्रतिबद्धता दर्शाता है।''

हम जानते हैं कि एक अकेला रोटेरियन दुनिया को बदलने के लिए कुछ ज़्यादा नहीं कर सकता, ''लेकिन टीआरएफ के माध्यम से हम अपनी दुनिया को निश्चित ही रहने की एक बेहतर जगह बना सकते हैं। टीआरएफ हमारी दुनिया की तरफ खुलती खिड़की है। उस खिड़की से देखें और आपको ऐसे सैकड़ों और हजारों लोग दिखेंगे जिनके पास साफ़ पानी और स्वच्छता तक की मूलभूत सुविधाएं भी नहीं है।''

मार्मिक शब्दों में, पांड्या बोले कि टीआरएफ की खिड़की के ज़रिये आपको देखने का अवसर मिलेगा, ''गर्भवती माताओं को गर्भावस्था के कष्ट से जूझती दिखेगी क्योंकि अच्छी और सस्ती स्वास्थ्य सेवा सुलभ नहीं हैं या 10-11 साल की किशोरावस्था में प्रवेश कर रही छोटी लड़कियों को, शारीरिक परिवर्तनों की वजह से स्कूल छोड़ना पड़ता है क्योंकि उनके स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग से शौचालय नहीं होते।'' या ज़रा बड़ी लडकियां स्कूली शिक्षा से वंचित रह जाती हैं क्योंकि स्कूल जाने के लिए उन्हें कुछ किमी पैदल चलना पड़ता था, और उनके माता-पिता अकेले भेजने का खतरा मोल लेने से घबराते थे।

अगर एक बार रोटेरियन ने इस खिड़की से नज़ारा देख लिया, ''उस के पास दो ही विकल्प होंगे; अपनी आँखें मूँद लो और दिखावा करो कि सब ठीक ठाक है और हमेशा की तरह अपना काम करते रहो, या उनके लिए कुछ करो। और कुछ करने का सबसे अच्छा तरीका है टीआरएफ कार्यक्रम।''

गेट्स फाउंडेशन की वेबसाइट पर जाएं और पढ़ें कि यह पीपी कार्यक्रम के बारे में क्या लिखता है। इसमें लिखा है कि जहां तक पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम की बात है, तो रोटरी के बिना दुनिया वहां नहीं पहुंच सकती थी जहां आज खड़ी है, और रोटरी के बिना दुनिया वहां नहीं पहुंच सकेगी जहां वह भविष्य में पहुंचना चाहती है।

महिलाओं के लिए सिलाई मशीन।

ट्रस्टी अध्यक्ष इयान राइसली का उल्लेख करते हुए, जो इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले थे, लेकिन एक छोटी वीडियो क्लिप के माध्यम से इसे संबोधित करने के लिए विवश थे, क्योंकि उन्हें स्वास्थ्य कारणों से मुंबई में अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था, पांड्या ने कहा अपनी भारत यात्रा की योजना बनाते हुए उन्होंने कहा था कि भारत इतना महत्वपूर्ण देश है कि ट्रस्टी चेयर के रूप में वह अपने कार्यकाल में दो बार यहां आना चाहेंगे। उनकी पहली भारत यात्रा सितंबर, 2022 में हुई थी, पर वो दक्षिण भारत में जोन 5 में आने के लिए बहुत उत्सुक थे, ''क्योंकि मैंने उन्हें बताया था कि इस क्षेत्र से न केवल भारत से सबसे ज़्यादा योगदान आता है, बल्कि ये जोन संभवतः दुनिया के 4 या 5 सर्वाधिक योगदानकर्ताओं में से एक है। उन्होंने आश्वासन दिया कि मैं आऊंगा और कोशिश कर एक बहु-मंडलीय कार्यक्रम का आयोजन करते हैं।''

उन्होंने इस विशाल आयोजन के लिए RRFC जॉन डेनियल को धन्यवाद दिया जिसमें AKS सदस्यों और मेजर डोनर के साथ EMGA, ARRFCs और जोन 5 के कई डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों ने भाग लिया। पांड्याने उन दो वृहत परियोजनाओं की भरपूर सराहना की जिनका उद्घाटन केरल के सामान्य शिक्षा और श्रम मंत्री वी शिवनकुट्टी ने किया था - पीडीजी जॉन डेनियल द्वारा अपने परिवार के ट्रस्ट वाई डेनियल फाउंडेशन के माध्यम से दान की गई

1,000 सिलाई मशीनों और पीडीजी ई के सगादेवन द्वारा दान की गई 1,000 साइकिलों का वितरण।

एकेएस सदस्यों सहित बहु-मंडलीय सम्मान रात्रिभोज में भाग लेने वाले सभी दानदाताओं को उनकी उदारता के लिए धन्यवाद देते हुए, टीआरएफ ट्रस्टी ने कहा, ''टीआरएफ की दुनिया हमारे दरवाजे से शुरू होती है और दुनिया के प्रत्येक कोने में फैली हुई है; फिर चाहे वह तिरुवनंतपुरम में एक डायलिसिस केंद्र स्थापित कर रहा हो, या बेंगलुरु या दिल्ली में एक ब्लड बैंक स्थापित कर रहा हो, या रो ई मंडल 3141 के ग्रामीण क्षेत्रों में में चेक डैम का निर्माण हो या राजकोट में 5 मंजिला मधुमेह रोगियों के लिए सुविधा का निर्माण, टीआरएफ से मिली धनराशि के साथ, लोगों की ज़िन्दगी में सुधार, लोगों का जीवन परिवर्तन, हमारा निरंतर प्रयास हैं।''

पांड्या ने टीआरएफ द्वारा शुरू किए गए 'प्रोग्राम ऑफ़ स्केल' का विवरण दिया, जिसमें पहले दो अनुदान मलेरिया से लड़ने के लिए जाम्बिया और मां और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए नाइजीरिया को दिए गए। ज़ाम्बिया में, गेट्स फाउंडेशन, वर्ल्डविजन और टीआरएफ प्रत्येक द्वारा कुल 6 मिलियन डॉलर - प्रति अनुदान 2 मिलियन डॉलर का यह अनुदान - ज़ाम्बिया के एक तिहाई क्षेत्र तक पहुँच रखने वाले दो मंडलों को दिया गया था। पिछले 18 महीनों में, ज़ाम्बिया के जिन क्षेत्रों में इस कार्यक्रम को पूरी तरह से लागू किया गया है, मलेरिया से होने वाली मृत्यु में 50 प्रतिशत की कमी आई है। इतना जबरदस्त प्रभाव है टीआरएफ कार्यक्रमों का।''

यूक्रेन में भी, यूक्रेन रिस्पांस फंड के लिए, आठ हफ्तों में, रोटेरियनों ने 15 मिलियन डॉलर का दान दिया था, और ''उसके अगले 4 महीनों में सितंबर तक, 440 अनुदानों के माध्यम से, सभी पैसे वितरित कर दिए गए थे... एंबुलेंस, राहत सामग्री, आदि के लिए। और ट्रस्टियों ने अब एक नया यूक्रेन रिस्पांस फण्ड स्थापित किया है। कई बार, हम शिकायत करते हैं कि टीआरएफ जल्दी से प्रतिक्रिया नहीं दिखाता। ठीक है, मेरे विचार से, इस से जल्दी प्रतिक्रिया नहीं हो सकती!''

यह कहते हुए पांड्या ने अपनी बात समाप्त की कि आज, रोटरी की दुनिया में, टीआरएफ सहित, भारत का बहुत सम्मान किया जाता है। पिछले पांच में से, तीन वर्षों में, भारत टीआरएफ में दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता रहा है, और अन्य दो वर्षों के दौरान, तीसरा सबसे बड़ा। यह सभी रोटेरियन के लिए गर्व की बात थी।

बेठक को संबोधित करते हुए, केरल के सामान्य शिक्षा और श्रम मंत्री शिवनकुट्टी ने केरल में अपनी निःस्वार्थ सेवा परियोजनाओं के माध्यम से इस असीम सहायता के लिए रोटरी को धन्यवाद दिया। इनमें हाल के दिनों में आईं कई प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों की मदद करना, बाढ़ पीड़ितों

पीडीजी गण ई के सगादेवन (रो ई मंडल 3203), ए वी पाथी (रो ई मंडल 3201) और डीजी एस राजमोहन नायर (रो ई मंडल 3201)।

पोलियोप्लस- रोटरी के ताज में नगीना

(बाएं से) PDGs आर बालाजी बाबू, हरिकृष्णन नांबियार, एस मुथुपलानियप्पन, पाथी, डीजी नायर, के बाबूमोन, उनकी पत्नी बीना, रोटेरियन कविता वेलिंगिरी, पीडीजी जॉन डेनियल और माधव चंद्रन की उपस्थिति में लीमा रोज़ मार्टिन, रोटरी क्लब कोयम्बटूर आकृति, रो ई मंडल 3201 की सदस्य, को TRF ट्रस्टी भरत पांड्या द्वारा लेवल -2 AKS सदस्य के रूप में अपग्रेड करने के लिए सम्मानित किया गया।

जोन 5 के टीआरएफ दाताओं के लिए आयोजित मल्टीडिस्ट्रिक्ट टीआरएफ सम्मान रात्रिभोज को संबोधित करते हुए, टीआरएफ ट्रस्टी भरत पांड्या ने कहा कि ''टीआरएफ का प्रमुख कार्यक्रम हमारा पोलियोप्लस कार्यक्रम है, जिसने आज रोटरी को दुनिया के हर सरकारी मंच पर एक सीट उपलब्ध कराई है।'' उन्होंने रोटेरियनों को अक्सर निराश होते और शिकायत करते सुना था कि अपने रोटरी के पीपी कार्यक्रम को यथोचित मान्यता नहीं मिलती है। खैर, रोटरी के पोलियो कार्यक्रम के भागीदारों में से एक है ''गेट्स फाउंडेशन। फाउंडेशन की वेबसाइट पर जाएं और पढ़ें कि यह पीपी कार्यक्रम के बारे में क्या लिखता है। इसमें लिखा है कि जहां तक पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम की बात है, तो रोटरी के बिना दुनिया वहां नहीं पहुंच सकती थी जहां आज खड़ी है, और रोटरी के बिना दुनिया वहां नहीं पहुंच सकेगी जहां वह भविष्य में पहुंचना चाहती है।''

इतना ही नहीं। उन्होंने कहा कि पिछले अक्टूबर में, बर्लिन में आयोजित विश्व स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन में, विभिन्न सरकारों और संगठनों द्वारा एक संकल्प लिया गया था कि आगामी तीन वर्षों में वे पोलियो उन्मूलन के लिए क्या योगदान देंगे। वहां दूसरे अंतिम वक्ता टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष इयान राइसली थे और उन्होंने रोटेरियनों की तरफ से कहा, 'मैं पोलियो उन्मूलन के लिए 150 मिलियन देने का वचन देता हूं।' वह वहां की दूसरी सबसे बड़ी संकल्प राशि थी। गेट्स फाउंडेशन के सीईओ अंतिम वक्ता थे। ''उन्होंने अगले तीन साल में 1.2 अरब डॉलर देने का वादा किया, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतिज्ञा करते समय उन्होंने हमारे ट्रस्टी चेयर इयान को वहां मंच पर बुला कर खड़ा किया और उनकी ओर इंगित करते हुए बोले कि रोटरी की अनुपस्थिति में पोलियो की वो स्थिति नहीं होती, जो आज है।''

पांड्या ने कहा कि रोटरी का नारा ''पोलियो के इतने करीब'' और इसके समूल उन्मूलन का लक्ष्य वास्तव में निकट है। ''बिल गेट्स पोलियो उन्मूलन कार्य का पूरा श्रेय रोटरी को देते हैं। क्या आप जानते हैं कि पोलियो के लिए अभी तक गेट्स फाउंडेशन ने जो भी पैसा दिया है - पूरे 1.5 बिलियन डॉलर, और अगले तीन वर्षों के लिए 1.2 बिलियन डॉलर की प्रतिबद्ध राशि - केवल रोटरी के माध्यम से दी गई है? यह विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ या विश्व सरकारों के माध्यम से नहीं, बल्कि TRF के माध्यम से दी जाती है। अगर डब्ल्यूएचओ या यूनिसेफ को पोलियो के लिए अनुदान चाहिए तो उन्हें उक्त धनराशि के लिए टीआरएफ से संपर्क करना होगा।''

करीब 500 लोगों की संभ्रांत भीड़ के बीच पांड्याके पास अंतिम बात ये थी कि हाल ही में गेट्स फाउंडेशन की रिपोर्ट में बिल गेट्स ने स्वयं लिखा था कि फाउंडेशन ने पोलियो उन्मूलन के लिए बहुत पैसा दिया है लेकिन ''असली काम रोटेरियनों द्वारा किया गया है। और वह आगे लिखते हैं कि जब - 'अगर' नहीं बल्कि 'जब' - पोलियो अंततः समाप्त हो जायेगा तो मैं सबसे पहले टीआरएफ मुख्यालय को फोन करूंगा और रोटेरियनों को उनके द्वारा किए गए कार्यों का शुक्रिया अदा करूँगा। ये सम्मान नहीं है तो और क्या है?''

समारोह में आये अतिथियों के साथ एक और ''अच्छी खबर'' साझा करते हुए, पांड्या बोले कि 2021 में पोलियो के छह मामले पाए गए थे, वहीं 2022 में यह संख्या 30 तक पहुंच गई थी। लेकिन 6 सितंबर, 2022 से, पाकिस्तान, अफगानिस्तान या मोजाम्बिक में एक भी मामला नहीं आया है।'' पांच महीनों में पोलियो का एक भी मामला नहीं आने से यह उम्मीद जगी है कि शायद 2026 में दुनिया और रोटेरियन अंततः कह सकेंगे : ''हां, दुनिया से पोलियो का सफाया हो गया है। फिर, मेरे दोस्त, हम में से प्रत्येक, गर्व के साथ अपना कॉलर, अपना सिर उठा कर कह सकेंगे कि यह दुनिया के बच्चों और पोते-पोतियों के लिए हमारा उपहार है।''

रो ई मंडल 3211 के डीजी बाबूमोन ने टीआरएफ ट्रस्टी पांड्या का स्वागत किया। बाएं से: मीरा डेनियल, पीडीजी गण जॉन डेनियल, आर बालाजी बाबू, मुत्तुपलानियप्पन, बीना और पीडीजी सगादेवन भी चित्र में शामिल हैं।

को घर उपलब्ध कराना और सरकारी अस्पतालों को बहुमूल्य नैदानिक और उपचार के लिए चिकित्सा उपकरण प्रदान करना शामिल है। वंचित परिवारों की महिलाओं को बांटी जा रही सिलाई मशीनों से उन्हें सुरक्षित आजीविका प्राप्त करने में मदद मिलेगी, वहीं 1,000 लड़कियों को दी जाने वाली साइकिलें स्कूली शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें सशक्त बनाएंगी।

पीडीजी डैनियल ने कहा कि 1,000 सिलाई मशीनों में से प्रत्येक की कीमत 5,000 (परियोजना लागत ₹50 लाख) है, और इससे 1,000 महिलाओं को अपने परिवारों का समर्थन करने में मदद मिलेगी। पीडीजी सगादेवन और रो ई मंडल 3211 के क्लबों द्वारा दान की गई 1,000 साइकिलें सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में लड़कियों को स्कूल छोड़ने से रोकने के लिए दी जाएंगी।

आरआरएफसी डैनियल और पीडीजी सगादेवन के अलावा, मेजबान डीजी के बाबूमोन (रो ई मंडल 3211), ईएमजीए माधव चंद्रन, और जोन 5 एआरआरएफसी पीडीजी आर बालाजी बाबू, हरिकृष्णन नांबियार, ए कार्तिकेयन, ए वी पाथी, एस मुत्तुपलानीयप्पन, डीजी गण वी सेल्वनाथन (2981), पी सरवनन (2982), राजमोहन नायर (3201), प्रमोद नयनार (3204) और बी एलंगकुमारन (3203) ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पंद्रह ए के एस सदस्यों (2020-2023 से), उनमें से चार दूसरे स्तर के सदस्यों को सम्मानित किया गया।

बाएं से: बीना, डीजी बाबूमोन, केरल के सामान्य शिक्षा और श्रम मंत्री वी शिवनकुट्टी, पीडीजी जॉन डेनियल, मीरा और टीआरएफ ट्रस्टी पांड्या।

चित्र: रशीदा भगत

जनवरी 2023 तक मंडल टीआरएफ योगदान

(अमेरिकी डॉलर में)

मंडल संख्या	एनुअल फण्ड	पोलियो प्लस फंड	एंडोमेंट फण्ड	अन्य निधि	कुल योगदान
India					
2981	19,151	512	0	1,125	20,788
2982	10,196	2,238	4,061	33,116	49,611
3000	23,610	3,169	0	0	26,779
3011	38,119	8,063	25,127	238,088	309,396
3012	13,280	752	65,235	140,713	219,980
3020	106,894	7,902	40,000	400	155,196
3030	51,772	290	0	1,275	53,337
3040	18,660	2,006	0	22,156	42,822
3053	41,122	136	0	0	41,258
3054	9,130	826	0	31,500	41,456
3060	71,305	1,500	0	64,635	137,440
3070	47,956	2,570	50,233	11,296	112,055
3080	27,492	7,482	0	38,163	73,137
3090	8,368	0	5,651	0	14,019
3100	52,929	400	25,012	0	78,341
3110	21,034	454	24,304	631,051	676,843
3120	23,823	411	0	0	24,234
3131	305,668	8,789	36,315	302,254	653,026
3132	40,636	2,391	50,000	2,012	95,039
3141	681,895	32,756	102,003	1,451,865	2,268,519
3142	195,175	3,721	24,866	77,045	300,807
3150	76,936	27,423	43,012	417	147,788
3160	3,749	2,363	0	3,675	9,786
3170	80,673	33,854	15,506	862	130,895
3181	77,084	622	25	912	78,644
3182	36,769	2,789	0	0	39,559
3190	63,921	7,350	38,170	36,593	146,034
3201	95,560	23,874	12,295	414,030	545,760
3203	7,124	12,833	1,000	30,054	51,011
3204	5,645	806	0	152	6,603
3211	73,343	5,065	10,000	1,049	89,458
3212	178,860	37,834	305	52,146	269,145
3231	60,394	23,432	32,278	11,569	127,672
3232	60,503	58,338	19,358	201,544	339,743
3240	80,731	14,913	1,000	3,622	100,266
3250	13,030	290	0	13,605	26,925
3261	16,616	917	0	5,277	22,809
3262	46,043	463	700	34,012	81,218
3291	50,452	1,172	40,533	8,190	100,348
India Total	**2,835,646**	**340,708**	**666,989**	**3,864,404**	**7,707,747**
3220 **Sri Lanka**	48,474	8,333	4,000	226	61,033
3271 **Pakistan**	25	22,125	0	250	22,400
3272 **Pakistan**	455	12,687	0	5,000	18,142
3281 **Bangladesh**	58,696	3,546	22,125	154,245	238,612
3282 **Bangladesh**	46,640	6,701	2,000	10,320	65,662
3292 **Nepal**	165,773	20,236	49,167	29,830	265,006
South Asia Total	**3,155,709**	**414,336**	**744,281**	**4,064,275**	**8,378,601**

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र, विश्व कोष और आपदा प्रतिक्रिया शामिल हैं।
स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

पांडुरंगा सेट्टी

एक अनुकरणीय व्यक्ति, एक प्रेरणादायक और भरोसेमंद मित्र

राजेन्द्र साबू

कद में छोटे, शारीरिक संरचना में दुबले, बुद्धिमत्ता और दृष्टिकोण में साहसी एवं प्रबल होने के साथ ही अनेक विचारों को अपनाने वाले पांडुरंगा सेट्टी एक दुर्लभ व्यक्ति थे। मैं उन्हें 1997 से पहले जानता था जब वह मंडल 318 के नवनिर्वाचित मंडल गवर्नर थे और उसके बाद उनके करीबी बन गए। 1970 में पांडु की बहनें शांता और निर्मला स्वामी शास्त्रानंद के साथ रामकृष्ण मिशन आश्रम घूमने चंडीगढ़ आई थी। वे हमारे मेहमान बने और मेरी पत्नी उषा ने उनकी देखभाल की।

मैं साल में 2-3 बार बैंगलोर गया क्योंकि मेरे माता-पिता ने वहाँ ग्रीष्मकालीन निवास लिया था। साथ ही मेरी बहन स्नेह और गजानंद पांडु से मिल सके और रोटरी क्लब बैंगलोर का दौरा किया। 1971-72 में रोटरी क्लब चंडीगढ़ का अध्यक्ष बनने के बाद मुझे रोटरी में रुचि हो गई। उस दौरान मैं बैंगलोर में था, जहाँ मेरे पिता ने एक नया घर बनवाया था, लेकिन 1971 में गृहप्रवेश समारोह के दिन मेरे बड़े भाई महेंद्र का निधन हो गया। मेरे चचेरे भाई, प्रयाग मालपानी जो पांडु सेट्टी के परिवार के करीबी थे और पांडु ने मिलकर दाह संस्कार की व्यवस्था की।

पांडु की रोटरी कहानी तब शुरू हुई जब वह 1959 में रोटरी क्लब बैंगलोर में शामिल हुए। वह 1969-70 में क्लब अध्यक्ष बने। वह रोटरी में मुझसे आगे थे और हमारी यात्रा बहुत सुखद थी और हम और अधिक करीब तब आए जब मैं उनसे और उनकी पत्नी वसंता से बोका रैटन, फ्लोरिडा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में मिला जहाँ मैं सामूहिक चर्चा का नेता था और जहाँ नवनिर्वाचित गवर्नर उन्मुख थे। 1978-79 में पांडु के करीबियों में डॉ वीरेंद्र गंगवाल, सुदर्शन अग्रवाल, प्रेम भल्ला, डॉ बदर मस्काती शामिल थे। उन्होंने कृष्णा फ्लोर मिल्स के साथ व्यापार शुरू किया और इसे पशु चारे के निर्माण तक विस्तारित किया। उन्होंने अपने छोटे भाई रामचंद्र का समर्थन किया और कुछ साल बाद मंडल गवर्नर बन गए। अपनी धारणाओं के चलते उन्होंने रामचंद्र से अलग होकर उन्हें पशु आहार इकाई सौंप दी।

1979-80 में रो ई अध्यक्ष जिम बोमर प्रति व्यक्ति यूएस डॉलर को लेकर चिंतित थे जिसे भारतीय रोटेरियनों द्वारा रोक दिया गया था। मुझे यह जानने के लिए कहा गया कि अमेरिका में

रो ई मंडल का एक सदस्य होने के नाते मैं *रोटरी न्यूज़* को दक्षिण एशिया के लिए रोटरी क्षेत्रीय पत्रिका के रूप में मान्यता दिलवाने और प्रमाणित करने में सक्षम था। पांडु इस पत्रिका के संपादक और प्रकाशक बने।

पांडुरंगा सेट्टी, रो ई अध्यक्ष राजेंद्र साबू के कार्यकाल के दौरान रो ई बोर्ड में थे।

रो ई को पैसा कैसे भेजा जा सकता है। मैं प्रति व्यक्ति धन के लिए एक किस्त मंजूर कराने में तो सक्षम था मगर रोटरी पत्रिका के लिए नहीं। मैंने भारत में *रोटेरियन* की छपाई तय करने और एक क्षेत्रीय पत्रिका की संभावना तलाशने हेतु गठित की गई एक समिति की अध्यक्षता की। मैं जानता था कि क्षेत्रीय पत्रिका को बैंगलोर में होना चाहिए और मैंने बैंगलोर जाकर इसकी संभावना तलाशने के लिए पांडु के साथ काम किया। PDG देबू होसाली ने पहले *रोटरी न्यूज़* प्रकाशित किया जो हर महीने तो नहीं पर कभी-कभी प्रकाशित होता था। हमने जाना कि होसाली ने इस पत्रिका को रमेश पई को बेच दिया था और जब हमने उनसे बात की तो वह इसके प्रकाशन को रोटरी को सौंपकर खुश थे।

पांडु और मैंने पत्रिका का नियंत्रण लेने और दी रोटरी फाउंडेशन द्वारा निर्धारित नीतियों और दिशानिर्देशों का पालन करते हुए इसे पुनर्गठित करने पर चर्चा की। रो ई के निदेशक के रूप में मैंने क्षेत्रीय पत्रिका में रुची ली और एक उपसमिति की सिफारिश के साथ रो ई मंडल ने इसे मंजूरी दे दी। 1983 तक, *रोटरी न्यूज़* का पहला संस्करण कलकत्ता के एशिया जोन-2 संस्थान में रो ई अध्यक्ष बिल स्केल्टन द्वारा प्रकाशित किए जाने हेतु तैयार था। रो ई मंडल का एक सदस्य होने के नाते मैं *रोटरी न्यूज़* को दक्षिण एशिया के लिए रोटरी क्षेत्रीय पत्रिका के रूप में मान्यता दिलवाने और प्रमाणित करने में सक्षम था। पांडु इस पत्रिका के संपादक और प्रकाशक बने। इसके लिए पांडु को सलाम।

पांडु न केवल एक रोटरी सहयोगी बने बल्कि एक मित्र और फिर परिवार के एक सदस्य बन गए। जर्मनी में उनका बहुत प्रभाव था और मेरे पास जर्मन सहयोग होने के बाद भी उन्होंने मेरे एक रिश्तेदार की मदद की जो जर्मनी से गुजर रहा था और उसे चिकित्सा उपचार की आवश्यकता थी। उन्होंने तुरंत इस केस को देखने के लिए कुछ वरिष्ठ सर्जनों की व्यवस्था की।

पांडु सुदर्शन अग्रवाल को अपना रो ई निदेशक का पद गंवा बैठे मगर अगले कार्यकाल हेतु 1991-93 के लिए सर्वसम्मति से रो ई निदेशक के रूप में नामित किए गए जो दक्षिण

भारत के राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के साथ PRID सेट्टी।

भारत से पहला था। यह काठमांडू का एक संस्थान था जिसके लिए मुझे पहले ही रो ई अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया था। मुझे रो ई अध्यक्ष पद के लिए चुनौती दी गई थी और मेरे सामने शर्त रखी गई थी कि पांडु को रो ई निदेशक नामित के रूप में इस्तीफा देना होगा। यह बेतुका था, पांडु मेरे साथ थे और मंडल में किसी भी प्रस्ताव के लिए मेरी आवाज बने। मेक्सिको सम्मलेन के बाद, हमारी मंडल बैठक कुएर्नवाका नामक एक रिसॉर्ट में थी। यह एक रिवाज था कि सम्मेलन स्थल से मंडल किसी रिसॉर्ट तक यात्रा करेगा। हालांकि उस परिसर के खंड बिल्कुल भी आरामदायक नहीं थे। मैं किसी दूसरी जगह स्थानांतरित होने के बारे में सोच रहा था मगर यह स्थानीय रोटेरियनों के लिए अपमानजनक हो जाता जिन्होंने इस प्रवास की व्यवस्था की थी। मैंने पांडु से बात की और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं सबकुछ उन पर छोड़ दूँ। अगली मंडल बैठक में पहला विषय हमारा प्रवास स्थल था, पांडु ने इस मुद्दे को इस तरह से रखा कि सभी मंडल सदस्यों

PRIPs के आर रवींद्रन (बाएं) और साबू के साथ PRID सेट्टी।

मेक्सिको में PRIP राजेंद्र साबू के साथ PRID सेट्टी।

ने कहा कि वे यहाँ रहेंगे। पांडु पर मैं पूरी तरह निर्भर होता जा रहा था।

1991-92 में पांडू ने मुझे फोन करके कहा कि उन्होंने सुना है कि रो ई मंडल 3080 के चुनाव में मेरे सख्त निर्देशों के खिलाफ जाकर प्रचार किया जा रहा है। मेरे मंडल सम्मेलन प्रतिनिधि, PDG पी सी थॉमस की रिपोर्ट स्पष्ट थी। मैंने पी सी को फोन किया और पूछा कि वास्तव में हुआ क्या था। पांडु द्वारा मुझे सचेत किए जाने की वजह से मैंने तुरंत अपने कार्यकारी समिति अध्यक्ष, भिचाई रत्ताकुल को चंडीगढ़ जाने के लिए कहा और इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा चुनाव हुआ जिसमें किसी भी उम्मीदवार को अयोग्य घोषित नहीं किया गया।

गवर्नर के रूप में वाई पी दास का नामांकन रद्द कर दिया गया था लेकिन बाद में उन्हें सर्वसम्मति से 1993-94 के लिए गवर्नर-नामित के रूप में चुना गया।

1991-92 के दौरान, पांडु रो ई समितियों में शामिल थे और पांडु एवं उनकी पत्नी वसंता दोनों इवांस्टन में हमारे कोंडो के लिए आए। वह बहुत विनम्र एवं अप्रत्यक्ष थे। फिर ऑरलैंडो सम्मलेन, फ्लोरिडा, यूएस आया और पांडु ने मेरे परिवार और पुनर्मिलन समारोह का ध्यान रखा। मैं यह नहीं भूल सकता कि कैसे वसंता सभी मंडल के सदस्यों की पत्नियों के लिए एक सामाजिक समारोह में पहनने हेतु साड़ियां लाई थी।

1992-93 में क्लिफ डोचरमैन, जो पांडु के बड़े प्रशंसक थे, ने उन्हें मंडल की कार्यकारी समिति का अध्यक्ष बनाया और वो चाहते थे कि के आर रवींद्रन, अंतर्राष्ट्रीय सभा में एक प्रशिक्षण नेता के रूप में शामिल हो, जो श्रीलंका से पहला था। रवींद्रन के रो ई निदेशक और अंततः रो ई अध्यक्ष बनने की दिशा में यह पहला कदम था। रवींद्रन ने पांडु में जीवन और मूल्यों से जुड़ा एक शिक्षक देखा। पांडु ने रो ई अध्यक्ष के रूप में मेरे वर्ष के दौरान श्रीलंका का दौरा किया और कैंडी में कृत्रिम पैर की सुविधा शुरू की।

पांडु ने दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्रीय पोलियो प्लस समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और साल-दर-साल इसका मार्गदर्शन भी किया ताकि दक्षिण पूर्व एशिया का पोलियो मुक्त घोषित होना सुनिश्चित हो सके। रोटरी में उनकी भागीदारी ने बड़ी संख्या में हमारे कार्यक्रमों में मदद की जिसमें लड़कियों के स्कूलों के लिए आरामदायक स्टेशन प्रदान करना, साक्षरता कार्यक्रम, गरीबों के लिए आवास आदि शामिल है। उन्हें रो ई का स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार भी मिला।

पांडु के आर रवींद्रन और हाल ही में गॉर्डन मेकिनेली सहित रो ई अध्यक्षों के लिए गठित की गई अधिकतर नामांकन समितियों में शामिल थे।

पांडु के आर रवींद्रन और हाल ही में गॉर्डन मेकिनेली सहित रो ई अध्यक्षों के लिए गठित की गई अधिकतर नामांकन समितियों में शामिल थे।

जब मैं बैंगलोर गया तो मैंने उनके साथ दोपहर का भोजन किया और उनके परिवार के बारे में बहुत सारी बातें की और यह भी जाना कि उनके बाद उनके ट्रस्ट के साम्राज्य का नेतृत्व कौन करेगा। मैंने उनके कॉलेज, आर वी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का दौरा भी किया; और जब भी मैंने किसी योग्य विद्यार्थी के प्रवेश के लिए उनसे सिफारिश की तो उन्होंने इस बात का हमेशा ध्यान रखा। यह कॉलेज बाद में एक विश्वविद्यालय बन गया।

वसंता और पांडु दोनों उदार और सौहार्दपूर्ण मेजबान थे। उनके सरल और सहज घर में हमने दक्षिण भारतीय रात्रिभोज किया। बाद में वसंता को गठिया हो गया और वह ज्यादा चल फिर नहीं

पा रही थी। पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने न केवल एक पेशेवर के रूप से बल्कि संगठन के शीर्ष स्तर पर पहुँचने वाले एक रोटेरियन के रूप में भी पांडु की प्रशंसा की।

पांडु और वसंता की रोटरी जीवन यात्रा दशकों तक चली। उषा और मैं उन्हें हमारे सह-यात्री और ईमानदार दोस्त के रूप में पाकर धन्य हो गए। पांडु इतने गुणी थे कि जो लोग उनके विचारों का विरोध करते थे वो भी उनकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

मुझे सबसे अधिक निराशा इस बात की है कि मैं पांडु को रोटरी संस्थान का न्यासी बनते नहीं देख सका। रो ई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जॉन केनी के कार्यकाल के दौरान मैंने उनसे पांडु को न्यासी बनाने का अनुरोध किया क्योंकि उन्हें न्यास और अन्य संस्थानों के प्रबंधन का बहुत अनुभव था। दुर्भाग्य से इस पद के लिए पांडु उन्हें वृद्ध लगे और उन्होंने मेरी अगली सिफारिश को स्वीकार करते हुए अशोक महाजन को न्यासी बनाया।

PRID सेट्टी, प्रसिद्ध उद्योगपति सर एम विश्वेश्वरैया का अभिवादन करते हुए।

चंडीगढ़ के रोटरी क्लब द्वारा बच्चों एवं 20 साल की उम्र तक के लोगों की हार्ट सर्जरी के लिए *हार्ट लाइन* नामक परियोजना चलाई जा रही थी और यह पाकिस्तानी बच्चों के लिए भी थी। 2007 में एक सुंदर 13 वर्षीय तौसीफ झत्रख में नहीं जा सका, जहाँ क्लब ने सर्जरियाँ की थी। हालांकि, यह पल्मोनरी आर्टेसिया की एक गंभीर हृदय स्थिति थी जिसमें एक पल्मोनरी वाल्व गायब थी और इस वजह से एक फेफड़े में कोई रक्त संचार नहीं हो पा रहा था। मैंने PGI में सर्जन से इस बारे में पूछा और उन्होंने कहा कि बैंगलोर में एकमात्र व्यक्ति, डॉ देवी सेट्टी है जो इस खतरनाक प्रक्रिया को सफलतापूर्वक कर सकते है। उस लड़के और उसके पिता दोनों के पास चंडीगढ़ का वीजा था। दिल्ली में रोटेरियनों की एक श्रृंखला की मदद से छह घंटे में बैंगलोर के लिए वीजा उपलब्ध हो गया और सुबह उन दोनों ने दिल्ली के लिए उड़ान भरी और फिर वहाँ से बैंगलोर पहुँचे। यह श्रृंखला पांडु के साथ समाप्त हुई। मैंने उनसे मदद मांगी और चूंकि वो डॉ सेट्टी को अच्छी तरह से जानते थे, वह तुरंत सक्रिय हो गए। नारायण हृदयालय अस्पताल की एक एम्बुलेंस हवाई अड्डे पर लड़के और उसके पिता के पास पहुँची और डॉ सेट्टी ने उसका ऑपरेशन किया जो 9 घंटे तक चला जिसके अंतर्गत तौसीफ को एक दिल मिला जो आधा पाकिस्तानी और आधा भारतीय था और 72 घंटे के बाद उसकी सर्जरी सफल रही – एक अनूठा मामला। यह भी सिर्फ पांडु की वजह से था।

पांडुरंग सेट्टी अपनी पत्नी वसंता के साथ।

मैं ऐसी अनेक कहानियां सुना सकता हूँ। जब हमारे घड़ी के खुदरा व्यापार, एथोस के लिए व्यक्तिगत मदद की आवश्यकता थी, तो पांडु ने उन स्थानों का प्रबंध किया जिनकी हमें आवश्यकता थी। पांडु ने बदले में कभी कुछ नहीं चाहा। वह एक अभिन्न मित्र, एक विशेष और अद्वितीय व्यक्ति थे। मुझे उनकी दोस्ती पर गर्व है और मैं इसके लिए कृतज्ञ हूँ।

डॉ मेदा के पांडुरंगा सेट्टी की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है। वह एक आदर्श व्यक्ति, एक प्रेरणादायक और विश्वसनीय दोस्त, विनम्रता, ईमानदारी और अखंडता से परिपूर्ण नेता थे। वह एक प्रतीक है, सागर की तरह गहरे है, आकाश की तरह ऊँचे है और पृथ्वी की तरह व्यावहारिक है।

लेखक रो ई के पूर्व अध्यक्ष है

सिंगापुर के रोटेरियनों ने की रोटरी क्लब सोनकच्छ के साथ साझेदारी

रशीदा भगत

वर्ष 1990 के दशक के अंत में रोटरी क्लब सोनकच्छ, मध्य प्रदेश, ने महसूस किया कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले वंचित परिवारों के बच्चों को अपने स्कूलों में सुविधाओं एवं बुनियादी ढांचे के मामले में कितना समझौता करना पड़ता है। यहाँ तक कि इन स्कूलों में सुरक्षित पेयजल, स्वच्छ शौचालय और अच्छी बेंच एवं टेबल जैसी बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है। ''इसके परिणामस्वरूप वे स्कूल जाने में रुचि खो देते है और कक्षा 5 तक पहुंचने से पहले ही पढ़ाई छोड़ देते है। इनमें से कई बच्चे बाल श्रम करने हेतु मजबूर होते है। इसलिए हमारे क्लब के रोटेरियनों ने यह सुनिश्चित करने की प्रतिज्ञा ली कि वे सोनकच्छ और रो ई मंडल 3040 के अन्य हिस्सों एवं उसके आसपास के सभी सरकारी स्कूलों में स्कूल फर्नीचर हों और विद्यार्थी अब फर्श पर न बैठें। और हम काफी हद तक सफल हुए है,'' क्लब के सदस्य और PDG डॉ ज़मीन हुसैन कहते है।

क्लब ने लगभग 25 साल पहले रोटरी संस्थान से विभिन्न मिलान अनुदान के बाद वैश्विक अनुदान प्राप्त करने हेतु उचित तरीके अपनाएं और अमेरिका, ऑस्ट्रिया, जर्मनी एवं सिंगापुर के विभिन्न क्लबों के साथ साझेदारी में इन स्कूलों के लिए कई अनुदान परियोजनाएं लागू कीं। ''इन अनुदानों की मदद से हम अपने क्षेत्र के 1,400 से अधिक स्कूलों को फर्नीचर एवं अन्य बुनियादी सुविधाएं उपहार में दे सकेंगे जिससे हजारों छात्र लाभान्वित होंगे। हमने सुरक्षित जल, शौचालय खंड और विज्ञान प्रयोगशालाएं भी प्रदान की,'' वह आगे कहते है।

जब छात्र फर्श से ऊपर स्थानांतरित होते है और अपनी नोट बुक एवं पाठ्य पुस्तकों के साथ झुककर बैठने हेतु बाध्य नहीं रहते, तो इससे उनकी रीढ़ की हड्डी को लाभ मिलता है और अपने शरीर की उचित मुद्रा की वजह से वे वर्तमान और भविष्य में रीढ़ की विभिन्न समस्याओं से बच जाते है। अन्य स्वास्थ्य लाभ यह है कि आंख और पुस्तक के बीच 25 सेमी की उचित दूरी बनाए रखने से आंखों पर कोई दबाव नहीं पड़ता जिससे अपवर्तक त्रुटियों को रोका जा सकता है। लेकिन इन सबसे ऊपर स्कूल के कक्षाओं का उचित फर्नीचर बच्चों को गरिमा प्रदान करता है क्योंकि उन्हें लगता है कि वे वंचित या मजबूर नहीं है और उन्हें अब फर्श पर बैठने की ज़रूरत नहीं है। इससे उनकी कक्षाओं में भाग लेने

रोटरी क्लब सिंगापुर के सदस्य पीटर ब्रॉक, छात्रों और छात्राओं के साथ।

आनंद सोसाइटी स्कूल फॉर स्पेशल चिल्ड्रन जहां उपहार में फर्नीचर दिया गया था में पीडीजी ज़ामिन हुसैन, सिंगापुर से डीजीएनडी शाहुल हमीद, रोटरी क्लब सोनकच के अध्यक्ष दिनेश कारपेंटर और रोटेरियन ब्रॉक।

और स्कूल में जो पढ़ाया जा रहा है उस पर ध्यान देने में रुचि बढ़ती है।

एक दिलचस्प नतीजा यह है कि अब वे उचित रूप से बैठे है, बच्चों की लिखावट में भी सुधार होता है!

PDG हुसैन कहते है कि पिछले कुछ वर्षों में निरक्षरता के खिलाफ हमारे अभियान के तहत रोटरी क्लब सोनकच्छ ने रोटरी क्लब सिंगापुर के साथ साझेदारी की है और ''इस क्लब के रोटेरियन फर्नीचर खरीदने और उन्हें स्कूलों को उपहार में देने में हमारी मदद कर रहे है। हाल ही में उनकी मदद से हम सोनकच्छ, इंदौर, उज्जैन और खरगोन शहर के स्कूलों को फर्नीचर के लगभग 1,300 सेट प्रदान कर सके। उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान चिकित्सा उपकरण प्रदान करने के लिए वैश्विक अनुदान के माध्यम से हमारी मदद भी की।''

हाल ही में DGND डॉ शाहुल हमीद के नेतृत्व में छह रोटेरियनों की एक टीम ने छात्रों, शिक्षकों और स्थानीय रोटेरियनों से मिलने के लिए सोनकच्छ का दौरा किया। उन्होंने एक सरकारी अस्पताल का भी दौरा किया जहाँ रोटरी क्लब सोनकच्छ ने एक रोटरी वार्ड स्थापित किया है।

जल संसाधनों के पूरक के लिए, रोटरी क्लब सिंगापुर ने 270 रूफटॉप वर्षा जल संचयन इकाइयों को स्थापित करने में भी मदद की है जो धरती के जल स्तर को रिचार्ज करने और पूरे वर्ष पानी की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए रेत के फिल्टर के माध्यम से बारिश के पानी को बोरवेल में उतारेंगे।

उनकी यात्रा के दौरान, डॉ हमीद ने दोनों परियोजनाओं और उनको लागू किए जाने के तरीके पर अपनी खुशी व्यक्त की। ''हमें यह जानकर खुशी हुई कि वे वास्तव में इस क्षेत्र में एक स्थायी परिवर्तन लाएंगे और बच्चों की बेहतर अध्ययन करने में मदद करेंगे। रोटरी क्लब सिंगापुर को भावी परियोजनाओं के लिए भी एक साझेदार बने रहने में खुशी होगी।

सिंगापुर क्लब के एक अन्य रोटेरियन, पीटर ब्रॉक, ने देखा कि ''स्कूल डेस्क परियोजना न केवल एक शारीरिक लाभ प्रदान करती है, बल्कि यह छात्रों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को भी बढ़ाती है। डेस्क का उपयोग करने से प्रत्येक छात्र में योगदान करने के साथ-साथ कक्षाओं में भाग लेने का अतिरिक्त आत्मविश्वास आता है।''

वर्षा जल संचयन परियोजना पर सिंगापुर के रोटेरियन खुश थे ''कि यह पूरे समुदाय को एक व्यावहारिक और स्थायी लाभ प्रदान करेगा। उन्होंने इन परियोजनाओं को इतनी बड़ी सफलता बनाने हेतु कड़ी मेहनत करने के लिए रोटरी क्लब सोनकच्छ के अध्यक्ष दिनेश कारपेंटर और सचिव दिनेश राठौड़ को धन्यवाद दिया। ■

आपके सवाल गॉर्डन मेकिनेली के जवाब

यदि आप गॉर्डन मेकिनेली से रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के रूप में उनके आगामी वर्ष के बारे में कुछ भी पूछेंगे, तो वे तुरंत टोक देंगे। यह मेरे साल के नहीं, यह रोटरी के कई वर्षों में से एक के बारे में है, वह ठीक करते हैं । मुझे निरंतरता में जबरदस्त यकीन है और मैं वर्षों को अलग-अलग कर के नहीं देखता।

वो अक्टूबर का प्रचंड दिन था, जब सोशल मीडिया के माध्यम से एकत्रित हुए दुनिया भर के रोटरी सदस्यों के सवालों के जवाब देने के लिए मेकिनेली रोटरी संचार टीम के छह सदस्यों के साथ तैयार हो के स्क्रीन के सामने बैठ गए। वो बेहद हाजिर जवाब हैं और इस सहज मजाक से कमरे में हँसी फूट पड़ी जहां एक फिल्मी दल बूम माइक, कैमरा और रोशनी के उपकरणों के साथ तैयारी कर रहा था। स्कॉटलैंड के रोटरी क्लब साउथ क्वींसफेरी के सदस्य के रूप में अपना परिचय देते हुए, उन्होंने अपने विशिष्ट लहजे के बारे में चुटकी ली: ''लहजे में खामी होने के बावजूद, मैं स्कॉटिश हूं, और इस का मुझे बहुत गर्व है।''

मेकिनेली की स्कॉटिश विरासत उनके कार्यालय में साफ़ झलकती हैं, जहां स्कॉटिश कलाकार जॉन लोरी मॉरिसन की बनाई शानदार लैंडस्केप पेंटिंग एक दीवार को सुशोभित कर रही है। वह कहते हैं कि स्कॉटलैंड उतना सुनसान नहीं है जितना आमतौर पर दिखाया जाता है। कई स्थानों पर तो यह अत्यंत सुन्दर है। वास्तव में, स्कॉटलैंड के बारे में कई रूढ़िवादी भ्रांतियां हैं जिनसे मेकिनेली बाहर निकलना चाहते हैं। ''टार्टन, प्लेड (चारखाने वाले ऊनी वस्त्र) यह बहुत ही पारंपरिक है, अत्यंत रूढ़िवादी है,'' वे कहते हैं। इसके बजाय, उनकी अध्यक्षीय टाई, उनके चहेते कलाकार मॉरिसन द्वारा उपयोग किए जाने वाले चटख रंगों से प्रेरित है, साथ ही उनके अध्यक्षीय थीम सीशेल में प्रयुक्त रंग थाईलैंड से प्रेरित हैं। ''मेकिनेली के कार्यालय में और भी रंगीन अनोखी चीजें हैं, जिनमें से एक है, कार्डबोर्ड से बनाई गई उनके सिर की प्रतिकृति, जो उन्हें मिनियापोलिस में एक रोटरी इंस्टिट्यूट के दौरान मिली थी। सोशल मीडिया पर डालने के लिए आगंतुक इसे पकड़ कर सेल्फी लेते हैं। हंसते हुए कहते हैं, ''मेरा ख़याल है कि उन्हें मेरे बजाये मेरे सिर के साथ सेल्फी लेने में ज्यादा समझदारी लगती है।''

26 साल की उम्र में मेकिनेली साउथ क्वींसफेरी क्लब में दाखिल हो गए थे। हाल ही में उनकी शादी हीदर से हुई थी और वह एडिनबर्ग के बाहर अपनी जड़ें जमाना चाहते थे। इस युगल की मुलाक़ात एक किसान से हुई जिसने उन्हें एक रोटरी सामाजिक कार्यक्रम और फिर कुछ रोटरी बैठकों में आमंत्रित किया था और इससे पहले कि मेकिनेली कुछ समझ पाते, वह रोटरी सदस्यता की राह पर चल पड़े थे। हीदर मेकिनेली भी एक रोटेरियन हैं, जो रोटरी क्लब ऑफ सेल्किर्क के

बॉर्डरलैंड सैटेलाइट क्लब से संबंधित हैं।) ''मुझे नहीं मालूम था कि एडिनबर्ग में अकेले काम करने वाला एक दंत चिकित्सक दुनिया में बड़ा अंतर कैसे ला सकता है, वह याद करते हैं। लेकिन मुझे बहुत जल्दी एहसास हो गया कि रोटरी का हिस्सा बनकर, मैं कर सकता था, और मैंने किया।''

वह अपने वर्ष का प्रभावी उपयोग करना चाहते हैं - उसे खरोंचिये, नीचे 2023-24 रोटरी वर्ष लिखा है - मानसिक स्वास्थ्य पर प्रकाश डालने के लिए, एक ऐसा मुद्दा जिसने सीधे उनके परिवार को प्रभावित किया है और जो मुद्दा हमेशा से पृष्ठभूमि में रहा और अक्सर नज़रअंदाज़ किया गया । मेकिनेली बाइपोलर यूके संस्था के एंबेसडर है, यह एक ऐसा संगठन है जो बीमारी से पीड़ित लोगों के साथ-साथ उनके परिवारों और उनकी देखभाल करने वालों का सहयोग करती है। हाल ही में, रोटरी इंटरनेशनल ने ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में सदस्यों में कौशल का सृजन करने के लिए संगठन के साथ साझेदारी शुरू की है जिससे देश भर में सहायता समूहों के अधिक विश्वसनीय और मजबूत नेटवर्क बनाने में मदद मिल सके। ''मैं रोटरी सदस्यों के कौशल का उपयोग करने में ज्यादा यकीन रखता हूं,बजाये उनकी चेकबुक के, वे कहते हैं।''

आगे टाउन हॉल का एक संक्षिप्त विवरण है। इसे *Rotary.org/mcinallytownhall* पर देख सकते हैं।

आपकी प्रमुख मान्यताएं क्या हैं, और वे आपके नेतृत्व को किस प्रकार आकार देंगी?

नटराजन सुंदरेसन, रोटरी क्लब ऑफ कूटापक्कम, भारत

मेरी मुख्य मान्यता या मूल्य को केवल एक शब्द में व्यक्त किया जा सकता है, और वह है देखभाल। मुझे लोगों की परवाह है ये सोच कर मुझे अच्छा लगता है। पेशेवर रूप से, एक दंत चिकित्सक के रूप में मैंने कई वर्षों तक लोगों की देखभाल की है। कुछ ऐसा जो मेरे माता-पिता ने मेरे भीतर रोपित किया था। और यही हमने अपने बच्चों में बिठा दिया है। और बड़ी बात यह है कि अब मैं इसे अपने पोते-पोतियों में अंकुरित होते हुए देख रहा हूँ। मुझे लगता है कि अगर दुनिया एक बेहतर देखभाल करने वाली जगह, एक दयावान जगह होती, तो यह एक ज्यादा खुशहाल और ज्यादा शांतिपूर्ण जगह होती। शांति उन मुद्दों में से एक है विशेष रूप से जिसकी दिशा में हमको आगे बढ़ते हुए देखना चाहता हूं।

हम रोटरी के सदस्यों में वो जज़्बा कैसे पैदा कर सकते हैं, कैसे उस आग को फिर से जगा सकते हैं जो लगता है अपनी चिंगारी खो चुके हैं?

जैनीन और पॉल बर्टविसल, रोटरी क्लब गणजी, चैनल आइलैंड से

मैं जैनीन और पॉल से भली भांति परिचित हूं, और उनका सवाल पूछना अच्छा लगा। मुझे लगता है कि रोटरी के कुछ सदस्यों में सोइ हुई चिंगारी को फिर से जगाने का तरीका, यह सुनिश्चित करना है कि रोटरी क्लब का अनुभव जितना बढ़िया हो सके उतना ही अच्छा है और वो सभी के लिए उपयुक्त हो। यह एक ही साइज सबको फिट आये जैसा मसला नहीं है। कुछ क्लब कंट्री क्लब में मिलना चाहते हैं और लंच पर 2.5 घंटे बिताना चाहते हैं। अन्य क्लब शनिवार की सुबह सिर्फ 45 मिनट के लिए कॉफी और बैगेल पर मिलेंगे, फिर बाहर जा कर सेवा करेंगे।

कुल मिला कर यह सब सेवा के अंतर्गत आता है। हम एक सदस्यता संगठन हैं और एक सेवा संगठन हैं। या ये /या वो नहीं है। हमें बाहर निकल कर सेवा करने की ज़रुरत है, क्योंकि हम इसका ना सिर्फ अधिक आनंद उठाएंगे, बल्कि हमें ऐसे और लोग भी मिलेंगे जो हमारे साथ जुड़ना चाहेंगे क्योंकि वे हमें सेवा करते देख सकते हैं।

2023-24 में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए रोटरी के पास क्या ठोस योजनाएं हैं?

अब्दुर रहमान, रोटरी क्लब ऑफ सिकंदराबाद, भारत

जिन बड़ी परियोजनाओं पर इस समय हम काम कर रहे हैं उनमें से एक है दुनिया भर के विभिन्न स्थानों में मैंग्रोव का रोपण, और भी अन्य कई हैं। लेकिन हमें ध्यान रखना होगा कि रोटरी सिर्फ अपने बलबूते पर जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान नहीं कर पाएगी। हमें उस स्तर पर काम करने की जरूरत है जिस काम को करने में हम सक्षम हैं, वो ये कि हम आगे बढ़ते हुए दुनिया भर की सरकारों को प्रोत्साहित करें और जलवायु परिवर्तन के मुद्दे का समाधान सुनिश्चित करने की वकालत करें।

रोटरी क्लबों में शामिल होने के लिए हम अधिक रोटरेक्टर्स को कैसे प्रेरित कर सकते हैं?

डेल कर्न्स, रोटरी क्लब ऑफ नॉर्थ ईस्ट, मैरीलैंड

हमें उन्हें रोटरी क्लबों में रोटरेक्टर्स के रूप में शामिल करने की जरूरत है और क्लब की प्रगति को दिशा देने में उनकी सहायता लेनी चाहिए। हम मेंटरिंग की बात करते हैं। लेकिन इसके साथ रिवर्स मेंटरिंग भी होती है। रोटरेक्टर्स से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। रोटरेक्टर्स को रोटरी में एकीकृत करने में दुनिया के सबसे सफल स्थानों में से एक हांगकांग में है। वे रोटरेक्ट से रोटरी में सहजता से आते हैं। नतीजतन, शायद ही विभाजन होता हो। उनके पास रोटरेक्ट और रोटरी में सामंजस्य बिठाने का शानदार तरीका है। इससे दोनों पक्षों को बहुत फायदा होता है। लोग कहते हैं कि रोटरेक्ट रोटरी का भविष्य है, लेकिन मैं मानता हूँ कि वास्तव में वे वर्तमान है।

आप पत्रकारों को इकट्ठा नहीं कर सकते हैं और उन्हें अपने प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं दे सकते। यहां रोटरी पत्रिका के संपादक जानना चाहते हैं:

हमें अपने अध्यक्षीय थीम के बारे में बताएं।

इसकी थीम है *क्रिएट होप इन द वर्ल्ड।* मैं पूर्णतः आस्तिक हूँ कि हर चीज की शुरुआत आशा से ही होती है। जब मैं थाईलैंड में एक गाँव का उद्घाटन कर रहा था जिसका निर्माण ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल ने 2004 हिंद महासागर सुनामी के बाद किया था, वहां मेरी मुलाक़ात एक महिला से हुई। वह लगभग 70 या 80 वर्ष की थी, और बाद में पता चला कि उसकी उम्र सिर्फ 50 थी। सुनामी में वह अपना सब कुछ खो चुकी थी। उसका घर नष्ट हो गया था। और जब मैंने उसके घर का मुआयना किया, वहाँ और कुछ नज़र नहीं आया। यह नया घर था, लेकिन वह सब कुछ खो चुकी थी। लेकिन जोर देकर, उसने मुझे एक सीप दिया जिसे उसने 30 से अधिक वर्षों तक सहेज कर रखा था, बोली, "मैंने आशा के साथ अपना सब कुछ खो दिया था। लेकिन रोटरी ने मुझे ज़िन्दगी जारी रखने की उम्मीद दी है।" और यह सीप आज तक मेरे पास हैं। अगर लोगों में उम्मीद नहीं होगी, तो वे कभी भी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। कुछ करने का समय आ गया है, यह कॉल टू एक्शन है: दुनिया में आशा का संचार करें।

आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

निरंतरता के संदर्भ में, हम लड़कियों और महिलाओं को सशक्त करना चाहते हैं। साथ ही, हम लोगों को वर्चुअल (आभासी) वार्तालाप करने के लिए प्रोत्साहित करने जा रहे हैं। वह जमीनी स्तर पर शांति निर्माण की बात करेगा। यह युद्धों को रोकने के बारे में नहीं है; यह युद्धों की शुरुआत को रोकने के सम्बन्ध में है। इलाज से बेहतर रोकथाम होती है। हमारे फोकस के लगभग हर क्षेत्र में ऐसा करने की क्षमता है, सम्भावना है।

तीसरी बात मानसिक स्वास्थ्य की पहल है। महामारी से निकलने के बाद, ऐसे बहुत से लोग हैं जो मानसिक स्वास्थ्य की व्याधियों से जूझ रहे हैं। मुझे लगता है कि यह अगली महामारी है। मुझे उन दोस्तों के साथ का अनुभव है जिनका मानसिक स्वास्थ्य खराब है। मुझे लगता है कि विभिन्न अवसरों पर लगभग हम सभी खराब मानसिक स्वास्थ्य का सामना कर चुके हैं। रोटरी को इतना बड़ा और इतना बहादुर होना चाहिए कि वह उस स्थान में प्रवेश कर सके और इस बारे में बात करना शुरू करे कि हम कहां और कैसे बदलाव ला सकते हैं। यहां, बिलकुल बुनियादी स्तर पर, सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बातचीत शुरू करनी है और लोगों को किसी पेशेवर मदद तक पहुंचने में सहायता करनी है, और फिर उनका सहयोग करना है।

मैंने अपने भाई को आत्महत्या की वजह से खो दिया। यह आज भी बहुत दर्दनाक है। मैं आप लोगों की सहानुभूति पाने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को यह एहसास दिलाने के लिए साझा कर रहा हूं कि हर व्यक्ति ऐसी चीजों से प्रभावित होता है। हम इसे यूँ ही नज़र अंदाज़ नहीं कर सकते। 1.4 मिलियन लोगों के वैश्विक नेटवर्क के रूप में, हमारे पास इसे कम करने और इस अभिशाप को मिटाने का अवसर है।

आप ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के रूप में भी काम कर चुके है। वहां आपने क्या सीखा जिस अनुभव का प्रयोग इस भूमिका में करेंगे?

मैंने सीखा कि हर दो या तीन दिनों में अलग-अलग बिस्तरों पर कैसे सोया जाता है - मैंने उस वर्ष के दौरान ब्रिटेन और आयरलैंड के आसपास बहुत यात्रा की थी। मैंने जाना कि सभी रोटरी क्लब अलग होते हैं, और हर व्यक्ति की रूचि भी अलग होती है। प्रत्येक व्यक्ति मुझ जैसा भावुक नहीं होता- मुझे अक्सर लगता था कि मैं थोड़ा उत्साही हूं। लेकिन सबके पास कुछ न कुछ विशेषता ज़रूर है। और इसका रहस्य यह है कि लोगों में उनकी रूचि को जगाया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि उन्हें उन चीजों को करने की अनुमति हो जिन्हें वे करना चाहते हैं। वह सदस्यों को जोड़ने के सम्बन्ध में भी है। हम सदस्यों को क्लब के भीतर ला कर नहीं बताते कि उन्हें क्या करना है। हम सदस्यों को भीतर लाते हैं और उनसे पूछते हैं कि रोटरी उनके लिए क्या कर सकती है।

आप एक दंत चिकित्सक हैं। यदि आप दांत होते, तो आप कौन सा दांत होते?

मैं शायद एक इंसीज़र (कृंतक -सामने वाले ऊपर नीचे के आठ दांत) होता क्योंकि वही वो दांत हैं जो पहले काम शुरू करते हैं। आप सीधे से पीछे कुछ भी नहीं ले जा सकते। आप अपने कृंतक दांत की सहायता से ही खाद्य पदार्थ पीछे ले जाते हैं और मुझे लगता है कि मैं आगे रह कर नेतृत्व करता हूं। उन्होंने कहा, लेकिन हाँ, एक इंसीज़र किसी भी अन्य दांत से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है; खाने की प्रक्रिया में सभी की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

आपकी नज़र में युवाओं के कौन से कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं?

लिंडी बीटी, रोटरी क्लब ऑफ पेन वैली, कैलिफोर्निया

मैं RYLA रोटरी यूथ लीडरशिप अवार्ड्स (RYLA) का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। हमने दुनिया के इस हिस्से में कई सफल रायला आयोजित किये हैं। यदि आप एक हाई स्कूल के छात्र को रायला का अनुभव कराते हैं, तो उसके अंदर जो परिवर्तन हो सकता है वह अद्भुत होगा। कभी-कभी रायला अनुभव में जाने वाले शांत, अंतर्मुखी युवा छात्रों ने इस कार्यक्रम के अंत में पाया कि वो अपने आप को जान गए और वो और खिल रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम समर्थ लोगों को ठधउ- अनुभव लेने भेजें - हाईफ्लायर या अत्यंत महत्वाकांक्षी को नहीं, क्योंकि वो तो वैसे भी ऊंची उड़ान भरने वाले हैं। पर यह वो लोग हैं जिनका विकास करने की क्षमता हम रखते हैं।

मैं रोटरी यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम में भी बहुत विश्वास करता हूं। मुझे खुशी है कि अब हम यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम में फिर से जोश भरने की स्थिति में हैं। पिछले कुछ हफ्तों में, इस दुनिया में मैंने युवाओं को हवाई जहाजों में उड़ते हुए देखा है, जो जीवन परिवर्तित करने वाला अनुभव है। अब घूम फिर कर यह वापस उसी मुद्दे पर आता है, एक अधिक शांतिप्रिय दुनिया का निर्माण। क्योंकि अगर हम युवाओं को ला सकें और एक साल के लिए उन्हें अन्य युवाओं से मेल जोल और विभिन्न संस्कृतियों का अनुभव दे सकें, तो हमें मालूम चलेगा कि मूल रूप से हम सब एक

जैसे ही हैं। संघर्ष की कोई आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि हम सभी एक ही दिशा में जाने का प्रयास कर रहे हैं, और हम सब एक ही चीज की इच्छा रखते हैं।

आये दिन रोटरी नई - नई पार्टनरशिप करती रहती है और नई परियोजनाएं शुरू करती है। जब एक अध्यक्ष दूसरे से पदभार ग्रहण करता है, हम इनकी दीर्घकालिक निरंतरता किस प्रकार सुनिश्चित कर सकते हैं?

मारिसा डी लूना, रोटरी क्लब ऑफ स्वीटवाटर सैन डिएगो, कैलिफोर्निया

जब जब मैं निरंतरता के सम्बन्ध में बात करता हूं, तो मेरा मतलब साल-दर-साल उन्हीं पुरानी चीजों की पुनरावृति नहीं होता। निरंतरता से मेरा तात्पर्य है लगातार सुधार करते हुए निरंतर आगे बढ़ने की एक प्रक्रिया। ऐसा करने के लिए हमें अलग-अलग परियोजनाओं और अलग-अलग प्रयासों पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे सामने किसी भी समय, अलग-अलग ज़रूरतों की अलग-अलग प्रकार की माँगें आ रही हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि दोनों परस्पर रूप से विशिष्ट हैं या अलग हैं। मुझे लगता है कि हम नई परियोजनाओं का हिस्सा बन सकते हैं और नई चीजें निष्पादित करने के सम्बन्ध में विचार कर सकते हैं। लेकिन वर्तमान में हम अभी निरंतरता जारी रख सकते हैं, ध्यान रखना होगा कि हम इसे लंबी अवधि के लिए आगे ले जा रहे हैं और किसी एक अध्यक्ष के कार्यकाल में चीजों को समाप्त करने के चक्कर में शीघ्रता नहीं दिखाएं।

एक संगठन के रूप में आप रोटरी में ऐसी कौन सी सबसे बड़ी संभावना देखते हैं जिस पर पूरा ध्यान नहीं दिया गया है?

क्लाउडिया एरिज़मेन्डी, रोटरी क्लब ऑफ़ हर्मोसिलो मिलेनियो, मेक्सिको

हमने महामारी के दौरान स्वैच्छिक सेवा में भारी वृद्धि देखी है। मुझे लगता है कि हमारे पास उन लोगों को अपने साथ जोड़ने और रोटरी के माध्यम से उन्हें स्वेच्छा से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने का एक शानदार अवसर है। मेरा मानना है कि दूसरों की परवाह करना, ध्यान रखना हर किसी का स्वभाव होता है। अगर हम इसे लोगों के अंदर से बाहर निकाल सकें, और अगर हम देखभाल की उस सेवा भावना का निर्माण कर सकें, जागृत कर सकें, जो हमने महामारी के दौरान देखी, तो क्या ही अद्भुत विरासत होगी। दुनिया भर में उजतखऊ के परिणामस्वरूप लगभग 6.5 मिलियन लोग मारे गए थे, इसलिए उन लोगों के प्रयास व्यर्थ नहीं जाने चाहियें । यदि हम उन लोगों से जुड़ सकें जिन्होंने उस अवधि के दौरान स्वेच्छा से अपनी सेवा करने की भावना को फिर से जागृत किया था, तो लगेगा कि हमने कुछ हासिल किया है।

चित्रः केविन सर्ना
रोटरी से पुनर्प्रकाशित

Rotary PEOPLE OF ACTION

बरेली में एक स्वास्थ्य एटीएम

रोटरी क्लब बरेली हाइट्स, रो ई मंडल 3110 ने बरेली के पास बिथरीचेनपुर में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 'हेल्थ एटीएम' स्थापित किया। इसका उद्घाटन जिलाधिकारी शिवाकांत द्विवेदी ने पीडीजी रवि प्रकाश अग्रवाल, दिनेश गोयल और विनय कृष्णन की उपस्थिति में किया।

हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स द्वारा निर्मित डिजिटल मशीन रक्तचाप, ग्लूकोज, शरीर का तापमान, पल्स, एसपीओ 2, ऑक्सीजन संतृप्ति, बॉडी मास इंडेक्स, मांसपेशियों/हड्डी द्रव्यमान और आंखों की दृष्टि जैसे महत्वपूर्ण परीक्षणों सहित 50 से अधिक मापदंडों को मापकर किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य का चौतरफा सारांश देती है। यह मलेरिया, डेंगू, कोविड और टाइफाइड का भी पता लगा सकता है।

क्लब के अध्यक्ष मोहित टंडन का कहना है कि यह उपकरण पहले डॉक्टर के पास जाने की परेशानी से बचाता है, जब लोग वास्तविकता की जांच कर सकते हैं और बिना किसी समय बरबाद के अपने स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में जागरूक हो सकते हैं। स्वास्थ्य रिकॉर्ड क्लाउड पर संग्रहीत किए जाते हैं और डॉक्टरों द्वारा आसानी से एक्सेस किए जा सकते हैं।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

नागपुर के रोटेरियन आदिवासी कल्याण के लिए काम करते है

रशीदा भगत

रितिका सिंघवी, रोटरी क्लब नागपुर विज़न की अध्यक्ष शिवानी सुले और स्वाति बेलखड़े मेलघाट गांव में महिलाओं को साड़ियां बांटती हुई।

जब रोटरी क्लब नागपुर विजन, रो ई मंडल 3030, को सुझाव मिला कि क्लब एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन के साथ मिलकर एक सेवा परियोजना करने हेतु काम करे जिसमें मुख्य रूप से नागपुर से लगभग 300 किलोमीटर दूर सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के पहाड़ी वन क्षेत्र मेलघाट के कुछ गांवों में कुछ सर्जरियाँ करना शामिल है, तब क्लब की अध्यक्ष डॉ शिवानी सुले, जो खुद एक नेत्र रोग विशेषज्ञ है, ने इस मौके का फायदा उठाया।

इस क्षेत्र के जनजातीय लोग काफी पिछड़े है और महाराष्ट्र के इस क्षेत्र में कुपोषण बहुत अधिक है, और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर भी काफी अधिक है। क्लब के एक सदस्य डॉ. राजेश सिंघवी जो खुद एक नेत्र सर्जन है, एक डॉक्टर दंपति - डॉ कविता और डॉ आशीष सातव के साथ जुड़े है, जिन्होंने एक गैर सरकारी संगठन, MAHAN ट्रस्ट, का गठन किया है और इस क्षेत्र में आदिवासियों के लिए काम कर रहे थे। डॉ सुले याद करते हुए बताते है कि उन्होंने क्लब अध्यक्ष को सुझाव दिया कि क्लब को इस ट्रस्ट के साथ एक संयुक्त कार्यक्रम करना चाहिए ताकि उन आदिवासी रोगियों की कुछ सर्जरियाँ की जा सके जिनके पास स्वास्थ्य देखभाल तक बहुत कम पहुंच थी। जब मैं जुलाई 2022 में अध्यक्ष बना, ''तब यह विचार मेरे पास लाया गया था और हमने इस क्षेत्र में ऑपरेशन करने के लिए एक विशाल स्वास्थ्य शिविर की योजना तैयार की जहाँ 6 घंटे की ड्राइव के बाद पहुंचा जा सकता है।''

योजना सही तरीके से शुरू हुई। क्लब के सदस्यों को पता चला कि इन दोनों डॉक्टरों ने मेलघाट में चार गांवों को आभासी रूप से गोद लिया था और कुछ साल पहले एक गांव में किसी तरह की चिकित्सा सुविधा स्थापित की थी जो अब दो ऑपरेशन थिएटर और पांच टेबल के साथ एक स्वास्थ्य सुविधा में विकसित हो गई है। ''लेकिन यहां केवल मामूली प्रक्रियाएं की जा रही थी जैसे मामूली चोट, घाव में टांका लगाना और जले का उपचार जो यहां काफी आम है। यह न्यास नशामुक्ति पर भी काम करता है क्योंकि यहाँ के अनेक आदिवासी तंबाकू और महुआ के आदी है।''

समय-समय पर डॉ राजेश सिंघवी और उनके कॉलेज के साथी यहाँ कुछ ऑपरेशन करने में मदद करते है लेकिन उन्होंने सुझाव दिया कि रोटरी ग्रामीणों के लिए एक विशाल सर्जिकल शिविर आयोजित करें। डॉ सुले का कहना है कि उनके क्लब में 196 सदस्य है और उनमें से कई इस परियोजना से इतने उत्साहित थे कि वे इस शिविर में आना चाहते थे लेकिन आवास सीमित होने के कारण उनमें से सभी को नहीं ले जाया जा सका। 27 जनवरी को इस क्लब के रोटेरियन जिनमें अनेक डॉक्टर शामिल थे और अन्य लोग लता मंगेशकर अस्पताल से इस शिविर के लिए पहुंचे। इस परियोजना की लागत लगभग ₹2 लाख थी जिसमें से चिकित्सा और शल्य चिकित्सा सामग्री के लिए आवश्यक ₹1 लाख, एक ही सदस्य द्वारा दान किए गए थे और बाकी पैसा क्लब के अन्य सदस्यों द्वारा दिया गया था।

27 जनवरी को यह टीम चिकित्सा शिविर स्थल पर पहुंची जहाँ एक अस्थायी थिएटर स्थापित किया गया। ''चूंकि उस स्थान पर ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं थी इसलिए हमने वहाँ से लगभग 45 मिनट की दूरी पर दो गेस्ट हाउस में ठहरने की व्यवस्था की और हमारे चिकित्सा निदेशक, एक स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. रूपेश्री भोयार, ने अपने कुछ स्त्री रोग विशेषज्ञ मित्रों को टीम में शामिल होने के लिए राजी किया।''

जल्द ही चिकित्सा टीम द्वारा एक ऑपरेशन थिएटर स्थापित किया गया और क्लब के 4 डॉक्टरों सहित 18 डॉक्टर शिविर में शामिल हुए।

17 डॉक्टरों की एक टीम ने 52 सर्जरियाँ की जिनमें से 32 बड़ी सर्जरियाँ थी; ''एक दिन में शिविर में 6 योनि हिस्टेरेक्टॉमी करना एक बड़ी उपलब्धि थी! MAHAN के डॉ आशीष और कविता सातव ने अस्पताल में अपनी टीम के साथ रसद और बुनियादी ढांचा प्रदान करने

शिविर के दौरान परिसर में व्याकुल रोगियों और रिश्तेदारों की एक लंबी कतार देखी गई लेकिन उन सभी के दिलों में आशा और विश्वास था और मुझे यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि पूरी टीम ने बिना रुके अथक परिश्रम के साथ सफल सर्जरियाँ करके उनके विश्वास को सही ठहराया।

डॉ शिवानी सुले
रोटरी क्लब नागपुर विज़न की अध्यक्ष

के साथ मदद की और विभिन्न सर्जरियों के लिए आसपास के गांवों के रोगियों की पहचान की।'' सुले ने आगे कहा, ''शिविर के दौरान परिसर में व्याकुल रोगियों और रिश्तेदारों की एक लंबी कतार देखी गई लेकिन उन सभी के दिलों में आशा और विश्वास था और मुझे यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि पूरी टीम ने बिना रुके अथक परिश्रम के साथ सफल सर्जरियाँ करके उनके विश्वास को सही ठहराया।''

लेकिन वह और उनके क्लब के सदस्य गांव के बच्चों के लिए आयोजित की गई गैर-चिकित्सा गतिविधियों को लेकर अधिक प्रसन्न थे जो उनके लिए सोने पर सुहागा थी। ''विभिन्न खेल गतिविधियों, हमारी सदस्य स्नेहा पारिख द्वारा प्रायोजित साड़ी वितरण, विजेता टीमों को पुरस्कार और सभी बच्चों के लिए गुडी बैग ने इस परियोजना को पूर्ण किया।''

बच्चों ने कबड्डी, खो-खो और वालीबॉल जैसे खेलों में अपनी प्रतिभा दिखाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस हिस्से को सामुदायिक सेवा निर्देशक संदीप दुरागकर द्वारा समन्वित किया गया। सुले ने मेलघाट शिविर की सफलता के लिए अपनी क्लब सचिव रितिका सिंघवी को उनकी कड़ी मेहनत और सदस्यों अरौनी वर्मा, फर्नबर्ग भरूचा, स्वाति बेलखड़े, मधुमती धावड़,

गांव में कबड्डी खेलते बच्चे।

कबड्डी मैच के बाद खेल किट का वितरण किया गया।

MAHAN ट्रस्ट और अस्पताल के आयोजक, सर्जन, एनेस्थिसियोलॉजिस्ट और कर्मचारी।

सर्जिकल कैंप के दौरान ग्रामीणों को संबोधित करतीं डॉ कविता सातव।

चिकित्सा शिविर में सर्जरी।

हम निश्चित रूप से इन आदिवासी गांवों के साथ अपना जुड़ाव जारी रखना चाहते है और हर बार अपनी प्रत्येक परियोजनाओं को बड़ा बनाने का प्रयास करेंगे।

चिराग सिंघवी और जयश्री छाबरानी की उदारता और प्रयासों के लिए उनको धन्यवाद दिया।

मैंने सुले से पूछा कि आगे क्या, ''ओह, हम निश्चित रूप से इन आदिवासी गांवों के साथ अपना जुड़ाव जारी रखना चाहते है और हर बार अपनी प्रत्येक परियोजनाओं को बड़ा बनाने का प्रयास करेंगे,'' वह कहती है। निश्चित रूप से उनकी सूची में और भी सर्जिकल शिविर शामिल है और मार्च या अप्रैल 2023 को क्लब ने नेत्र सर्जरी पर केंद्रित एक शिविर आयोजित करने की योजना बनाई है जहाँ मोतियाबिंद के कुछ 80 ऑपरेशन किए जाएंगे।

बच्चों के लिए निश्चित रूप से अधिक उपहार स्टोर में है। उदाहरण के लिए रोटेरियनों ने देखा कि खेल खेलने वाले सभी बच्चों के पास टी-शर्ट या जूते नहीं थे और वे खेल में अपनी बारी आने पर इन्हें एक-दूसरे से उधार ले रहे थे। इसलिए अगली बार इन वस्तुओं को बच्चों को उपहार के रूप में दिया जाएगा। इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिशियन द्वारा भेजी गई एनर्जी ड्रिंक्स इन आदिवासी बच्चों द्वारा पसंद की गई थी, इसलिए इस प्रकार की अधिक योजना करने की तैयारी है।

एक सबक यह मिला कि बच्चों को वो देना चाहिए जो वे चाहते है और जिनसे वे परिचित है। उदाहरण के लिए सुले ने कहा, ''हम एक पूरी क्रिकेट किट, एक वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल आदि के साथ गए थे लेकिन हमें अब एहसास हुआ कि वे कबड्डी और वॉलीबॉल को लेकर उत्सुक है इसलिए अगली बार हम इन खेलों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

वरकारी बच्चों के लिए शिक्षा

जयश्री

13वीं शताब्दी से वरकारी भक्ति आंदोलन महाराष्ट्र में हिंदू संस्कृति का हिस्सा रहा है। इसमें पंढरपुर के प्राचीन मंदिर में कृष्ण से पहचाने जाने वाले विठोबा की पूजा होती है। हिन्दू महीने आषाढ़ (जून-जुलाई) की एकादशी के दिन समाप्त होने वाली मंदिर की तीर्थयात्रा (जिसे *वरी* कहा जाता है) वरकारियों का सबसे प्रमुख धार्मिक अवसर होता है। महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक के कई भक्त एकादशी के दिन पंढरपुर विठोबा मंदिर पहुंचने के लिए आलंदी (संत ज्ञानेश्वर से जुड़े) और देहू (संत तुकाराम से जुड़े) से वरकारियों द्वारा निकाले गए जुलूस में शामिल होते है।

डोरस्टेप स्कूल की संस्थापक रजनी परांजपे (बाएं) एक बच्चे से बातचीत करती हुईं। परोपकारी नितिन करिया भी चित्र में शामिल हैं।

इस धार्मिक झुकाव वाले समुदाय के बच्चों को भी कम उम्र से परंपरा का पालन करने के लिए तैयार किया जाता है। आवासीय 'संस्थाओं' में भजन, संगीत और संगीत वाद्ययंत्र सीखने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। लेकिन वे औपचारिक शिक्षा के लिए स्थानीय जिला परिषद स्कूलों में जाते हैं। अपने सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए, पुणे स्थित एक गैर सरकारी संगठन डोरस्टेप स्कूल, स्कूल परिसर में कार्यात्मक पढ़ाई, लिखाई और अंकगणित में स्कूल के बाद कक्षाएं प्रदान कर रहा है।

दिसंबर में रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, रो ई मंडल 3131, ने आलंदी में 25 शिक्षकों के प्रशिक्षण का समर्थन करने के लिए गैर सरकारी संगठन के साथ करार किया। बदले में, वे वरकारी समुदाय के 150 छात्रों को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करेंगे। क्लब के सदस्य संदेश सावंत कहते है, ''हमारे क्लब के लंबे समय से दानकर्ता और शुभचिंतक नितिन करिया ने इस परियोजना के लिए हमारे ट्रस्ट को ₹6 लाख का दान दिया है।''

कार्यात्मक साक्षरता कक्षाओं के अलावा, शिक्षकों को छात्रों के लिए बुनियादी स्वच्छता, पोषण, स्वच्छता और पारस्परिक कौशल पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उन्होंने कहा, ''बच्चों को छह महीने में 120 सत्र लेने होंगे। फिर वे मराठी पढ़ने, लिखने और

बुनियादी संख्यात्मक कार्यों जैसे जोड़, घटाव, विभाजन और गुणन में सुप्रवीण होंगे,'' वे कहते है। प्रत्येक सत्र 90 मिनट का होगा, ''कक्षाएं नियमित नहीं हो सकती हैं क्योंकि बच्चों को परंपरा के हिस्से के रूप में त्योहारों और अन्य अनुष्ठानों में भी भाग लेना होता है। उन्हें अपने दैनिक अनुष्ठानों के साथ अकादमिक शिक्षा को संतुलित करना पड़ता है और उनका दिन सुबह 4 बजे शुरू होता है,'' सावंत कहते है।

कोविड महामारी और उसके बाद की घटनाओं ने बच्चों की सीखने की क्षमताओं को प्रभावित किया है। उनमें से कई पिछड़ रहे है और अकादमिक शिक्षा में अरुचि दिखा रहे है, वह बताते है। ''हालांकि यह देखना सुखद है कि वे इन सत्रों के लिए तत्पर दिखाई देते है क्योंकि इनमें प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है। क्लब के सदस्य समय-समय पर सत्रों का दौरा करते है और बच्चों को मजेदार गतिविधियों में संलग्न करते है।''

आलंदी में वर्तमान में 9-14 वर्ष की आयु के पचास छात्र इन कक्षाओं में पढ़ रहे है। उन्हें 14 विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा संभाले जाने वाले समूहों में विभाजित किया गया है। सीखने के प्रभाव को बढ़ाने के लिए फ्लैश कार्ड और अन्य शिक्षण सहायको का उपयोग किया जाता है।

क्लब की योजना अंतरराष्ट्रीय भागीदार, रोटरी क्लब डौई-सूद, फ्रांस, के साथ वैश्विक अनुदान की मदद से परियोजना को जारी रखने की है। सावंत कहते है, ''हमने पहले उनके साथ कुछ हैप्पी स्कूल परियोजनाओं को निष्पादित किया है।''

क्लब के अध्यक्ष केनेडी सैमुअल, बृज सेठी और क्लब की साक्षरता समिति की अध्यक्ष मोना

हिन्दी में पढ़ना-लिखना सीख रहे बच्चे।

सावंत इस परियोजना के लिए गहराई से प्रतिबद्ध है। सैमुअल कहते है, सत्र बहुत फायदेमंद होंगे क्योंकि यह बच्चों को समग्र शिक्षण प्रदान करते है और विशेष रूप से उनके प्रारंभिक वर्षों के दौरान अकादमिक शिक्षा में उनकी रुचि को बनाए रखते है।■

नासिक के इंटरेकटरों ने एक मंदिर परिसर की सफाई की

मंदिर परिसर में कूड़ा बीनते इंट्रक्टर्स।

रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030 द्वारा प्रायोजित इंटरेक्ट क्लब ऑफ विज़डम हाई इंटरनेशनल स्कूल और जूनियर कॉलेज के 15 से अधिक सदस्यों ने शहर के सोमेश्वर मंदिर में आयोजित सफाई अभियान के दौरान 25 बोरा कचरा एकत्रित किया। इसके बाद नासिक नगर निगम के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विभाग ने इन बोरों को उठाया।

मूल क्लब के सदस्य विनायक देवधर ने कहा कि मंदिर में प्रतिदिन बहुत लोग आते है और परिसर में हर जगह कचरा बिखरा हुआ देखना दयनीय है, हालांकि प्रमुख स्थानों पर कूड़ेदान रखे गए है।

इंटरेकटरों ने बाद में भक्तों के साथ बातचीत की और धीरे से उन्हें कूड़ेदान में कचरा डालने के लिए कहा। ■

रोटरी को जनता से जुड़ना चाहिए

वी मुत्तुकुमारन

क्या आपने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को रोटरी से जोड़ा है, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या आप जिलों में अपने क्लब के सदस्यों और अन्य रोटेरियनों से जुड़ते हैं? रो ई निदेशक और रो ई बोर्ड की कार्यकारी समिति के अध्यक्ष एलिज़ाबेथ यूसोविक्ज़ ने रो ई मंडल 3232 के डिस्कॉन सर्वम को संबोधित करते हुए पूछा।

रोटरी का भविष्य डीईआई (विविधता, इक्विटी और समावेशिता), स्वयं से ऊपर सेवा, फैलोशिप और अखंडता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा, ''हमें ब्रांडिंग और सार्वजनिक छवि बनाने के उद्देश्य के रूप में अपने और जनता के साथ गहरे संबंध बनाने की आवश्यकता है।''

एलिज़ाबेथ ने कहा कि सम्मेलन में सरकार, गैर सरकारी संगठनों, कॉरपोरेट्स और रोटरी क्लबों के बीच साझेदारी की सुविधा के लिए 130 स्टालों के साथ एक रोटरी प्रोजेक्ट फेयर शामिल था। उन्होंने कहा, मैं परियोजना मेले के उद्घाटन में अपने अनुभव को उत्तरी अमेरिका में ले जाऊंगी और अपने देश के क्लबों में स्थिरता और कल्याण का संदेश फैलाऊंगी।

एलिज़ाबेथ ने कहा कि यह उनकी पहली भारत यात्रा है और वे पहली बार साड़ी पहन रही हैं, जो भारतीय स्वागत और आतिथ्य का प्रतीक है.'' उन्होंने रो ई मंडल 3232 के 174 क्लबों के 7,000 से अधिक रोटेरियन को मजबूत और जीवंत होने तथा एजी और क्लब अध्यक्ष के रूप में कई महिलाओं को रखने के लिए बधाई दी.

सदस्यता वृद्धि पर अपने भाषण में, रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने कहा, हम 46,000 से अधिक क्लबों में 200,000 रोटरेक्टर्स सहित 1.4 मिलियन एक्शन वाले लोग हैं, जो दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रोटरेक्ट को रो ई के सदस्य के रूप में पदोन्नत किया गया था। किसी को इसके अनूठे अनुभव की और जो यह युवा नेताओं के जीवन में मूल्य जोड़ता है, उसकी सराहना करनी चाहिए।

ऊपर: डीजी नंदकुमार ने RID एलिज़ाबेथ यूसोविक्ज़ को (बाएं से), पीडीजी आई एस ए के नज़र और जी चंद्रमोहन, सुमेधा, डिस्कॉन चेयर एम अम्बलवानन, RIDE रॉयचौधरी और पीडीजी एस मुत्तुपळनियप्पन की उपस्थिति में सम्मानित किया।

डीजी एन नंदकुमार ने आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक रवि शंकर को (बाएं से) सुमेधा, RIDs एलिज़ाबेथ यूसोविक्ज़ और ए एस वेंकटेश, और RIDE अनिरुद्धा रॉयचौधरी की उपस्थिति में स्मृति चिन्ह भेंट किया।

रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स को उद्धृत करते हुए,, उन्होंने कहा कि ''हमारे सदस्यों का आराम और उनकी देखभाल सदस्य संतुष्टि का सबसे बड़ा चालक है और सदस्यों को अपने क्लबों में शामिल रखने के लिए हमारा सबसे शक्तिशाली उपकरण है। हम में से प्रत्येक क्लब के अनुभवों को बनाने में मदद करने के लिए बहुत कुछ कर सकता है जो स्वागत योग्य, समावेशी और सुखद हैं।'' कार्रवाई के पांच प्राथमिकता वाले क्षेत्र ''सदस्यता अनुभव, डीईआई सिद्धांत, विस्तार, प्रतिभागियों की भागीदारी और नए प्रारूप और कारण-आधारित क्लबों को चार्टर करके नए अनुभवों की पेशकश करना जो सभी के अनुरूप लचीले हैं।''

अगला बड़ा कॉर्पोरेट प्रोजेक्ट

बैठक को संबोधित करते हुए, RIDE अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने कहा, ''पिछले तीन दशकों में हमने नई चुनौतियों और प्राथमिकताओं के एक सेट की पहचान की है, जिसके आधार पर रो ई नेतृत्व एक साहसिक दृष्टि वक्तव्य के साथ सामने आया है, ''जिसमें हम एक ऐसी दुनिया देखते हैं जहां लोग एकजुट होते हैं, जहाँ स्थायी परिवर्तन बनाने के लिए एक रणनीतिक कार्य योजना के साथ घटती सदस्यता को गिरफ्तार करने और क्लबों को बदलते समय के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए कार्रवाई करते हैं।''

पोलियो उन्मूलन के लिए रो ई की खोज अच्छी तरह से प्रलेखित थी, ''हमें अगली बड़ी कॉर्पोरेट परियोजना की पहचान करनी होगी जो पश्चिमी देशों में नए सदस्यों को आकर्षित करेगी जो संख्या में भारी गिरावट का सामना कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने 1994 में पोलियो को खत्म कर दिया है। उन्हें अब प्रासंगिक बने रहने के लिए एक बड़े वैश्विक कार्यक्रम की आवश्यकता है।'' इसके अलावा, सदस्यता बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, ''सदस्यता बनाए रखने के लिए, हम युवा, विविध सदस्यों को आकर्षित करने के लिए नए प्रारूप क्लबों, कॉर्पोरेट, कारण-आधारित और ई-क्लबों के साथ कोशिश कर रहे हैं।''

डीजी एन नंदकुमार ने कहा कि अन्य डिस्कॉन के विपरीत, सर्वम रोटरी प्रोजेक्ट फेयर के साथ एक सस्टेनेबिलिटी और वेलनेस एक्सपो भी आयोजित कर रहा है, जो सरकार और अन्य हितधारकों के साथ साझेदारी का मार्ग प्रशस्त करेगा। उन्होंने कहा, ''हम रोटरी और सेवा के क्षेत्रों में कई परियोजनाओं को करने के लिए एक बड़ा स्वयंसेवक आधार रखने वाले आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के साथ साझेदारी करेंगे।'' उन्होंने कहा, नेतृत्व एक सतत प्रक्रिया है और मंडल गवर्नर के रूप में मैं जिले के सभी रोटेरियन के साथ सक्रिय रूप से जुड़ूंगा। उन्होंने कहा कि 19 मार्च को संगीतकार ए आर रहमान का सूफी संगीत कार्यक्रम रो ई मंडल 3232 द्वारा धन जुटाने के लिए आयोजित किया जाएगा।

इससे पहले आर्ट ऑफ लिविंग के गुरु रविशंकर ने डिस्कॉन का उद्घाटन करने के बाद कहा, ''सेवा मानव स्वभाव की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। यदि दुनिया में केवल लोग किसी न किसी रूप में सेवा या अन्य उपयोगी गतिविधियों में लगे रहें, तो बहुत कम हिंसा और संघर्ष होगा। हमारी दुनिया में अवसाद और चिंता के बढ़ते मामलों की ओर इशारा करते हुए,'' उन्होंने कहा, मनुष्य के रूप में हमें दूसरों को अपनी जान लेने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। उन्होंने कहा, ''हमारे समाज में तनाव और चिंता है। लेकिन हमें हिंसा मुक्त दुनिया, रोग मुक्त शरीर और भ्रम मुक्त मन के लिए प्रयास करना होगा।''

हाल ही में, भारत सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देना शुरू कर दिया है। रविशंकर ने कहा कि अमेरिका में पहले से ही 108 विश्वविद्यालय मानसिक स्वास्थ्य पर पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं, जबकि अमेरिकी कांग्रेस अपने सरकारी कर्मचारियों और श्रमिकों को ध्यान पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए भुगतान करती है।

अवसाद और चिंता से निपटने में संयुक्त परियोजनाओं के लिए रो ई मंडल 3232 के साथ समझौता ज्ञापन पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा कि रोटरी क्लबों को नदी बहाली परियोजनाओं में हमारे स्वयंसेवकों के साथ शामिल होना चाहिए। उन्होंने एओएल स्वयंसेवकों के काम का हवाला दिया, जिन्होंने नागनधी नदी का कायाकल्प किया था जो तिरुवन्नामलाई से वेल्लोर होते हुए बहती है और कांचीपुरम में पलार नदी में विलीन हो जाती है। यह 20 साल पहले पूरी तरह से सूख गया था, ''लेकिन दो साल पहले, हमने लोगों के सहयोग से इसे पूरे साल बहती नदी बना दिया।''

रोटरी परियोजनाओं के लिए सीएसआर अनुदान पर पीडीजी आर गणपति द्वारा संचालित एक पैनल चर्चा में, औद्योगिक दिग्गजों ने गैर सरकारी संगठनों से व्यापार मंडलों के साथ जुड़ने का आग्रह किया। रोटरी और उद्योग को एक साथ काम करने का आह्वान करते हुए, पैनलिस्ट - कमल बाली, एमडी, वोल्वो इंडिया; पी प्रदीप कुमार, चेयरमैन, कर्नाटक बैंक; एम मुरली, एमडी श्रीराम प्रॉपर्टीज; हिंदुस्तान चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष वी नागप्पन ने कहा कि पिछले साल ही ₹25,000 करोड़ की अप्रयुक्त सीएसआर राशि थी और यह मुख्य रूप से उद्योग और गैर सरकारी संगठनों के बीच 'कनेक्ट बैंडविड्थ' की कमी के कारण था। इसलिए, निरंतर नेटवर्किंग की आवश्यकता है, उन्होंने कहा।

स्थिरता, कल्याण

अतिरिक्त मुख्य सचिव, पर्यावरण, सुप्रिया साहू ने कहा कि रोटरी क्लबों को तमिलनाडु के 38 राजस्व जिलों में जिला वन अधिकारियों (डीएफओ) के साथ मिलकर नर्सरी और देशी पौधे उगाने में मदद करनी चाहिए ताकि राज्य को अगले 10 वर्षों में

अपने ग्रीन टीएन मिशन को 23.7 प्रतिशत से बढ़ाकर राष्ट्रीय औसत 33 प्रतिशत करने में मदद मिल सके। पहले वर्ष में, हमने पहले ही राज्य भर में 2.8 करोड़ पेड़ लगाए हैं।

स्वास्थ्य, कल्याण और स्थिरता पर सर्वम एक्सपो को संबोधित करते हुए, उन्होंने याद किया कि तमिलनाडु पिछले साल सितंबर में 'तमिलनाडु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड' के समर्थन से ''एक मेगा स्थिरता एक्सपो आयोजित करने वाला पहला राज्य था। उस प्रदर्शनी में 200 से अधिक स्टॉल थे'' जो पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा देते थे। उन्होंने कहा, ''तमिलनाडु 2018 में 14 प्रकार के प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने वाला देश का पहला राज्य था, और इसके बाद कुछ वर्षों के बाद अन्य राज्यों ने भी इसका पालन किया।''

तमिलनाडु वेटलैंड और जलवायु परिवर्तन मिशनों के पास पांच वर्षों में लगभग 100 वेटलैंड्स को बहाल करने और अगले कुछ वर्षों में स्थापित नवीकरणीय, हरित ऊर्जा को 51 प्रतिशत से बढ़ाकर 60 प्रतिशत से अधिक करने का लक्ष्य है। ''हमारा राज्य सौर और पवन ऊर्जा की पीढ़ी में अग्रणी है। यदि वन हमारे फेफड़े हैं, तो आर्द्रभूमि हमारे गुर्दे हैं क्योंकि वे प्रदूषकों को फ़िल्टर करते हैं और कार्बन को ठीक करके पर्यावरण को बहाल करते हैं,'' साहू ने समझाया। चेन्नई में एक इको - पार्क बनाकर पल्लीकरनाई मार्श की बहाली के बाद, जिसमें वॉकर-ट्रैक है, बुजुर्गों और विकलांगों सहित लगभग 15,000 लोग हर महीने ताजा हवा के लिए इसमें आते हैं, उन्होंने कहा।

कोयंबटूर के ओदंतुरई गांव की सफलता की कहानी के बाद, जिसके तत्कालीन पंचायत अध्यक्ष आर षणमुगम ने घरों के लिए बिजली उत्पन्न करने के लिए एक सामुदायिक पवन चक्की की स्थापना की थी, तमिलनाडु सरकार ने उन्हें 'जलवायु स्मार्ट' बनाने के लिए 10 गांवों को अपनाया है। ''गांव अब अधिशेष बिजली को राज्य ग्रिड को बेचता है और सौर ऊर्जा उत्पन्न करने की भी योजना

दक्षिणावर्त ऊपर से: डीजी नंदकुमार ने, डॉ संजय कंदासामी की उपस्थिति में डॉ एम आर राजशेखर को विशिष्ट सेवा पुरस्कार प्रदान किया; डीजी नंदकुमार और पीडीजी एस कृष्णस्वामी की उपस्थिति में डीजीई रवि रमन ने RIDE रॉयचौधरी को सम्मानित किया; RID महेश कोटबागी को डीजी नंदकुमार और सुमेधा ने सम्मानित किया।

है। मॉडल गांवों में, हमारे पास पानी का इलाज और पुनर्नवीनीकरण होगा, कोई प्लास्टिक का उपयोग नहीं किया जाएगा, बच्चों को पर्यावरण के अनुकूल जीवन पर शिक्षित किया जाएगा, और केवल हरित ऊर्जा का उपयोग किया जाएगा,'' साहू ने कहा।

डिस्कॉन अध्यक्ष एम अंबालवनन ने कहा कि पहली बार एक रोटरी मेला जनता के लिए खुला है। ''सर्वम एक्सपो मेरा सपना सच होने जैसा है क्योंकि मैं इसे डिस्कॉन के साथ आयोजित करना चाहता था। लेकिन केवल आठ क्लब अपनी परियोजनाओं का प्रदर्शन कर रहे हैं। अगले साल से, हम कम से कम 100 क्लबों को अपने स्टालों को रखना चाहते हैं,'' उन्होंने कहा। महानिदेशक नंदकुमार ने लोगों की मानसिकता को बदलने के लिए स्थिरता के संदेश को फैलाने के लिए रोटेरियन से आग्रह किया।

अशोक लेलैंड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कृष्णन सदागोपन ने सौर, पवन और इथेनॉल मिश्रण जैसे स्वच्छ, हरे नवीकरणीय ऊर्जा में विविधता लाकर भारत के पावर ग्रिड को डीकार्बोनाइज करने की आवश्यकता पर जोर दिया। जैसा कि जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी गर्म हो जाती है, इसके हानिकारक प्रभाव समुदायों में महसूस किए जाएंगे। उन्होंने कहा, ''हमें जीवनयापन में आसानी के लिए ग्रीन हाइड्रोजन इंजन और जैव ईंधन जैसे कई नवाचारों की आवश्यकता है, गैर - जीवाश्म ऊर्जा तक पहुंच जिसे भारत सरकार ने समझा है क्योंकि यह कई पहल कर रहा है।'' सर्वम एक्सपो के अध्यक्ष जयशंकर उन्नीथन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया।''

डिसकॉन अवार्डस

भारत में पहले सफल लिवर प्रत्यारोपण और अन्य महत्वपूर्ण, उच्च जोखिम वाली सर्जरी के लिए विशिष्ट सेवा पुरस्कार प्राप्त करते हुए, प्रत्यारोपण सर्जन डॉ एम आर राजशेखर ने कहा, ''मैं रोटरी पुरस्कार प्राप्त करने के लिए वास्तव में सम्मानित महसूस कर रहा हूं, वास्तव में मैंने जो यकृत प्रत्यारोपण किया है, उसके लिए पहला सार्वजनिक मान्यता है।'' उन्होंने अपनी पत्नी डॉ वसुधा के योगदान और अपने बेटे के समर्थन के साथ-साथ ''मेरे शिक्षकों को याद किया, जिन्होंने मेरे साथ अपना ज्ञान साझा किया है।''

पुरस्कार के प्रशस्ति पत्र में कहा गया है कि उन्होंने 2,000 से अधिक किडनी और 650 से अधिक यकृत प्रत्यारोपण और 700 से अधिक लैप्रोस्कोपिक सर्जरी की हैं। उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय की तर्ज पर दिल्ली में भारत की पहली यकृत प्रत्यारोपण इकाई और एक आईसीयू स्थापित किया, जहां उन्हें प्रशिक्षित किया गया था।

20 महीने की उम्र में, बीमार बच्चे संजय कंडासामी को 1998 में दिल्ली के इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल में डॉ. राजशेखर द्वारा सफल यकृत प्रत्यारोपण के साथ पुनर्जन्म मिला। अब, 25 साल के अंतराल के बाद, एक डॉक्टर बनने वाले ट्रांसप्लांटी ने डॉ राजशेखर के साथ रोटरी पोडियम साझा किया क्योंकि दोनों को सम्मानित किया गया।

रोटरी के लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड्स पार्श्व गायिका के एस चित्रा और एपी मेडटेक ज़ोन के सीईओ जितेंद्र शर्मा को प्रदान किए गए। फिल्म निर्माता और अभिनेत्री सुहासिनी मणिरत्नम ने वैश्विक विकास उद्देश्यों को पूरा करने के लिए 50 से अधिक पेशेवरों के साथ स्थायी सामाजिक परिवर्तन की दिशा में काम करने के लिए फीडबैक फाउंडेशन के सीईओ अजय सिन्हा को महत्वपूर्ण उपलब्धि पुरस्कार प्रदान किया।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

ADVERTORIAL

District 3110

Pawan & Prachi Agarwal
District Governor & First Lady

Rotary Youth Leadership Award (RYLA)

CSR Projects

PROJECT 1 : Under the 9th CSR Project of the District, the corporate donor contributed Rs 47.77 Lacs towards the surgeries of 35 children suffering from Congenital Heart Disease (CHD). These surgeries will be performed on the needy children from economically weaker section of society from 26 cities of our District 3110 at Shri Sathya Sai Sanjeevani Hospital, Palwal (Haryana).

PROJECT 2 : Under the 10th CSR Project of the District, the M/S Kashi Vishwanath Textile Mills (P) Ltd. contributed Rs 20.52 Lacs towards the surgeries of 15 children suffering from Congenital Heart Disease (CHD). These surgeries will be performed on the needy children satisfying following criteria, at Shri Sathya Sai Sanjeevani Hospital, Palwal (Haryana) :

a) Children from a family of Armed Forces Personnel (including BSF, CISF and CRPF)
b) Children from Indian Border Areas Cities (India-Pakistan Border, India-China Border)
c) Children of Uttarakhand State.

TRF Symposium (Zone 6) at Kathmandu

Do follow us: @Rotary3110

Advt

District 3110 in ACTION

Inauguration of 4 CSR Projects

Inauguration of 4 CSR Projects worth Rs 1.57 Crores by RID A.S. Venkatesh at Kashipur

CATARACT OPERATION

WOOLLEN CLOTH DISTRIBUTION

BLANKETS DISTRIBUTION

FOOD DISTRIBUTION

BLOOD DONATION CAMP

BREAST CANCER AWARENESS PROGRAM

Rotary PEOPLE OF ACTION

ग्रामीण महिलाओं की प्रसव पूर्व देखभाल

किरण ज़ेहरा

महाराष्ट्र के सिंधलची वाडी गांव में रोटरी क्लब पनवेल एलीट, रो ई मंडल 3131 द्वारा आयोजित नियमित प्रसवपूर्व शिविरों में गर्भवती आदिवासी महिलाओं को प्रदान की गई आयरन और फोलिक एसिड (IFA) की गोलियां उनके द्वारा फेंक दी गई। ''यह वास्तव में एक झटका था। उनका मानना था कि ये गोलियां बच्चे के वजन को बढ़ाएंगी और वे सामान्य प्रसव नहीं कर पाएंगी। साथ ही उन्हें इस बात का भी डर था कि ऑपरेशन से पैदा हुआ बच्चा कमजोर होगा और उसमें कुछ दोष हो सकते है, डॉ स्वाति लिखिते कहती है।

क्लब को संयोग से यह जानकारी तब मिली जब उसने मुंबई के पास 13 गांवों में अनेक बाल चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए। शिविर में कम हीमोग्लोबिन वाले 12 वर्ष से कम आयु के 1,000 से अधिक बच्चों का डेटाबेस तैयार किया गया। क्लब अध्यक्ष जो एक बाल रोग विशेषज्ञ भी है, ने केवल यह पता लगाने के लिए आगे शोध किया कि ''हीमोग्लोबिन के खराब स्तर का मुख्य कारण कीड़े थे और एक कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली की वजह से इन बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।'' 1050 से अधिक बच्चों के लिए कृमि मुक्ति अभियान चलाया गया। क्लब ने तब प्रसवपूर्व शिविर आयोजित करने का फैसला किया: ''हमें पता चला कि 90 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं में खून की कमी थी। उन्हें IFA की गोलियां भी दी गई लेकिन दो महीने के कोर्स के बावजूद भी उनकी हालत में कोई सुधार नहीं आया। जब हमने जांच की तो पता चला कि उनमें से कोई भी गोलियां नहीं ले रहा था।

आशा कार्यकर्ता अपनी पूरी कोशिश करते हुए इन महिलाओं को निकटतम PHC में आने और अपनी नियमित जांच कराने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी। वे IFA के सेवन और इन गोलियों को नहीं लेने के प्रतिकूल परिणामों के बारे में भी जागरूकता पैदा करती है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं था, क्लब अध्यक्ष कहते है। ''बहुत कम महिलाएं सभी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए निर्धारित दवाएं लेना चाहती है। लेकिन उन्हें गांव की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा हतोत्साहित किया जाता है। हम एक अनुचित सोच से लड़ रहे थे और केवल जागरूकता पैदा करके ही हम परिवर्तन ला सकते थे।''

क्लब ने महिलाओं की IFA के लाभ समझने में मदद करने के लिए बातचीत आयोजित की। ''गर्भवती महिलाओं को प्रति दिन 27 मिलीग्राम

आयरन और फोलिक एसिड की गोलियों के लाभों को समझने के लिए गांवों की महिलाएं एक बातचीत सत्र में भाग लेती हुई।

बच्चे रोटरी क्लब पनवेल एलीट द्वारा दान की गई अपनी नई नोटबुक प्रदर्शित करते हुए।

आयरन की आवश्यकता होती है (गैर-गर्भवती वयस्क महिलाओं (19 से 50 वर्ष आयु) के लिए 18 मिलीग्राम की तुलना में)। हमने उन्हें केस स्टडी बताई और उन्हें समझाया कि उनकी मान्यता के विपरीत ये गोलियां जन्मजात विकृतियों की रोकथाम में मदद करती है। हमने उन्हें समझाया कि बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली में IFA क्या भूमिका निभाता है, ऑस्टियोपोरोसिस की रोकथाम करता है और श्रवण क्षमता को हानि पहुँचने से बचाता है।''

धीरे-धीरे महिलाओं ने गोलियां लेना शुरू कर दिया। बेहतर परिणामों ने हमें और अधिक करने हेतु प्रोत्साहित किया। ''हम एक RCC टीम तैयार कर रहे है और इससे हमें इन ग्रामीण समुदायों में महिलाओं द्वारा सामने की जाने वाली अनूठी चुनौतियों को समझने में मदद मिलेगी।'' क्लब गांवों में गर्भवती महिलाओं के लिए पोषण संबंधी जागरूकता, स्वस्थ भोजन कक्षाओं और व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ-साथ बच्चों के लिए नियमित मौखिक जांच शिविर, योग कक्षाएं और *गुड टच एंड बैड टच* सत्र आयोजित कर रहा है।

''प्रसवपूर्व देखभाल शिविर मेरे दिल के करीब है,'' स्वाति कहती है और आगे बताती है कि ''इस पहल ने मुझे लोगों से मिलने और उनके साथ सार्थक संबंध विकसित करने का अवसर प्रदान किया है और इस बात की गहरी समझ दी है कि हमारा समुदाय क्या चाहता है।''

क्लब ने एक टाइफाइड टीकाकरण अभियान भी चलाया है जिसके अंतर्गत 800 सरकारी स्कूल के छात्रों को टीका लगाया गया। इसकी कुल लागत ₹56,000 थी। हाल ही में 750 से अधिक वयस्कों को ₹45,000 की लागत से हेपेटाइटिस बी का टीका दिया गया। क्लब ने अब तक 1500 छात्रों के लिए 132 चिकित्सा सेवा परियोजनाएं, RYLA आयोजित किए है और सरकारी स्कूलों को चार डिजिटल लर्निंग किटें वितरित की है। ■

प्रसवपूर्व देखभाल शिविर मेरे दिल के करीब है, इस पहल ने मुझे लोगों से मिलने और उनके साथ सार्थक संबंध विकसित करने का अवसर प्रदान किया है और इस बात की गहरी समझ दी है कि हमारा समुदाय क्या चाहता है।

डॉ स्वाति लिखिते
अध्यक्ष, रोटरी क्लब पनवेल एलाईट

क्लब अध्यक्ष डॉ स्वाति लिखिते (बाएं) एक बच्चे को टाइफाइड का टीका लगाती हुई।

रोटरी क्लब कोडाइकनाल 50 साल मना रहा है

जयश्री

कोडाइकनाल के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3000 ने पहाड़ी शहर के 100 साल पुराने सरकारी स्कूल में एक रोटरी अध्ययन केंद्र स्थापित करके अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया, ताकि विभिन्न स्कूलों के वंचित छात्रों को अतिरिक्त शिक्षा दी जा सके, और आत्मविश्वास के साथ विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का सामना करना युवाओं को सिखाएं। क्लब उच्च माध्यमिक कक्षा के छात्रों को बेहतर रोजगार के अवसरों के लिए पढाई के अपने पाठ्यक्रम का चयन करने में सक्षम बनाने के लिए करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों की भी व्यवस्था कर रहा है।

क्लब के मील का पत्थर वर्ष को चिह्नित करने के लिए एक फुटबॉल टूर्नामेंट, सिलंबम प्रतियोगिता और कई अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन आयोजनों में 1,700 से अधिक छात्रों ने भाग लिया और 400 से अधिक बच्चों ने पुरस्कार जीते।

1973 में 18 सदस्यों के साथ शुरू हुआ - ज्यादातर विदेशी पहाड़ी इलाकों में बस गए - क्लब में अब 54 सदस्य हैं, जिनमें 8 महिला रोटेरियन शामिल हैं। क्लब के अध्यक्ष एम आर पी ए कार्तिकेयन का कहना है कि इसका प्रमुख ध्यान स्कूलों में शौचालय ब्लॉकों के निर्माण और कक्षा फर्नीचर प्रदान करने सहित बुनियादी ढांचे में सुधार पर है। इस वर्ष स्मरणोत्सव के हिस्से के रूप में हमने ज़रूरतमंद रोगियों को ₹2 लाख की चिकित्सा सहायता और छात्रों को शैक्षिक छात्रवृत्ति वितरित की, वे कहते हैं।

पीडीजी सैम बाबू और रोटरी क्लब कोडाइकनाल के अध्यक्ष एम आर पी ए कार्तिकेयन, रोटरी क्लब कोडाइकनाल के सदस्य डीजी आई जेराल्ड के साथ क्लब की 50वीं वर्षगांठ मनाते हुए।

एक प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह।

क्लब 2015 से हर साल RYLA का आयोजन करता आ रहा है। इस साल 60 छात्रों ने तीन दिवसीय RYLA में भाग लिया। 2018 से आदिवासी गांव पेरुंगडु में एक अनाथालय को क्लब द्वारा समर्थित किया जा रहा है। कार्तिकेयन कहते हैं, ''हम नियमित रूप से वहां रहने वाले 27 बच्चों के लिए किराने का सामान और आवश्यक सामान और कपड़े उपलब्ध कराते हैं।'' वह 2017 में वलंगवी गांव को सोलर लाइट प्रदान करने वाले क्लब को याद करते हैं। ''यह कोडाइकनाल से 40 मील दूर एक आदिवासी बस्ती है और सीमित सुविधाओं के साथ है। जब हम पहली बार गए थे, तो उस जगह को अंधेरे में डूबा हुआ देखकर चकित रह गए थे और इसने हमें घरों को सोलर लैंप से लैस करने और वहां सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने के लिए प्रेरित किया।''

क्लब ने आठ इंटरेक्ट क्लब और तीन रोटरैक्ट क्लब को चार्टर्ड किया है। पीडीजी सैम बाबू इस क्लब के सदस्य हैं।■

***दाएं से:** कोरी स्टिक्सरुड, प्रिंसिपल, कोडाइकनाल इंटरनेशनल स्कूल, और डीजी जेराल्ड ने क्लब के अध्यक्ष कार्तिकेयन और पीडीजी सैम बाबू की उपस्थिति में रोटरी स्टडी सेंटर का उद्घाटन किया।*

अखिल-महिला कार रैली ने तोड़ी बेड़ियां

वी मुत्तुकुमारन

चेन्नई में एक अखिल-महिला रोटरी क्लब ने कुछ अलग करने की हिम्मत दिखाई है। उनकी चिन्हक परियोजना प्रोजेक्ट स्प्रेडिंग द विंग्स (विरियुम सिरागुगल), जो चार सदस्यों के साथ की जाने वाली एक क्रॉस कंट्री कार रैली है, ने कन्याकुमारी से कश्मीर यात्रा के साथ अपना चौथा संस्करण पूरा कर लिया है। रोटरी क्लब चेन्नई मेराकी, रो ई मंडल 3232, के चार्टर अध्यक्ष और इस परियोजना के अध्यक्ष शिवबाला राजेंद्रन कहती है, ''यह अभियान काफी विख्यात और सुखद था क्योंकि हमारा 15 रो ई मंडलों में 45 स्थानों पर 150 क्लबों ने शानदार स्वागत किया।''

15 दिवसीय एकल रैली 5,500 किलोमीटर के चुनौतीपूर्ण इलाकों, खराब मौसम से होकर गुजरी, ''लेकिन प्रकृति ने बिना किसी अड़चन के हमारी यात्रा को सुचारू रूप से चलाने की साजिश रची। भगवान की कृपा से, हमारी कार में कोई यांत्रिक गड़बड़ी नहीं आई, और हमारा स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि हमने बदलते परिदृश्य के हर पल का आनंद लिया,'' शिवबाला याद करती है। रो ई अध्यक्ष की थीम के अनुरूप, कार रैली में एक टैगलाइन 'इमेजिन इम्पैक्ट टूर' लिखी हुई थी और महिला चालक दल ने रास्ते में उन सभी क्लबों की परियोजनाओं और सामुदायिक पहलों को नोट किया, ''ताकि हम देश भर में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए अपनी बात कह सकें,'' वह कहती है।

रो ई के निदेशक ए एस वेंकटेश और DG एन नंदकुमार ने 29 सितंबर को चेन्नई के शेनॉय नगर स्थित भगवती अम्मन मंदिर में एक पारंपरिक अनुष्ठान के बाद कार्यक्रम संरक्षक नल्ली कुप्पुस्वामी चेट्टी की उपस्थिति में रैली को हरी झंडी दिखाई। करीब 20 रोटेरियन लोगों ने उन्हें विदाई दी और वे तड़के कन्याकुमारी पहुंचे। अगले दिन, DG वी आर मुत्तु ने रो ई मंडल 3212 के अधिकारियों के साथ भारत के दक्षिणी सिरे से रैली का उद्घाटन किया।

जोखिमों की चेतावनी

चूंकि यह पहली बार था जब वे उत्तर भारत की यात्रा करने जा रहे थे, ''हमें शुरू में हमारे परिवार और रोटेरियनों के एक वर्ग द्वारा चेतावनी दी गई थी लेकिन हमने उन्हें आश्वस्त किया कि हम रोटेरियन के रूप में यात्रा कर रहे है, न कि केवल महिलाओं के रूप में, और उन्हें बताया कि रसद और रहने की देखभाल के लिए क्लबों के साथ पूर्व व्यवस्था की गई थी। हमारे दृढ़ संकल्प को महसूस करने के बाद, उन्होंने हमें जाने दिया,'' शिवबाला बताती है।

परियोजना समन्वयक सुचित्रा कोथांगी ने ज्यादातर समय गाड़ी चलाई, और उनकी सहायक चालक क्लब सचिव प्रीता महेश थी, जबकि शिवबाला और क्लब अध्यक्ष श्रीकला गोपी चार सदस्यीय दल के अन्य सदस्य थे। गो ग्रीन, एंड पोलियो नाउ, DEI नीति, कैंसर जागरूकता और महिला कल्याण पांच-स्तरीय अभियान थे जो उन्होंने अपनी यात्रा में दिखाए थे।

रैली के दौरान उन्होंने जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं का दौरा किया, उनमें शामिल है इरोड स्थित 400 बिस्तरों वाला रोटरी कोविड अस्पताल; बेंगलुरु में करुणाश्रय नामक एक उपशामक देखभाल

रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स विज़ाग इंस्टीट्यूट में टीम के साथ। उनके बाईं ओर रोटरी क्लब चेन्नई मिराकी की चार्टर अध्यक्ष शिवबाला राजेंद्रन हैं, (बाएं से) क्लब की सचिव प्रीथा महेश, कोथांगी सुचित्रा और क्लब के अध्यक्ष श्रीकला गोपी दाईं ओर हैं।

रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने पीडीजी राजा सीनिवासन और रोटेरियन विनोद सरोगी के साथ कार रैली को रवाना किया।

केंद्र; सोलापुर में बुजुर्गों को भोजन और दृष्टिबाधितों के लिए एक स्कूल प्रदान करने वाली *अन्नपूर्णा योजना;* पुणे में इनक्यूबेटर और मानव दूध बैंक से सुसज्जित एक नगरपालिका अस्पताल; औरंगाबाद में गरीबों को मुफ्त सेवा प्रदान करने वाला ब्लड बैंक; खामगांव में व्यावसायिक केंद्र और विशेष बच्चों के लिए स्कूल; अकोला में वन परियोजना; अमरावती में मूक-बधिर विद्यालय; छिंदवाड़ा में व्यावसायिक केंद्र; और झांसी में टीकाकरण केंद्र और रोटरी स्कूल।

शिवबाला कहती है, ''हमने दो 'एंड पोलियो' मशालें ले रखी थीं, जो रोटरी क्लब मद्रास की एक पहल थी, जिसने जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए लगभग 63 देशों की यात्रा की थी और उन्हें उनके अंतिम चरण में अफगानिस्तान और पाकिस्तान भेजा जाएगा।''

शाम 6 बजे के बाद कभी सड़क पर न जाएं

अपनी रैली से पहले क्लबों के साथ बातचीत करने के बाद, ''हम नियमित रूप से शाम 6 बजे उन स्थानों पर रुकते थे जहां रोटेरियन द्वारा एक स्वागत समारोह की व्यवस्था की गई थी। हमें उनकी परियोजनाओं के आसपास ले जाया गया और क्लबों द्वारा एक आरामदायक प्रवास प्रदान किया गया,'' सुचित्रा कहती है। झांसी से ग्वालियर के रास्ते में एक दूरदराज के गांव में गूगल मैप्स द्वारा गुमराह किए गए एक बुरे सपने को याद करते हुए, वह कहती है, चूंकि यह एक सीधा राजमार्ग है, इसलिए हम GPS निर्देशांक के अनुसार चलते रहे। लेकिन उसने हमें एक आदिवासी बस्ती में पहुंचा दिया... यह डरावना था। लेकिन हमें उनकी खेती और आदिम जीवन की एक झलक मिली।''

***बाएं से:** शिवाबाला, प्रीथा, सुचित्रा और श्रीकला, रो ई निदेशक महेश कोटबागी के साथ।*

जम्मू में, 13 अक्टूबर को रो ई मंडल 3070 के महानिदेशक दुष्यंत चौधरी और अन्य रोटेरियन ने उनकी अगवानी की और अगले दिन वे श्रीनगर पहुंचे। घाटी में, रोटरी क्लब श्रीनगर सिटी के सचिव सफूरा जावेद और उनके परिवार ने रैली में भाग लेने वालों की मेजबानी की; जबकि क्लब अध्यक्ष भूपिंदर सिंह ऊप्र के साथ जम्मू में मौजूद थे। जम्मू से श्रीनगर तक 250 किलोमीटर की दूरी पर खड़ी पहाड़ियों एवं संकरी सड़कों पर ड्राइविंग ने उन्हें बड़ा डराया। उन्होंने कहा, ''दक्षिण भारत में पहाड़ी सड़कों के विपरीत, जहां घाटियों से सटी दीवारें बनी रहती है, कश्मीर में इस तरह के कोई सुरक्षा या सड़क मानक नहीं है। जहाँ ट्रक विपरीत दिशा से आ रहे थे, हमें अच्छी तरह से बातचीत करके गाड़ी चलानी पड़ी क्योंकि बाईं ओर घाटी की तरफ कोई दीवार (पैरापेट) नहीं थे। सुचित्रा का मानना है कि कश्मीर को छोड़कर बाकी राष्ट्रीय राजमार्ग उच्च मानकों के है। 10 मंडल गवर्नरों द्वारा दिए गए

रैली को नल्ली कुप्पुस्वामी चेट्टी, डीजी एन नंदकुमार, विनोद सरोगी और पीडीजी राजा सीनिवासन द्वारा रवाना किया गया।

स्वागत ने हमें एक सुखद अनुभव दिया है, जिनके साथ PDGगण क्लब अध्यक्ष और निर्वाचित DG भी मौजूद थे।

चेन्नई से विजाग

विशाखा विस्टा जोन इंस्टीट्यूट में भाग लेने के लिए चार सदस्यीय चालक दल ने कार द्वारा 850 किलोमीटर की यात्रा करके चेन्नई से विशाखापत्तनम तक अपना पांचवां अभियान किया। ''रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने *वुमन इन रोटरी* कार्यक्रम में हमें प्रोत्साहित किया। उन्होंने हमारे साथ सेल्फी ली और यह हमारे लिए एक निर्णायक क्षण था, शिवबाला कहती है। विज़ाग के रास्ते में, उनकी मेजबानी रोटरी क्लब सुलुरपेट, कावली और तुनी के रोटेरियनों ने की; और महिला चालक दल ने उनके आतिथ्य का भी आनंद उठाया।

अपनी पहली रैली में, चारों ने 2018 में चेन्नई से रामेश्वरम से दूर स्थित धनुषकोडी तक की यात्रा की थी। रो ई के तत्कालीन अध्यक्ष बेरी रेसिन ने रो ई के तत्कालीन निदेशक सी भास्कर और RIDE भरत पंड्या और RIDE कमल सांघवी की उपस्थिति में रैली को हरी झंडी दिखाई थी। इसके बाद रोटरी इंडिया के शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए चेन्नई से कोलकाता तक का समय आया। महामारी के बाद, 2021-22 में, कावेरी नदी के किनारे चलने के लिए उन्होंने कर्नाटक के कोडागु जिले के तालाकावेरी से शुरू करके तमिलनाडु के पूमपुहार, जहां यह बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है, तक की यात्रा की। ''नदी की बहाली, पुनर्वनीकरण और पर्यावरण को बचाने को अभियान के मुद्दों के रूप में लिया गया था,'' शिवबाला कहती है।

उनकी कन्याकुमारी से कश्मीर यात्रा के दौरान, पुणे में रो ई निदेशक महेश कोटबागी और अमिता ने एक घंटे से अधिक समय तक उनकी मेजबानी की। PDGगण आर श्रीनिवासन और ई के सगादेवन कन्याकुमारी से कश्मीर तक महिला रोटेरियनों द्वारा किये गए एक सफल एकल कार अभियान के वास्तुकार और सहयोगी सलाहकार थे। ■

कर्नाटक में बीडर किले में स्थानीय क्लबों के सदस्यों और बीडर के इनर व्हील क्लब के सदस्यों के साथ रैली टीम।

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है? या यह आपके जंक फोल्डर में जा रही है?

हम हर महीने आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन **ROTARY NEWS PLUS** निकालते हैं। यह प्रत्येक सदस्य को महीने के मध्य तक ई-मेल द्वारा भेजा जाता है।

रोटरी न्यूज़ प्लस हमारी वेबसाइट www.rotarynewsonline.org पर पढ़ें।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मैंगलोर में रोटरी अनाथालय ओलंपिक

टीम रोटरी न्यूज़

केनरा हाई स्कूल में रोटरी क्लब मैंगलोर सेंट्रल, रो ई मंडल 3181, और रोटरी क्लब मैंगलोर सिटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 22वें चिन्नारा उत्सव, जो अनाथालय ओलंपिक के रूप में अधिक लोकप्रिय है, में 10 चाइल्ड केयर घर और संरक्षण केंद्रों के 400 बच्चों के लिए यह दिन मौज-मस्ती भरा था।

वार्षिक खेल और सांस्कृतिक बैठक अनाथालयों और विशेष घरों के वंचित बच्चों को सभा में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में, मैंगलोर विश्वविद्यालय के कुलपति पी एस येदापादित्य ने विशेष घरों के विशेषाधिकार प्राप्त बच्चों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर देने के लिए रोटरी की प्रशंसा की। उन्होंने वर्षों से की गई सामुदायिक परियोजनाओं और क्लब की सामाजिक पहलों की भी सराहना की। उन्होंने कहा, ''स्वयंसेवी संगठनों को इसी तरह के आयोजन करके सामाजिक असमानता और समाज में पिछड़ेपन को खत्म करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।''

आयोजन समिति के अध्यक्ष पीडीजी देवदास राय ने कहा कि ''आयोजन का उद्देश्य बच्चों के चेहरे पर कम से कम एक दिन के लिए मुस्कान लाना और उन्हें यह एहसास दिलाना है कि वे अकेले नहीं हैं।'' इससे पहले आरसी मैंगलोर के केंद्रीय अध्यक्ष साईं बाबा राव ने स्वागत भाषण दिया। एजी राजगोपाल राय, नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजेश शेट्टी और क्लब के सचिव प्रदीप कुलाल भी मौजूद थे। डीजीएन विक्रम दत्ता ने विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र और विजेता टीम को इवेंट ट्रॉफी वितरित की। ■

पीडीजी देवदास राय (दाएं से तीसरे) अनाथालय ओलंपिक के उद्घाटन के अवसर पर बच्चों के साथ।

अध्यक्ष जोन्स ने श्रीलंका के कई कार्यक्रमों में भाग लिया

टीम रोटरी न्यूज़

श्रीलंका की अपनी हालिया यात्रा के दौरान, रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने द्वीप राष्ट्र में रोटेरियन की एक बड़ी सभा को संबोधित किया और उनके सम्मान में आयोजित एक ब्लैक टाई डिनर में भाग लिया। इस भव्य समारोह में श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे और उनकी पत्नी मैथ्री सहित लगभग 400 अतिथि शामिल हुए।

जोन्स ने श्रीलंका में क्लबों द्वारा की गई कई सेवा परियोजनाओं में से एक - रोटरी श्रीलंका की *One Million Tree Stories* को चिह्नित करने के लिए एक टोकन वृक्षारोपण किया। ''इस दस लाख पेड़ कार्यक्रम के तहत, रोटरी श्रीलंका न केवल हमारे देश के हरित आवरण में सुधार करने का लक्ष्य रखता है, बल्कि इससे प्राप्त आय का 40 प्रतिशत रोटरी फाउंडेशन को दान भी करता है। जेनिफर जोन्स ने कोलंबो स्टॉक एक्सचेंज के परिसर में एक टोकन पेड़ लगाया,'' पीआरआईपी के आर रवींद्रन ने कहा।

उन्होंने कहा कि कोलंबो स्टॉक एक्सचेंज ने रोटरी, श्रीलंका इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स और सीलोन चैंबर ऑफ कॉमर्स के सहयोग से पर्यावरणीय स्थिरता के लिए कार्रवाई के आह्वान के रूप में इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

एक अन्य परियोजना जिसमें रो ई अध्यक्ष ने भाग लिया, वह *लाइफ़ लाइन प्रोजेक्ट* था, जिसमें यूनिसेफ और रो ई श्रीलंका में वर्तमान संकट से प्रभावित परिवारों को महत्वपूर्ण जीवन रक्षक आपूर्ति प्रदान करने के लिए साझेदारी कर रहे हैं। साझेदारी रोटरी इंटरनेशनल के वैश्विक नेटवर्क को समन्वित करती है जो आवश्यक दवाओं की खरीद के लिए धन जुटाएगी। दवाओं की पहली खेप राष्ट्रपति जोन्स द्वारा स्वास्थ्य मंत्रालय को सौंपी गई थी।

Jump Start Sri Lanka की एक और सेवा परियोजना है, जो श्रीलंका में रोटरी युवा मामलों और खेल मंत्रालय के साथ साझेदारी में कर रही है। इस परियोजना के तहत देश में 500 योग्य युवाओं को एक आईटी छात्रवृत्ति की पेशकश की जाती है जिसे फिलीपींस में रोटरी क्लबों के सहयोग से शुरू और विकसित किया गया है। जोन्स ने श्रीलंका की यात्रा के दौरान 50 छात्रों के पहले बैच को आईटी छात्रवृत्ति पत्र प्रदान किया।

रो ई अध्यक्ष की यात्रा का एक उच्च बिंदु श्रीलंका के डाक विभाग ने पहली महिला रो ई अध्यक्ष की यात्रा को चिह्नित करने के लिए एक स्मारक डाक टिकट लॉन्च किया, जो मास मीडिया मंत्री बंडुला गुनावर्देने की उपस्थिति में था।■

ऊपर: रोटरी भोज में श्रीलंकाई राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के साथ रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स और डीजीएन निक क्रेयासिच।

दाएं: यूनिसेफ के प्रतिनिधि क्रिश्चियन स्कूग के साथ राष्ट्रपति जोन्स श्रीलंका के स्वास्थ्य मंत्री केहेलिया रामबुकवेला को दवाओं की एक खेप सौंपते हुए। उनके साथ पीआरआईपी के आर रवींद्रन, डीजी पबुडू डी जोयसा, आरआईडी विकी पुलिज़, पीआरआईडी सांगकू युन, रोटरी क्लब दुबई कॉस्मोपॉलिटन के अध्यक्ष डेविड गिब्सन-मूर और अन्य रोटेरियन हैं।

श्रीलंका के मास मीडिया मंत्री बंडुला गुणावर्धन ने अध्यक्ष जोन्स की तस्वीर के साथ एक डाक टिकट जारी किया। पीआरआईपी रवींद्रन, डीजी पबुडु, पीडीजी भाशकुमार राजन, गौरी राजन, कृष राजेंद्रन और अजित वीरसिंघे भी चित्र में शामिल हैं।

अध्यक्ष जोन्स, आरआईडी पुलिज के साथ, कोलंबो स्टॉक एक्सचेंज के लॉन में एक पौधा लगाते हुए। (बाएं से): गिब्सन-मूर, निक क्रेयासिच, राजीव भंडारनायके, स्टॉक एक्सचेंज के सीईओ, पीडीजी गौरी और डीजी पबुडु भी चित्र में शामिल हैं।

रोटरी एक्सपो जालना में स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी जालना एक्सपो, रोटरी क्लब जालना और जालना मिडटाउन, रो ई मंडल 3132 द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित तीन दिवसीय मेले ने दिसंबर में एक लाख से अधिक की संचयी उपस्थिति के साथ ₹5 करोड़ का कुल कारोबार किया।

स्थानीय अर्थव्यवस्था, और छोटे और मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देने के अलावा, प्लास्टिक के खतरे के बारे में एक सामाजिक संदेश फैलाना, और युवा दिमाग को नवीनतम तकनीकी विकास से अवगत कराना, दोनों

ISRO रॉकेट लॉन्चर स्टॉल के सामने छात्र।

क्लबों ने मेगा प्रदर्शनी से अच्छी रकम जुटाई। रोटरी क्लब जालना मिडटाउन के अध्यक्ष धवल मिश्रीकोटकर ने कहा, उठाई गई धनराशि से हमें सामाजिक पहल करने में मदद मिलेगी, जो इस एक्सपो का प्राथमिक कारण है। सात एकड़ में फैले इस औद्योगिक एक्सपो में 250 से अधिक प्रदर्शनीकर्ता शामिल थे जिनमें छोटे और मध्यम व्यवसाय और दो उत्पाद लॉन्च शामिल थे। - एप्रोकूल का एयर-कंडीशनर और विक्रम टी का टी तंत्र, बच्चों के लिए डेमो स्टॉल जैसे प्लैनेटेरियम, मोबाइल साइंस लैब, रोबोटिक्स, 3डी प्रिंटिंग और एयरोमॉडलिंग डिस्प्ले, जिसने 25,000 स्कूली छात्रों को आकर्षित किया। हाइलाइट्स में से एक यह है कि एक कारपेट स्टॉल ने तीन दिनों में ₹10 लाख से अधिक का व्यवसाय किया और ''प्रदर्शनी के बाद भी, लोग इस स्टॉल पर आते रहे।''

मर्सिडीज बेंज इंडिया के प्रमुख व्यंकटेश कुलकर्णी ने जालना के जिलाधिकारी विजय राठौड़ और डीजी रुकमेश जाखोटिया की उपस्थिति में प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। एक अन्य विशेषता इसरो रॉकेट लॉन्चर शो है, जो लैंडफिल से सात टन प्लास्टिक से बनी 4,700 ईको-ईंटों से बनी एक लंबी इमारत है, इस प्रकार पर्यावरण से लगभग सात टन कार्बन डाइऑक्साइड को अलग किया जाता है। 15,000 से अधिक छात्रों ने प्लैनेटेरियम शो, रोबोटिक्स डेमो देखा, और आर्या कॉन्टॉर्शन वर्ल्ड द्वारा प्रायोजित किड्स जिमनास्टिक्स टैलेंट से अचंभित थे, जिसकी परियोजना अध्यक्ष रोटन पूजा राठी थीं।

रोटरी क्लब जालना के अध्यक्ष किशोर देशपांडे और सचिव प्रशांत महाजन ने रोटरी

मर्सिडीज़ बेंज़ इंडिया के प्रमुख व्यंकटेश कुलकर्णी ने डीजी रुकमेश जाखोटिया की उपस्थिति में रोटरी जालना एक्सपो का उद्घाटन किया।

एक्सपो के लिए मिश्रीकोटकर, प्रतीक नानावती, अध्यक्ष-चुनाव, रोटरी क्लब जालना मिडटाउन, और रोटेरियन यशराज पीठ के साथ समन्वय किया।

मिश्रीकोटकर ने कहा, ''यह अपनी तरह की अनूठी पहल थी, जिसने रोटरी के मुख्य क्षेत्रों की सेवा की और जालना के नागरिकों, स्थानीय अर्थव्यवस्था, छोटे और घरेलू उद्यमों को बढ़ावा देने और रोटरी की सार्वजनिक छवि को लाभ पहुंचाया।'' रोटरी क्लब जालना ने 2007 में प्रदर्शनी की शुरुआत की और 2011 और 2017 में दो और संस्करणों के साथ इसका अनुसरण किया। ■

गुवाहाटी में हैप्पी स्कूल

सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पानबाजार, गुवाहाटी का जूनियर सेक्शन, इसके नवीकरण के बाद, उज्ज्वल और स्वच्छ दिखता है। ''मुझे अब स्कूल आना अधिक पसंद है,कक्षा पांचवीं की छात्रा नीराब कहती हैं।'' क्लब के अध्यक्ष राजीव जैन कहते हैं, रोटरी की टीच पहल के तहत, रोटरी क्लब गुवाहाटी लुइट, रो ई मंडल 3240 ने अपने विश्वास के माध्यम से ''स्कूल को एक बेहतर जगह में बदल दिया जहां बच्चों को सीखने के लिए स्वागत महसूस होता है।''

क्लब के सदस्य अमित अजितसरिया के नेतृत्व में एक टीम ने स्कूल की जरूरतों का आकलन किया। हमें दो कमजोर कक्षाओं पर काम करना पड़ा, ''दो शौचालय ब्लॉक जिनमें कोई पानी नहीं आता था और छत को एक पैरापेट दीवार की आवश्यकता थी। सबसे महत्वपूर्ण, स्कूल में कोई सुरक्षित, स्वच्छ पेयजल नहीं था,'' क्लब की साक्षरता अध्यक्षा मोना शाह ने कहा।

तीन महीने के भीतर क्लब ने परियोजना को ₹3.75 लाख में पूरा किया। कक्षा के फर्नीचर

सरकारी स्कूल में क्लब के सदस्यों के साथ डीजी कुशनवा पाबी (दाएं से पांचवें)।

को बदल दिया गया और एक जल शोधक और आउटडोर खेल उपकरण स्थापित किए गए। ''सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमने इसे छात्रों और शिक्षकों के लिए एक सुरक्षित, आकर्षक और खुशनुमा सीखने की जगह बना दी है, मोना कहती हैं।'' डीजी कुषाणवा पाबी ने पीडीजी अरिजीत एंडो और क्लब के सदस्यों की उपस्थिति में हैप्पी स्कूल का उद्घाटन किया। शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला भी आयोजित की गई थी और क्लब ने स्कूल में एक इंटरैक्ट क्लब को चार्टर करने की योजना बनाई थी।

इससे पहले क्लब ने अपने WinS प्रोजेक्ट के हिस्से के रूप में स्कूल में पांच शौचालयों के साथ एक शौचालय ब्लॉक का नवीनीकरण किया था।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

काशीपुर में चार सीएसआर परियोजनाओं का उद्घाटन

टीम रोटरी न्यूज़

काशीपुर के एक हैप्पी स्कूल में रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश और विनीता, (बाएं से) पीडीजी राजीव शर्मा (रो ई मंडल 3030), डीजीएन नीरव निमेश, डीजी पवन अग्रवाल, प्राची, पीडीजी शरत चंद्र और अंजना।

एक मेगा सीएसआर अनुदान पहल में, रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने रोटरी क्लब काशीपुर, रो ई मंडल 3110 द्वारा निष्पादित चार परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जो कुल ₹1.57 करोड़ की लागत से बुनियादी शिक्षा और साक्षरता, और रोग की रोकथाम और उपचार के क्षेत्र में हैं।

क्लब द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा, ''सबसे अच्छी बात लाभार्थी संगठनों द्वारा दिखाया गया उत्साह था जो दर्शाता है कि वे न केवल उन्नत सुविधाओं का उपयोग करने के लिए बल्कि उन्हें बनाए रखने के लिए भी तैयार हैं।'' काशी विश्वनाथ टेक्सटाइल मिल्स से ₹25 लाख के योगदान के साथ काशीपुर और उसके आसपास के विद्या भारती स्कूलों में आठ कंप्यूटर लैब स्थापित की गईं। वेंकटेश और विनीता ने चंद्रावती तिवारी जूनियर स्कूल और चंद्रावती तिवारी सीनियर स्कूल में दो लैब का उद्घाटन किया।

सीएसआर डोनर्स गलवालिया इस्पात उद्योग और केवीएस प्रीमियर फाउंडेशन ने एलडी भट्ट उप-जिला अस्पताल, काशीपुर में विभिन्न विभागों को कुल ₹52.57 लाख की लागत से चिकित्सा उपकरण प्रदान किए। इस बदलाव के तहत, इस अस्पताल में तीन बिस्तरों वाले एनबीएसयू (न्यूबोर्न स्टेबिलाइजेशन यूनिट) को 12 बिस्तरों वाले एसएनसीयू (स्पेशल न्यूबोर्न केयर यूनिट) में अपग्रेड किया गया। वेंकटेश और विनीता ने क्रमश: नई एसएनसीयू सुविधा, नवनिर्मित लेबर रूम और एसएनसीयू विस्तार यूनिट का उद्घाटन किया। एसएनसीयू कक्ष का जीर्णोद्धार और विस्तार काशीपुर के इनर व्हील क्लब द्वारा नैनी पेपर्स के योगदान से किया गया था। अनुमान है कि अस्पताल में सीएसआर परियोजनाएं एक वर्ष में 2,000 से अधिक नए रोगियों को आकर्षित करेंगी।

क्लब ने नैनी पेपर्स (₹79.79 लाख) के सहयोग से तीन हैप्पी स्कूलों का उद्घाटन किया। सरकारी स्कूलों में कक्षाओं, परिसर के नवीनीकरण, लिंग-पृथक शौचालय ब्लॉकों के निर्माण, नए फर्नीचर, विषयगत दीवार चित्रों, ईंट-पंक्ति वाले रास्ते, हरे लॉन और किले की चारदीवारी सहित एक पूर्ण बदलाव था।

डीजी पवन अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस वर्ष रो ई मंडल 3110 द्वारा ₹7 करोड़ के 11 प्रोजेक्ट किए जा रहे हैं। उन्होंने वेंकटेश और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया। पीडीजी राजीव शर्मा, देवेंद्र कुमार अग्रवाल, शरत चंद्र, रवि प्रकाश अग्रवाल, किशोर कटरू, डीजीएन नीरव निमेश, और रो ई मंडल 3110 सीएसआर अध्यक्ष लालेश सक्सेना परियोजना लॉन्च के समय उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन क्लब अध्यक्ष उदित अग्रवाल ने किया।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

पर्यावरण और पानी की खातिर साइकिलिंग

टीम रोटरी न्यूज़

550 से अधिक रोटेरियन और बिभिन्न आयु समूहों के लोगों ने शहर के 13 अन्य क्लबों के साथ एक संयुक्त पहल में, रोटरी क्लब जालंधर हेल्पिंग हैंड्स, रो ई मंडल 3070 द्वारा आयोजित एक साइकिल रैली *साइक्लोथॉन 2.0* में भाग लिया, जिसने पर्यावरण और पानी को बचाने के लिए 'पेडल' का संदेश भेजा गया।

साइकिल रैली ने मॉडल टाउन से शुरू होने वाले 10 किमी का दौरा किया और पर्यावरण को संरक्षित करने और पानी बचाने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न इलाकों से गुजरे। रैली के अंत में जालंधर के दिग्गज एथलीटों और सवारों - गगन कुमार, सुनील शर्मा, बलराज सिंह चौहान और बलजीत महाजन को सम्मानित किया गया। सभी साइकिल चालकों को टी-शर्ट, प्रमाण-पत्र, पदक, टोपी, कैलेंडर और जलपान दिया गया।

साइकिल रैली के प्रतिभागियों के साथ डीजी दुष्यंत चौधरी (पिछली पंक्ति, बीच में, एक प्रमाण पत्र धारण करते हुए)।

कार्यक्रम में डीजी दुष्यंत चौधरी, आईपीडीजी यूएस घई, जोनल चेयरमैन मनिंदर सिंह चड्ढा, एजी राजेश बहरी, नरेश चड्ढा, पीडीजी सुरेंद्र सेठ, एसपीएस ग्रोवर, क्लब अध्यक्ष रुचि सिंह गौड़, परियोजना निदेशक निखिल अनेजा और अन्य क्लबों के सदस्य उपस्थित थे।■

2023 कन्वेंशन

सिर्फ़ मेलबर्न में

ईवा रेमिजान — टोबा

रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए नियोजित विशेष और निजी कार्यक्रमों का चयन करें, जो मेलबोर्न की संस्कृति, खेल और आतिथ्य को उजागर करता है। जस्ट-फॉर-रोटरी अनुभवों में विश्व स्तरीय गोल्फिंग, वाटरफ्रंट रेस्तरां जिले तक विशेष पहुंच और एक सम्मेलन पसंदीदा: रोटरी सदस्य के घर पर रात का खाना शामिल है।

गोल्फर्स जो 27 -31 मई के सम्मेलन से पहले शहर में आते हैं, विक्टोरिया गोल्फ क्लब में एक रोटरी दिवस में भाग ले सकते हैं, मेलबोर्न सैंडबेल्ट में आठ पाठ्यक्रमों में से एक, जो खेल के लिए आदर्श रेतीली मिट्टी पर सुंदर लेआउट के लिए जाना जाता है। 26 मई को आउटिंग से होने वाली आय पोलियो उन्मूलन के लिए जाती है।

संग्रहालय में रात के दौरान रोटरी दोस्तों के बीच एक और मेलबोर्न खजाना 27 मई को सांस्कृतिक कार्यक्रम का स्वागत करते हैं। शहर के इतिहास के बारे में जानने के लिए घंटों के बाद मेलबोर्न संग्रहालय का अन्वेषण करें, और क्षेत्रीय भोजन और पेय पर पकड़ बनाएं।

मेट्रोपॉलिटन मेलबर्न में रहने वाले रोटरी सदस्य रात्रिभोज के लिए साथी सम्मेलन जाने वालों के लिए तैयार हैं। मेज़बान आतिथ्य शाम के लिए, आप 29 मई को घर पर या क्लब द्वारा दिए गए रात्रिभोज में भाग लेंगे।

एक और विशेष शाम के भोजन के लिए, रोटरी सदस्यों को शहर में आगंतुकों को आकर्षित करने वाले खाद्य पदार्थों की भीड़ का स्वाद लेने के लिए 29-30 मई को दक्षिण व्हार्फ रेस्तरां क्षेत्र में विशेष पहुंच मिलती है। मेलबर्न खाद्य प्रदर्शनी की सड़कें मेलबर्न कन्वेंशन और प्रदर्शनी केंद्र के ठीक बाहर है, जो रोटरी सम्मेलन स्थलों में से एक है।

या 30 मई को प्रसिद्ध फ्लेमिंगटन रेसकोर्स में एक शाम की सैर बुक करें, जिसमें तीन-कोर्स बढ़िया भोजन और जीत के साथ तस्वीरें शामिल हैं।

rotarymelbourne2023.org/events पर अपना विशेष भ्रमण आरक्षित करें।

अधिक जानें और convention.rotary.org पर रजिस्टर करें।

आपके गवर्नर्स

तल्ला राजा शेखर रेड्डी
चिट फंड, रोटरी क्लब नरसरावपेट
रो ई मंडल 3150

ग्रामीण तेलंगाना का परिवर्तन

वह कहते है, ''मेरे 64 क्लबों ने अपने गोद लिए गए गांवों में ग्राम विकास परियोजना के अंतर्गत गांवों की बेहतरी हेतु बड़ी पहल की।'' हैप्पी स्कूल, PHCयों का उन्नयन, किसानों के लिए मृदा परीक्षण और कृषि विशेषज्ञों द्वारा किसानों को लाभदायक, टिकाऊ फसलें उगाने के लिए सलाह दिया जाना, *ग्राम विकास* के कुछ मुख्य आकर्षण है।

''अधिकांश धनराशि सदस्य योगदान और उन परोपकारियों से प्राप्त दान के माध्यम से आती है जो इन गांवों से चले गए है।'' एक दिन में लगभग 800 रोटेरियन इस गांव के कार्यक्रमों की निगरानी करने हेतु इस क्षेत्र का दौरा कर रहे है। जहाँ कब्रिस्तान और सामुदायिक केंद्रों जैसी मौजूदा सुविधाओं का नवीनीकरण किया जा रहा है, वहीं पार्क, पैदल ट्रैक और सीमेंट की बेंच जैसी नई सुविधाएं प्रदान की जा रही है। सेंट जोसेफ जनरल अस्पताल, गुंटूर में ₹1.5 करोड़ के CSR अनुदान के माध्यम से एक डायलिसिस केंद्र (10 मशीनें) स्थापित की गई; जबकि BHEL-GE से ₹46 लाख के अनुदान के साथ MNJ कैंसर अस्पताल, हैदराबाद में एक कलर डॉप्लर सी टी स्कैन स्थापित किया गया।

पिछले साल शुरू की गई दो कैंसर जांच बसों ने 85 विशेष शिविरों के मरीजों में कैंसर के 1,000 से अधिक मामलों का पता लगाया। उनका TRF को देने का लक्ष्य 650,000 डॉलर है।

वोम्मिना सतीश बाबू
प्रौद्योगिकी शिक्षा, रोटरी क्लब नेल्लोर साउथ, रो ई मंडल 3160

क्लबों को वैश्विक अनुदान प्रक्रिया समझाना

रो ई मंडल 3160 के इतिहास में अब तक बमुश्किल 6-7 वैश्विक अनुदान परियोजनाएं की गई होंगी, DG वोम्मीना सतीश बाबू अनुमान लगाते है, जिनका परिवार लगभग 70 वर्षों से रोटरी सेवा में शामिल है। वैश्विक अनुदान आवेदन की प्रक्रिया पर उचित ज्ञान की कमी और DDF को मिलान राशि के रूप में प्राप्त करने हेतु TRF को बड़ा योगदान देने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता की कमी प्रमुख बाधाएं है।

उन्होंने वैश्विक अनुदान प्रक्रिया को समझने में क्लबों की मदद करने के लिए तीन साल के कार्यकाल के साथ 19 सदस्यीय अनुदान प्रबंधन टीम की स्थापना की। टीम के सदस्यों को *rotary.org* के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। वे वर्तमान में संभावित वैश्विक अनुदान परियोजनाओं की पहचान कर रहे है।

उनकी पहल के माध्यम से दवानगेरे के दो ट्रस्ट अस्पतालों को गर्भाशय ग्रीवा कैंसर उपकरण (वैश्विक अनुदान: 40,000 डॉलर) और नवजात नैदानिक उपकरण (33,000 डॉलर) दान किए गए।

अपने रोटेरियन पिता वोम्मिना सुब्रमण्यम से प्रेरित होकर बाबू 1997 में रोटरी में शामिल हुए। मेरी पत्नी और दो बेटियां भी जिज्ञासू रोटेरियन है। ''मेरे परिवार के सभी सदस्य पॉल हैरिस फेलो है।'' वह और उनकी पत्नी दोनों प्रमुख दानकर्ता है और वह रो ई मंडल 3160 में अपने माता-पिता के नाम पर 25,000 डॉलर की अक्षय निधि शुरू करने वाले पहले व्यक्ति है। TRF को देने के लिए उनका लक्ष्य 250,000 डॉलर का है। वह चार कारण-आधारित और आठ पारंपरिक क्लबों की शुरुआत करना चाहते है।

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

श्रीकांत बालकृष्ण इंदानी

सुपरस्टोर श्रृंखला, रोटरी क्लब डोंडाइचा, रो ई मंडल 3060

100 गांवों में ग्राम कल्याण परियोजना

DG श्रीकांत इंदानी कहते है, ''दुनिया के सबसे बड़े सेवा संगठनों में से एक का सदस्य होना और लाखों लोगों के जीवन को बदलने वाली परियोजनाओं में योगदान देना मुझे प्रेरित करता है।'' अपने कॉलेज की पढाई खत्म करने के बाद वह 1997 में एक रोटरेक्टर और 2006 में एक रोटेरियन बने।

DG के रूप में उन्होंने ग्रामीणों के जीवन में प्रत्यक्ष बदलाव लाने के लिए *ग्राम कल्याण* परियोजना की शुरुआत की। सभी 105 क्लबों ने एक गांव को गोद लिया जहाँ बहु-विषयक परियोजनाओं, महत्वाकांक्षी *ग्राम कल्याण* परियोजनाओं को सदस्य योगदान, CSR और वैश्विक अनुदान के मिश्रण द्वारा वित्त पोषित किया जाता है।

फरवरी से लगभग 10,000 रोगियों के लिए 100 से अधिक छोटे शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किए जा रहे है। TRF को देने के लिए उनका लक्ष्य 1.2 मिलियन डॉलर का है, ''हम 1.5 मिलियन डॉलर प्राप्त करने का लक्ष्य रख रहे है। PRIP कल्याण बेनर्जी और PDG आशीष अजमेरा उनके रोल मॉडल है।'' इंदानी कहते है, दोनों जमीन से जुड़े एवं विनम्र है और रोटरी भारत के शीर्ष नेता है। पद छोड़ने के बाद, ''मैं वरिष्ठ रो ई स्तर पर उच्च कार्यों के तहत अपनी रोटरी सेवा जारी रखना चाहता हूँ।'' उन्हें इस वर्ष 800 नए सदस्यों को शामिल करने का भरोसा है।

रो ई मंडल 3060 के प्रमुख क्लबों ने स्थायी परियोजनाएं स्थापित की है, ''जिन्हें मैं मानवता के मंदिर कहता हूँ क्योंकि वे बिना किसी विराम के समुदायों की सेवा करते है,'' वह आगे कहते है।

पी सरवणन

परिवहन, रोटरी क्लब नमक्कल पोल्ट्री टाउन, रो ई मंडल 2982

सार्वजनिक मुद्दों के लिए रैलियां

सेव कावेरी रैली का उद्देश्य मेट्टूर और आसपास के गांवों से नदी में जाने वाले रासायनिक और अन्य प्रदूषकों को रोकना है। सरवनन कहते हैं, ''हम नदी प्रदूषण पर जागरूकता पैदा करेंगे और इस रनथॉन में 1,000 से अधिक प्रतिभागियों के शामिल होने की उम्मीद करते है।''

इससे पहले उन्होंने स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए होसुर में एक वॉकथॉन आयोजित किया; और नशीली दवाओं के खतरे पर जागरूकता पैदा करने के लिए सलेम में एक मैराथन आयोजित की। ''सभी आयु वर्गों के लगभग 3,000 लोगों ने 5 किमी और 10 किमी श्रेणियों में दौड़ लगाई जिससे हमारी बेहतर सार्वजनिक छवि सुनिश्चित हुई,'' वह कहते है। वह 1990 में 25 साल की उम्र में रोटरी में शामिल हुए मैंने सीखा और देखा है कि रोटेरियन वंचितों की मदद करने हेतु प्रयासरत रहते है।

सरकारी अस्पतालों में पांच डायलिसिस केंद्र स्थापित किए जाएंगे (वैश्विक अनुदान: 175,000 डॉलर)। ''हमारे क्लब सलेम, होसुर, तिरुचेनगोडे और कुमारपालयम के सरकारी अस्पतालों में डायलिसिस केंद्र चलाते है। रोटरी क्लब नमक्कल के पास पांच इकाइयों के साथ अपनी स्वयं की सुविधा है।'' 210,000 डॉलर के CSR अनुदान के साथ प्रोजेक्ट मलार के तहत 10 अस्पतालों को सर्वाइकल और स्तन कैंसर का पता लगाने वाले उपकरण दान किए जाएंगे। उनका लक्ष्य TRF के लिए 750,000 डॉलर एकत्र करना है। जनवरी में मंडल RYLA में 62 रोटरेक्टर और युवा थे, RYLA एक सतत कार्यक्रम के रूप में जोन और क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित किए जा रहे है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

तालुकात एक दवा है

डेव किंग

रोटरी क्लब, विशेषज्ञ और सरकारें आपस में सार्थक विचार विमर्श करते हुए एकाकीपन की समस्या से निपटने का समाधान खोज रहे हैं

80 साल की उम्र पार कर चुकीं दो महिला मित्र, वेरा क्रैनमर और सिल्विया वर्डेन बार बार इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर स्थित एक स्थानीय कॉलेज में किशोर छात्रों से नियमित मुलाकातों के लिए कितनी आतुर रहती हैं, ''इन मुलाकातों के ज़रिये हमें लगता है कि हम एक अरसे से बिछड़े दोस्तों से मिल रहे हैं,'' वर्डेन कहती हैं।

समुद्र के नज़दीक बसे हुए एक सुरम्य और गिरजाघर के जीवंत शहर, चिचस्टर में ये महिलाएं अपने घर में अकेले रहती हैं। लेकिन वर्डेन, कभी यहां शिक्षक रह चुकी है, कुछ ही साल पहले विधवा हुई थी और उनका शहर में आना-जाना भी कम होता है। क्रैनमर को भी अकेलेपन से गुजरना पड़ा है।

हालांकि, आज यह दोनों महिलाएं यहां आने वाले एक दर्जन बुजुर्गों में से हैं, चिचस्टर कॉलेज में छात्रों के साथ शाही परिवार के बारे में रोमांचक बातचीत करते हुए वे बताती हैं। ''वास्तव में मुझे युवा लोगों के साथ बात करने में बड़ा मज़ा आता है। उनमें से कुछ तो बहुत महत्वाकांक्षी हैं,'' वर्डन कहती हैं। ''शायद मैं वहां कम उम्र के युवा बुजुर्गों में से एक हूं, हाँ, वहां एक 92 वर्षीय महिला मेरी अच्छी दोस्त बन गयी हैं। बहुत से पुराने बाशिंदों के लिए यह एक बढ़िया जगह है।''

88 वर्षीय क्रैनमर इससे सहमति जताती हैं। अपने ''जैसे दूसरे लोगों से मिलना अच्छा लगता है, लेकिन युवाओं से मिलना, एक अलग दृष्टिकोण देखना, और सकारात्मक ऊर्जा के साथ लौटना वाकई बहुत अच्छा है लगता।'' वह कहती हैं

ब्रिजिंग जेनरेशन, रोटरी क्लब ऑफ चिचस्टर प्रायरी की एक परियोजना, कॉलेज के छात्रों को वृद्ध लोगों से मिलवा कर अकेलेपन का मुकाबला रही है। प्रत्येक दो हफ्ते में, वरिष्ठ लोगों का एक समूह कॉलेज आता है और कॉलेज कैंटीन में कॉफी, केक लेते हुए छात्रों के साथ चर्चा करते हुए इस का आनंद उठाता है। बाद में, छात्रों द्वारा बनाए गए दोपहर के भोजन के लिए कई बुजुर्ग रुक जाते हैं। वहां आने जाने का भुगतान रोटरी क्लब करता है जबकि स्थान और जलपान की व्यवस्था चिचस्टर कॉलेज करता है।

लागत बहुत कम है पर इससे मिलने वाले फायदे भरपूर है। गैर-लाभकारी संगठनों जेनरेशन यूनाइटेड और आइजनर फाउंडेशन की 2018 की रिपोर्ट में निर्दिष्ट किया है कि अंतर-पीढ़ी गत कार्यक्रम जन कल्याण में विशेष रूप से प्रभावी हैं। ऐसे एक कार्यक्रम में भाग लेने वाले 97 प्रतिशत वयस्कों ने बताया कि उन्हें इस कार्यक्रम से काफी फायदा हुआ है।

युवाओं को भी इससे बहुत फायदे हुए हैं। दृष्टांत के तौर पर, चिचस्टर कॉलेज कैंपस के सभी छात्रों को *ब्रिजिंग जनरेशन* मीटिंग्स में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है, और यह प्रोजेक्ट छात्रों में परस्पर बातचीत से व्यक्तित्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण घटक सिद्ध हुआ है। कॉलेज के लिए इन कार्यक्रमों को आयोजित करने वाले राय बेन का कहना है, ''सबसे ज्यादा जो चीज सामने आई है वो है आपसी मेल जोल, हंसी ठट्ठा, चुहल और ऊहापोह और आपके महत्वपूर्ण होने की भावना, कोई आपकी भी सुनता है और आप का वजूद भी मायने रखता है, फिर चाहे आप 17 के हों या 92 साल के हों।''

ब्रिजिंग जेनरेशन का विचार रोटेरियन माइक हार्वे के दिमाग की खोज है, 2013 में अपने इस विचार के साथ उन्होंने चिचेस्टर कॉलेज से संपर्क किया था। एकाकीपन और अलगाव कम करने को वो एक महत्वपूर्ण सामजिक चुनौती समझते हैं। इसकी शुरुआत उन लोगों की तलाश के साथ शुरू हुई है जो लम्बे समय से नितांत अकेले रह रहे थे और संपर्क बढ़ाने के इच्छुक थे।

चिचस्टर प्रायरी क्लब के सदस्य हार्वे ने एज यूके और हेल्थ एंड इंडिपेंडेंट लिविंग सपोर्ट जैसे सामजिक संगठनों को जोड़ा, जो पहियों पर भोजन प्रदान करते हैं। बाकी लोग चर्च के नेताओं, आश्रय आवास और हमारे व्यक्तिगत संपर्कों के माध्यम से जुड़ते गए, वे कहते हैं, अकेले लोगों को साथ में अच्छे से समय बिताते हुए देखना, उन्हें दो या तीन छोटी पीढ़ी के छात्रों से बात करते हुए देखना बहुत ही संतुष्टि देता है।

कोविड महामारी में एकांतवास से बढ़ा अकेलापन वैश्विक स्तर पर एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बन कर उभरा है। 2011 में हुए एक अध्ययन के अनुसार, महामारी से पूर्व, अमेरिका में 65 और उससे अधिक

वेरा क्रैनमर के लिए, ब्रिजिंग जनरेशन सभाएं बाहर निकलने और लोगों की कंपनी का आनंद लेने का एक कारण हैं।

आयु के करीब एक चौथाई अमरिकीवासियों ने खुद को समाज से अलग-थलग पड़ा बताया था, जिसमें 4 प्रतिशत या 1.3 मिलियन लोग शामिल थे, जो सामाजिक एकाकीपन के कष्टदायक अनुभव से गुजर रहे थे। और अकेलापन सिर्फ वृद्ध लोगों को ही प्रभावित नहीं करता है। उधर ब्रिटेन में हुए एक सरकारी सर्वे क्षण में 5 प्रतिशत वयस्क या 2.6 मिलियन लोगों ने कहा था कि वो 2020 में महामारी के शुरुआती दिनों में पहले महीने के दौरान अक्सर या हमेशा अकेला ही महसूस करते थे। लगभग 14 प्रतिशत ने महसूस किया था कि पिछले सप्ताह अकेलेपन ने उनके स्वास्थ्य को प्रभावित किया था ; और ये संख्या सम्पूर्ण ब्रिटेन के लगभग 7.4 मिलियन लोगों की है जिन्हें राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय लॉकडाउन लोनली कह कर सम्बोधित करता है।

ब्रिटेन में ये चिंता इस कदर बढ़ी कि 2018 में सरकार ने अकेलेपन से निपटना रणनीति के अंतर्गत एक मंत्री की नियुक्ति की जिसके अंतर्गत विभिन्न धर्मार्थ भागीदारों के साथ काम करने के लिए 50 मिलियन पाउंड (लगभग 59 मिलियन) से अधिक का निवेश किया था।

यूरोप और अमेरिका में हुए एक अध्ययन के अनुसार दीर्घकालिक अकेलेपन को खराब शारीरिक स्वास्थ्य, डेमनेशिया, कोरोनरी हृदय रोग और स्ट्रोक के बढ़ते जोखिम से जोड़ कर देखते हैं। शोधकर्ताओं ने एकाकीपन की तुलना उच्च रक्तचाप या रोजाना 15 सिगरेट पीने से होने वाली अकाल मृत्यु के बराबर की है। प्रसिद्ध हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन जिसने 724 लोगों को उनके सम्पूर्ण वयस्क जीवन पर किये गए शोध के बाद, स्पष्ट रूप से सामाजिक संबंधों को किसी व्यक्ति के दीर्घकालिक शारीरिक और भावनात्मक रूप से कल्याणकारी और सर्वश्रेष्ठ बताया था। खराब शारीरिक स्वास्थ्य और अकेलेपन में संबंध इतना साफ़ है कि यूके, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, कोरिया, नीदरलैंड और अन्य जगहों के डॉक्टरों ने अकेलेपन के लिए सामाजिक नुस्खे को अपनाया है जिसमें वो अपने रोगियों की नियमित जांच कर उन्हें अपने समाज में चल रही गतिविधियों में शामिल होने के लिए निर्दे शित करते हैं। एक प्रायोगिक परियोजना में, स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं द्वारा इस नुस्खे को अपनाने के बाद, रोगियों में अकेलेपन की भावना में 49 प्रतिशत तक कमी आई थी।

कई प्रमुख अध्ययनों में ये सामने आया है कि विभिन्न समूहों में अन्य की तुलना में अकेलापन अपेक्षाकृत ज़्यादा नज़र आया हैं। बीबीसी लोनलीनेस एक्सपेरिमेंट सर्वे के अनुसार इनमें 16 से 24 वर्ष की आयु और 75 वर्ष से अधिक आयु के लोग, और इसके साथ अविवाहित, विधवा और विधुर लोग शामिल हैं। अक्सर पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अकेलापन ज़्यादा पाया गया है, हालांकि कुछ शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि लैंगिक अंतर की वजह ये भी हो सकती है कि पुरुष अकेलेपन जैसी अवांछित भावनाओं को बताने में रूचि नहीं लेते हों, छिपाते हों। कारकों में मानसिक बीमारी और कमजोर शारीरिक स्वास्थ्य भी शामिल हैं।

सबसे ज्यादा जो चीज सामने आई है वो है आपसी मेल जोल, हंसी ठट्ठा, चुहल और ऊहापोह और आपके महत्वपूर्ण होने की भावना, कोई आपकी भी सुनता है और आप का वजूद भी मायने रखता है, फिर चाहे आप 17 के हों या 92 साल के हों।

जून 2022 में, लोनेलिनेस अवेयरनेस वीक की शुरुआत में, यूके सरकार ने एक शोध प्रकाशित किया था जिसमें दर्शाया गया कि अकेलेपन की वजह से मानसिक स्वास्थ्य संकट किस प्रकार उभर सकता हैं और लम्बे समय तक अकेले रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये रिपोर्ट एक समाधान भी सुझाती है: लक्षित प्रारंभिक हस्तक्षेप। हमारे अध्ययन में दीर्घकालिक अकेलापन अनुभव करने वाले लोगों में मानसिक बीमारियोन का संकट होने की संभावना लगभग चार गुना अधिक थी। लंदन स्थित नेशनल सेंटर फॉर सोशल रिसर्च में स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल के सह-निदेशक सोक्राटिस डिनोस बताते हैं, खराब मानसिक स्वास्थ्य के कारण लोगों से मिलने-जुलने और बातचीत करने से कतराना, समाज से दूरी बना लेना, यह सब एकाकीपन में तकलीफें बढ़ा सकता है, जबकि अकेलापन खराब मानसिक जीवन बेहतर हुआ है।

इस कार्य के लिए ब्रिटिश सरकार के मंत्री संयुक्त रूप से एक संशोधित रणनीतिक योजना तैयार कर रहे हैं, जिसे चैरिटी फंडिंग पैकेज के लिए 750 मिलियन पाउंड (लगभग 895 मिलियन डॉलर) का सयोग प्राप्त है और इसकी रिपोर्ट इस वर्ष के प्रारम्भ में आ जायेगी। शोध के बारे में बताते हुए मंत्री निगेल हडलस्टन ने कहा, अकेलापन हम सभी को प्रभावित कर सकता है, और ये अनुसंधान... इस बात पर प्रकाश डालता है कि युवा और विकलांग लोगों के साथ-साथ, लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे लोग भी किसी ना किसी रूप में प्रभावित होते ही हैं। उन व्यक्तियों तक पहुंचने के लिए मैं हर व्यक्ति से अनुरोध करता हूँ, जिसके बारे में उन्हें लगता है कि वे अकेले पड़ गए हैं या अलग-थलग महसूस कर रहे हैं। सरकार ने महामारी के माध्यम से अकेलेपन से निपटने को वरीयता दी है और सर्वाधिक जोखिम वाले लोगों की सुरक्षा के लिए अब हम दोगुना प्रयास करेंगे।

चूंकि रोटरी की स्थापना का उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले लोगों के लिए विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान का अवसर और आजीवन, सार्थक और उद्देश्यपरक मित्रता का सृजन करना है, इसलिए रोटरी क्लब एकाकीपन की प्राकृतिक औषधि है। यह व्यापक समुदाय के साथ संपर्क और घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने की सुविधा प्रदान करते हैं। शोधकर्ताओं का सुझाव है कि रिश्तों की गिनती या मात्रा नहीं बल्कि उनकी गुणवत्ता सबसे अधिक मायने रखती है। रोटरी उद्देश्य और अर्थ की भावना के साथ साथ स्वयं के मूल्यांकन के अधिक अवसर प्रदान करती है।

COVID-19 महामारी की शुरुआत में, जब वैयक्तिक रूप से मीटिंग्स कम कर दी गई थीं, रोटरी के सदस्य वृद्ध और विकलांग लोगों से फोन कॉल के माध्यम से संपर्क में रहे, उनके लिए भाग दौड़ करते रहे, दवाइयां लाये, और यहां तक कि उनके कुत्तों तक को टहलाने ले जाते थे।

रोटरी क्लब ऑफ मेडेनहेड ब्रिज की सदस्य लिसा हंटर को महामारी के दौरान जरूरतमंद परिवारों के लिए अपने क्लब के लोगों को एकत्रित कर उनकी सहायता करने हेतु महारानी की 2022 न्यू ईयर ऑनर्स लिस्ट में ब्रिटिश एम्पायर मेडल मिला है। रोटरी नेटवर्क के माध्यम से, हम एक दूसरे का सहयोग करने और अपने कौशल और ज्ञान का

उपयोग कर अपने समाज का निर्माण करने के लिए एक मंच पर आते हैं, वह कहती हैं।

120 स्वयंसेवक जिसमें गैर-रोटरी सदस्य शामिल हैं, क्लब ने 150 से अधिक घरों में जा कर सहायता की और 3,800 से अधिक कार्य किये, जो लगभग 6,500 स्वयंसेवी घंटों के समकक्ष थे।

दुनिया भर में, रोटरी क्लब सदैव अपने समाज के उन लोगों तक पहुंचे हैं जो स्वयं को एकाकी महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, रोटरी क्लब पूरे यूके में दर्जनों मेमोरी कैफे चलाते हैं या उनका सहयोग करते हैं। वे शुरुआती डिमेंशिया ग्रस्त लोगों के साथ-साथ उनकी देखभाल करने वालों के लिए मिलने, गेम खेलने, चैट करने, फिल्में देखने और गाने के लिए उपलब्ध स्थान हैं। मूल रूप से 1990 के दशक में नीदरलैंड में विकसित,इस अवधारणा का ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल से परिचय सन 2008 में रोटरी क्लब ऑफ वेडब्रिज के सदस्य टिम जोन्स ने करवाया था।

उस वक्त, मैं कॉर्नवाल में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबंधन करने वाली नेशनल हेल्थ सर्विस के लिए काम करता था, जोन्स बताते हैं। उन्होंने नज़दीक ही लाउंसेस्टन में एक मेमोरी कैफे के बारे में सुना, सोचा कि और अधिक जानकारी लेनी चाहिए, और उसके पश्चात उन्होंने ही वेडब्रिज में पहला रोटरी-संचालित मेमोरी कैफे स्थापित किया।

यह कार्यक्रम इतना सफल हुआ कि जोन्स तब से लगातार अन्य रोटरी क्लबों को अपने समुदायों में मेमोरी कैफे स्थापित करने में मदद करते आ रहे हैं। रोटरी क्लब ऑफ वेयर की एक सदस्य गेरी पार्लबी कहती हैं, ''हम एक आरामदायक, विफलता-मुक्त वातावरण निर्मित करने का प्रयास करते हैं। वह दक्षिण-पश्चिम इंग्लैंड में टैविस्टॉक में एक मेमोरी कैफे का सहयोग करने और इन मुलाकाती केंद्रों को फैलाने में जबरदस्त सहयोग करती रही हैं। मेमोरी कैफे का विचार सहकर्मी की सहायता, समर्थन करना है।''

नेशनल हेल्थ सर्विस से सेवानिवृत्त होने के बाद, जोन्स मेमोरी कैफे से होने वाले फायदों पर शोध कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने अभी तक अपने निष्कर्षों को प्रकाशित नहीं किया है, लेकिन उनके पास प्रमाण हैं कि सामाजिकरण और दूसरों के साथ जुड़ने से मस्तिष्क में लाभ दायक परिवर्तन होते हैं। यादाश्त खो चुके लोगों के लिए, यह दृष्टिकोण संज्ञानात्मक उत्तेजना चिकित्सकीय लक्ष्यों के साथ सरेखित होता है।

वेल्स में एक मेमोरी कैफे में भाग लेने वाले लोग महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की मृत्यु के कुछ महीने पहले जून में उनकी प्लैटिनम जयंती मनाते हुए।

इसका सीधा सम्बन्ध सकारात्मक जुड़ाव से है जो कमजोरियों के बजाय ताकत पर केंद्रित है, जोन्स बताते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि अल्जाइमर रोग के शुरुआती चरणों में संज्ञानात्मक उत्तेजना चिकित्सा और मनोसामाजिक जुड़ाव दवा के रूप में प्रभावी हो सकता है और मस्तिष्क में हो रही गिरावट को कम कर सकता है।

जोन्स सतर्क है कि कहीं वो ये सुझाव न दे दें कि सामाजिक जुड़ाव से मनोभ्रंश को रोका जा सकता है। ''अल्जाइमर रोग का कोई इलाज नहीं है,'' वे कहते हैं। ''लेकिन हम जो कर सकते हैं वह है इसे लचीला करना, और सबूत भी हैं कि यह अल्जाइमर की गति को धीमा कर सकता है और डिमेंशिया वाले लोगों का सहयोग कर सकता है। अकेलापन दूर करने के लिए मेमोरी कैफ़े के जंगल अद्भुत उदाहरण हैं, सिर्फ डिमेंशिया वाले लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि उनकी देखभाल करने वालों के लिए भी।''

देखभाल करने वालों का ध्यान रखना अक्सर अप्रत्यक्ष चुनौती होती है। महामारी का एक और परिणाम, उन लोगों की संख्या में वृद्धि है जो अपने बीमार साथी, परिवार के बीमार सदस्य या मित्र की देखरेख कर रहे हैं।

लंदन की गैर-लाभकारी संस्था केयरर्स यूके का अनुमान है कि अब यूनाइटेड किंगडम में 10 मिलियन से अधिक अवैतनिक देखभालकर्ता हैं। इनमें युवा वयस्कों से लेकर सेवानिवृत्त लोग शामिल हैं। 2020 से, ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल ने इस मुद्दे को उजागर करने के लिए केयरर्स यूके के साथ सहभागिता की है। केयरर्स यूके एक टेलीफोन हेल्प लाइन, नियमित ऑनलाइन मीटअप और एक ऑनलाइन फोरम प्रदान करता है जहां देखभाल करने वाले परस्पर सहयोग करने के लिए जुड़ सकते हैं।

रोटरी क्लब ऑफ क्ले क्रॉस की एक सदस्य चेरिल बेरी, एक ऐसी ही साझेदारी लीड के रूप में कार्य करती हैं। अक्सर देखभाल एक बहुत ही विकट परिस्थिति होती है, जिसमें देखभाल करने वाले भी अपनेआप को एकाकी और पराजित महसूस कर सकते हैं, वह कहती हैं।

बेरी के अनुसार, 100 से अधिक रोटरी क्लब एंबेसडर और डिस्ट्रिक्ट लीड्स ने अपने समाज में हजारों देखभाल करने वालों को केयरर्स यूके द्वारा प्रदत्त मुफ्त सेवाओं से जोड़ा है। बेरी बताते हैं, रोटेरियन नियमित रूप से दोस्ती और सहयोग के लिए अवैतनिक देखभालकर्ताओं की ऑनलाइन और आमने-सामने बैठकों की व्यवस्था करते हैं, जिसमें राहत के पल, रोटरी मैत्री कैफे और एक्टिविटी ग्रुप्स शामिल हैं।

अगस्त 2022 में, ठखइख ने 2022-23 रोटरी वर्ष के अंत तक रोटरी मिलियन अनपेड केयरर्स अभियान शुरू किया है जिसका लक्ष्य है सहयोग और सलाह देने वाले 1 मिलियन देखभाल करने वालों तक पहुंचना और जोड़ना।

चित्र: सेरेना ब्राउन

रोटरी से पुनर्प्रकाशित

Rotary PEOPLE OF ACTION

मेट्टुपालयम में मोटर चालित अंग फिटमेंट शिविर

टीम रोटरी न्यूज़

डीजी बी इलांगकुमारन (बीच में) गिफ्ट ऑफ मोबिलिटी प्रोजेक्ट चेयर डॉ अरविंद कार्तिकेयन (दाएं से तीसरे) और रोटरी क्लब मेट्टुपालयम के प्राइम मेंबर्स की मौजूदगी में लाभार्थी को मोटरयुक्त अंग देते हुए।

दो दिवसीय अंग फिटमेंट शिविर में रोटरी क्लब मेट्टुपालयम प्राइम, रो ई मंडल 3203, ने रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन और इनाली फाउंडेशन के साथ साझेदारी में नंजिया लिंगम्मल पॉलिटेक्निक कॉलेज, मेट्टुपालयम, में 250 विकलांगों को मोटर चालित हाथ वितरित किए।

अन्य अंग फिटमेंट शिविरों के विपरीत जहाँ प्रोस्थैटिक्स को लाभार्थियों के कटे हुए अंगों के आकार के आधार पर चुना जाता है और इस प्रकार उनके उपयोग में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है, बैटरी द्वारा संचालित नए मोटर चालित अंग सुंदर रूप से डिज़ाइन किए गए है और बहुत लचीले है ताकि विकलांग लोग प्राकृतिक हाथों के समान ही सामान्य रूप से गतिविधियाँ कर सकें, रोटरी क्लब मेट्टुपालयम प्राइम के चार्टर अध्यक्ष और *प्रोजेक्ट गिफ्ट ऑफ मोबिलिटी* के अध्यक्ष डॉ अरविंद कार्तिकेयन ने कहा।

जो विकलांग लोग उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप अपने कृत्रिम अंगों के काम नहीं कर पाने पर अवसाद से पीड़ित थे, वे मोटर चालित अंगों को प्राप्त करके खुश थे क्योंकि अब वे विभिन्न कार्य करने में सक्षम थे। कार्तिकेयन ने कहा, ''पड़ोसी राज्यों से आए लाभार्थियों को सिखाया गया कि नवीन रूप से फिट किए गए हाथों का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे करें और इस नए अंग की मदद से विभिन्न गतिविधियाँ कर सकने के ख्याल से उनके चेहरे पर आई मुस्कान देखकर हमें बहुत संतुष्टि मिली।''

इसके अलावा, क्लब ने शिविर के बाद लाभार्थियों के लिए निरंतर सेवा की व्यवस्था की है और उन सभी को एक हेल्पलाइन नंबर दिया गया है, ''ताकि विकलांगों द्वारा इनाली फाउंडेशन को किए गए फोन कॉल के बाद किसी भी दोषपूर्ण स्पेयर पार्ट्स और बैटरी को बदला जा सकें।'' फाउंडेशन के स्वयंसेवकों की एक टीम संगठित तरीके से लिंब फिटमेंट शिविर का संचालन करने हेतु मुंबई से आई थी। परियोजना अध्यक्ष कार्तिकेयन, क्लब सचिव जयरमन और अन्य सदस्यों ने कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर को एक बड़ी सफलता बनाने के लिए अच्छी तरह से समन्वय किया। DG बी इलंगकुमारन ने शिविर का दौरा किया और क्लब द्वारा की जा रही सेवा की सराहना की। ■

शब्दों की दुनिया

ए टेल ऑफ़ टू डेट्स

संध्या राव

दो पुस्तकें, दोनों भिन्न, दोनों सार्थक। ये हैं इस महीने की पेशकश।

26 जनवरी और 18 फरवरी। पहला गणतंत्र दिवस है। और गणतंत्र दिवस उस तारीख को मनाया जाता है जिस दिन संविधान लागू हुआ था, 1950 में। ये वही दिन है, जब इस साल मैंने, 15 अगस्त, 2022 को प्रकाशित एक किताब पढ़नी शुरू की। *द लास्ट हीरोज़ : फ़ुट सोल्जर्स ऑफ़ इंडियन फ्रीडम,* पी साईनाथ द्वारा लिखी पुस्तक जिसमें पहले पृष्ठ पर लिखा है, कप्तान भाऊ (रामचंद्र श्रीपति लाड), तूफ़ान सेना, कुंडल, सांगली, महाराष्ट्र। आप पूछेंगे कि ये कप्तान भाऊ कौन हैं, और उन्होंने क्या कहा था। एक स्वतंत्रता सेनानी, 2022 में उनका 100 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने कहा था, 'हमने दो चीजों के लिए लड़ाई लड़ी- स्वाधीनता और स्वतंत्रता के लिए।' हमारा देश स्वतंत्र है, लेकिन क्या हम लोग आजाद हैं? उन्होंने कहा। 'हमने स्वतंत्रता प्राप्त की।' रुको, सोचो, और उनके शब्दों के मायने उतरने लगते हैं। हमारा देश स्वतंत्र है, लेकिन क्या हम लोग भी स्वतंत्र हैं?

कई वर्षों तक खोज कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शेष बचे कुछ पैदल सैनिकों के अनुभव रिकॉर्ड करने के दौरान, पुरस्कार विजेता पत्रकार साईनाथ ने देश भर की महिलाओं और पुरुषों की प्रेरक कहानियां ढूंढ निकाली हैं। वे गुमनाम, अज्ञात नायक हैं जिनकी प्रतिबद्धता और बहादुरी के बिना, ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता संभव नहीं थी। आखिरकार, लोगों के बिना कोई क्रांति संभव भी नहीं है, भले वो कितनी ही अहिंसक ही क्यों न हो। ना ही बिना किसी नेता के। हालांकि, अफ़सोस की बात तो ये है कि आजादी के बाद उनमें से कइयों को न सिर्फ भुला दिया गया, बल्कि उन्हें काफी दिक़्क़तें और मुश्किलात का भी सामना करना पड़ा। यूँ कहने को तो स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता के लिए एक सरकारी योजना भी मौजूद है, पर इसमें मुआवजा बहुत कम है, बल्कि सहायता प्राप्त करने के मानदंड भी कठोर है।

ओडिशा के कोरापुट में रह रही जयपुर से लक्ष्मी इंदिरा पांडा को ही लें । 'सिर्फ इसलिए कि मैं कभी जेल नहीं गई, मैंने राइफल से प्रशिक्षण लिया पर कभी किसी पर गोली चलाने का मौका नहीं मिला, तो क्या इसका ये मतलब है कि मैं स्वतंत्रता सेनानी नहीं हूं?' उस समय बर्मा में जन्मी लक्ष्मी, या लखमी के माता पिता रेलवे लाइन बिछाने का काम करते थे, वो कहती हैं कि उनके माता-पिता एक ब्रिटिश बम धमाके में मारे गए थे। उसके बाद से ही वह अंग्रेजों से बदला लेना चाहती थी और इसलिए वह किशोरावस्था में ही नेताजी की आईएनए (इंडियन नेशनल आर्मी) में भर्ती हो गईं। पुस्तक में राइफल के साथ उसकी एक बहुत पुरानी तस्वीर भी है और वो मिली कैसे, उसे खोज निकालने के लिए एक पत्रकार को धन्यवाद है जिसका एक युवा मित्र कभी-कभी अपनी दादी की दवाइयाँ खरीदने के लिए पैसे मांगता था और इस तरह जिज्ञासावश और कुछ हद तक संदेह की वजह से पत्रकार ने कुछ खुदाई की तो पता चला कि ये दादी कोई और नहीं बल्कि लखमी थी, जो 13 साल की उम्र में आईएनए के वन शिविरों में युद्ध करने वालों के लिए खाना बनाती थी। वर्तमान में, कई वर्षों से वह घरेलू सहायिका के रूप में काम कर रही थी।

साईनाथ द्वारा संग्रहित इन कहानियों को पढ़कर आप विचलित हो जाएंगे और प्रेरित भी होंगे, ये संग्रह उनके द्वारा स्थापित 'पीपुल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इंडिया'(PARI), ऑनलाइन पर उपलब्ध है। मजे की बात ये यह है कि पुस्तक का हर अध्याय पारी स्वतंत्रता सेनानी गैलरी के लिए एक क्यूआर कोड के साथ समाप्त होता है, आप क्लिक करेंगे तो और अधिक जानकारी मिलेगी। लेकिन कैप्टन भाऊ के पास चलते हैं। 1943 में, जब बंगाल में भीषण अकाल भड़का था, उन्होंने और उनके भूमिगत साथी क्रांतिकारियों ने पुणे-मिराज ट्रेन को रोक दिया और इसकी कमान संभाली थी, जो ब्रिटिश पेरोल पर काम कर रहे लोगों का वेतन ले जा रही थी। उन्होंने ₹19,175 रुपये की बड़ी राशि छीन ली थी, इस राशि से उस समय 60,000 किलोग्राम से अधिक चावल खरीदे जा सकते थे। कैप्टन भाऊ तीखे स्वर में कहते हैं, ''नहीं, यह कहना गलत है कि हमने ट्रेन लूटी'' 'ब्रिटिश शासकों ने भारतीय लोगों से जो धन लूटा था, हमने उसे वापस लिया है।'

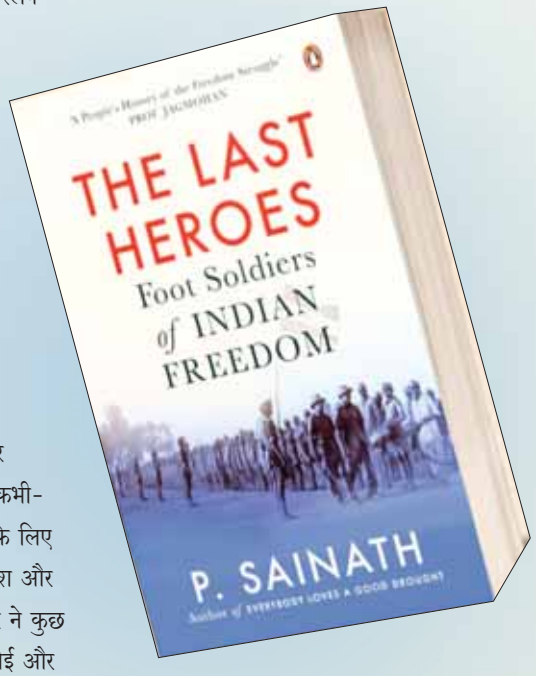

मल्लू स्वराजम ने सिर्फ एक गुलेल से अंग्रेजों का सामना किया था; बाजी मोहम्मद ने अपने दल का नेतृत्व करते हुए उनसे कहा था, 'मर जाएंगे लेकिन हम मारेंगे नहीं'; जब गांधीवादी एचएस दोरेस्वामी के लिए अंग्रजों ने उनका गाँव जला दिया और लूट लिया था तो, देमती देई 'सलिहान' ने अंग्रेज अधिकारियों को सिर्फ अपनी लाठियों से खदेड़ दिया था इसके विपरीत, जबकि दोरेस्वामी की कलम ही उनकी लाठी थी: जब अंग्रेज सरकार अखबारों के पीछे पड़ी, 'कलेक्टर ने नहीं पूछा कि मैं इतने सारे अखबारों को पंजीकृत क्यों कर रहा हूं ... वो एक अखबार बंद करते, तो मैं दूसरा लॉन्च कर देता। इस तरह जब उन्होंने *पौरवानी* को बंद किया, तो मैंने *पौरवीरा* शुरू कर दिया। इनकी रणनीतियाँ आश्चर्यजनक हैं, और उनका संकल्प अद्भुत। ये हमें सिर्फ पढ़ने से ही मालूम पड़ेगा, की हमारी धरती पर किस तरह के कितने स्पष्ट और ईमानदार लोग रहे हैं और उनकी स्मृति को सम्मान देने का सिर्फ यही तरीका है, सभी के लिए स्वतंत्रता, सब के लिए। ये है 26 जनवरी।

18 फरवरी यकीनन भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रकृतिवादियों और वन्यजीव फोटोग्राफरों में से एक की पुण्यतिथि है और वो निर्विवाद रूप से एक प्रकृतिवादी, फोटोग्राफर और लेखक तीनों का श्रेष्ठ उदाहरण है। 1950 से, जब भारत गणतंत्र बना, 1996 तक, जब उनकी मृत्यु हुई, 46 वर्षों तक उन्होंने द अंग्रेजी समाचार पत्र *स्टेट्समैन* में प्राकृतिक इतिहास पर निर्बाध रूप से 'कंट्री नोटबुक' नामक एक स्तंभ लिखते रहे। कृष्णन को ब्लैक एंड व्हाइट फोटोग्राफी, हर

ये हमें सिर्फ पढ़ने से ही मालूम पड़ेगा, की हमारी धरती पर किस तरह के कितने स्पष्ट और ईमानदार लोग रहे हैं और उनकी स्मृति को सम्मान देने का सिर्फ यही तरीका है, सभी के लिए स्वतंत्रता।

लक्ष्मी इंदिरा पांडा

प्रकार का वन्य जीवन, उस के सभी रूपों का जबरदस्त शौक था और साथ में तमिल और अंग्रेजी भाषाओं का भी। अंतिम रूचि स्पष्ट रूप से उनके पिता ए माधविया से विरासत में मिली थी, जिन्हें 1898 में, तमिल में पहला यथार्थवादी उपन्यास-*पद्मावती चरित्रम*-प्रकाशित करने का श्रेय दिया जाता है। मद्रास के मायलापुर के वन्य क्षेत्र में खेलते कूदते बड़े हुए कृष्णन को बचपन में ही पक्षी जीवन से लगाव पैदा हो गया, थोड़ा बहुत काले हिरन और सियार से भी और सिर्फ 11 साल की उम्र में उनका पालतू जानवर था, एक नेवला ।

प्रशिक्षण से वकील, उन्होंने विभिन्न प्रकार की नौकरियां की, अंततः घूमते घूमते भाग्य उन्हें संदूर नाम की एक छोटी रियासत में ले गया जो आज कर्नाटक में है। इस सुरम्य घाटी की पहाड़ियों, जंगलों, खेतों और जंगल की झाड़ियों ने उन के प्रकृति प्रेम को और पल्लवित कर दिया और उन्हें वह बना दिया जो वह थे, प्रकृतिवादी। संदूर को 1949 में भारतीय संघ में शामिल कर लिया गया जिसके बाद कृष्णन मद्रास लौट आए और एक प्रकृतिवादी, लेखक और फोटोग्राफर के रूप में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

उनकी ज़्यादा पुस्तकें नहीं छपी हैं। लेकिन एक बहुत ही खास, बल्कि, एक सीमित संस्करण, उनकी तस्वीरों और लेखों की एक स्मारक पुस्तक है जिसका शीर्षक है, *आई इन द जंगल* जिसे टीएनए पेरुमल के साथ आशीष और शांति चंदोला ने संकलित किया है जिसे 2006 में यूनिवर्सिटी प्रेस (इंडिया) द्वारा प्रकाशित किया गया। उनके निधन से कुछ समय पहले, मुझे कृष्णन का साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वहाँ अपने कमरे में, बड़े करीने से लेबल किए गए निगेटिव्स के बंडल और काले और सफेद फोटो और प्रकृति के चित्र से घिरे बैठे थे, मैं मंत्रमुग्ध थी, कहानियों में डूबी हुई, असली कहानियाँ, उन्होंने एक घंटे से अधिक का समय दिया। वह एक उत्कृष्ट कथाकार थे। मुझे एक किस्सा विशेष रूप से याद है कि कैसे एक उग्र जंगली नर हाथी उनके सामने पड़ गया था और हाथी को अपनी मानव गंध से दूर रखने के लिए उन्होंने हाथी के गोबर को अपने पूरे शरीर पर मला था।

पुस्तक में रामचंद्र गुहा द्वारा बनाये गए जीवनी रेखाचित्र, शानदार तस्वीरों का बाहुल्य और कृष्णन के लेखन के महत्वपूर्ण अंशों का संवेदनशील चयन है। यहाँ दक्षिणी मकाक, बंदर की एक प्रजाति रोचक उल्लेख है, जिसका शीर्षक है 'द मिसेन्थ्रोपॉइड' है: 'जब अपनी चंचल पशुवत हरकतों से थक जाता है, तो मकाक एक चट्टान पर या एक ऊँची डाल पर जा के बैठ जाएगा, और आप देखेंगे कि यह वास्तव में कितना चिढ़ा हुआ और असंतुष्ट है। बस बैठा रहता है, उदास और गमगीन, और क्षितिज को ताकता रहता है। भले चारों तरफ सूरज का प्रकाश बिखर रहा हो, सब कुछ खूबसूरत, जगमग और प्रफुल्लित हो, लेकिन यह मौन और उदास है, अपने भीतर छिपे हुए दुखों के बारे में सोच रहा है। शायद यह बुद्धि और कारण से उपजे असमंजस की पहली झलक से परेशान है, क्योंकि ये चीजें अपनी क्रमिक विकास की प्रारंभिक अवस्था में बहुत ही अप्रिय लग सकती हैं। काश ये थोड़ा सा और विकसित होता - तब कितना आत्मसंतुष्ट और शांत महसूस करता, जैसे इसकी अगली पीढ़ी! कितना सटीक विवरण है!

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

विरुधुनगर सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में लड़कियों का नवीन शौचालय खंड

वी मुत्तुकुमारन

तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले के एक औद्योगिक शहर, राजपलयम, में एक सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में अन्य सुविधाओं के साथ लड़कियों के शौचालय खंड की स्थापना हेतु अच्छी तरह से निष्पादित एक वैश्विक अनुदान परियोजना ने उसके छात्रों और शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया। रोटरी क्लब राजापलयम किंग्स सिटी, रो ई मंडल 3212, और मंडल स्टूअर्ड्शिप उपसमिति के अध्यक्ष एन गोपालकृष्णन कहते है, ''जब हमने स्कूल में गणतंत्र दिवस मनाया तो शुभकामनाओं सहित प्रसन्न चेहरे देखकर हमें खुशी मिली।''

हर तीन महीने में क्लब की अनुदान समिति, एन ए अन्नप्पा राजा मेमोरियल हायर सेकंडरी स्कूल का दौरा करके रोटरी सुविधाओं का निरीक्षण करेगी जैसे - लड़कियों के लिए एक आधुनिक शौचालय खंड, एक आर ओ संयंत्र, टच स्क्रीन के साथ दो इंटरैक्टिव बोर्ड, एक वाईफाई लिंक, एक जिम; और खेल उपकरणों एवं संगीत वाद्ययंत्रों की एक श्रृंखला - जिन्हें ₹48.57 लाख की लागत से स्थापित किया गया। यह वैश्विक अनुदान परियोजना PDG पी एन बी मुरुगदोस (2020-21) के कार्यकाल के दौरान शुरू की गई थी, जब हमारे चार्टर अध्यक्ष जॉन सेल्वराज को स्कूल के हेडमास्टर ए रमेश से जर्जर शौचालय को एक नवीन स्वच्छता खंड में परिवर्तित करने का अनुरोध मिला क्योंकि लड़कियों को इसका उपयोग करने में शर्म आती थी,'' वह कहते है।

अनुदान पैनल की स्कूल प्रतिनिधियों के साथ हुई एक बैठक के बाद वैश्विक अनुदान हेतु एक आवेदन किया गया। DG मुरुगदोस ने DDF से 17,500 डॉलर जारी किए और रोटरी क्लब शिवकाशी के रोटेरियन एस महेश्वरन से 30,000 डॉलर की व्यवस्था की जिसमें से केवल 15,000 डॉलर का उपयोग किया गया था। और रो ई मंडल 3212 के आठ क्लबों से दान और योगदान भी प्राप्त हुए। नए खंड में 25 लड़कियों के लिए एक शौचालय हेतु TRF के दिशानिर्देशों का पालन किया गया और रोटरी क्लब फार्गो मूरहेड ए एम, रो ई मंडल 5580, यूएस, वैश्विक साझेदार था।

तमिलसेल्वी (कक्षा 9) कहती है, ''नवीन शौचालय खंड शानदार एवं साफ-सुथरा है; और वॉशबेसिन के कारण हम दोपहर के भोजन के समय अपने हाथों को आसानी से साफ कर सकते है। अब मुझे स्कूल जाना पसंद है।'' प्रधानाध्यापक रमेश को विश्वास है कि इन नए शौचालयों की वजह से अधिक लड़कियों का नामांकन होगा। इस स्कूल में 820 लड़के, 630 लड़कियां है। ''65 इंच के दो इंटरैक्टिव बोर्ड डिजिटल शिक्षा की सुविधा प्रदान करेंगे जबकि खेल और संगीत वाद्ययंत्र उन्हें पाठ्येतर गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करेंगे।''

क्लब अध्यक्ष बी कुमार राजा खुश है कि ''हमने एक योग्य स्कूल में उन छात्रों के साथ एक वैश्विक अनुदान परियोजना की जिनके माता-पिता ज्यादातर कपड़ा मिलों और कारखानों में काम कर रहे है।'' DG वी आर मुथु ने PDG मुरुगदोस, मंडल अनुदान उपसमिति के अध्यक्ष ए एस पी अरुमुगसेल्वन, स्कूल सचिव एन आर कृष्णमूर्ति और AG ए के भास्करन की उपस्थिति में इन नई सुविधाओं का उद्घाटन किया। ■

खेल उपकरणों के उद्घाटन समारोह में डीजी वि आर मुत्तु (दाएं)।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

भिवाड़ी के लिए आपातकालीन एम्बुलेंस

क्लब की ओर से रोटेरियन को आपातकालीन एंबुलेंस की चाबी सौंपते हुए जोधपुर नगर निगम आयुक्त रोहिताश्व तोमर।

हैनान क्लाइमेट सिस्टम से सीएसआर फंड की मदद से, रोटरी क्लब भिवाड़ी, रो ई मंडल 3053 ने शहर में आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं के लिए रोटरी ट्रस्ट भिवाड़ी को एक एम्बुलेंस सौंपी। इस परियोजना का उद्घाटन नगर निगम जोधपुर के आयुक्त रोहिताश्व तोमर ने किया। ■

ओडिशा में सार्वजनिक छवि के लिए पहल

रोटरी क्लब राउरकेला रॉयल्स द्वारा रोटरी टॉवर क्लॉक।

ओडिशा में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के लिए, रोटरी क्लब राउरकेला रॉयल्स, रो ई मंडल 3261, ने शहर में 22 फीट का एनालॉग क्लॉक टॉवर स्थापित किया। टॉवर के ऊपर एक चार फुट व्यास की घड़ी है, जिसके नीचे रोटरी लोगो के साथ इनबिल्ट जीपीएस तकनीक है। घड़ी के चार चेहरे हैं और इसे हर तरफ से देखा जा सकता है। ■

वलसाड में चिकित्सा शिविर

शिविर में आंखों की जांच।

रोटरी क्लब सूरत तापी, रो ई मंडल 3060, गोपाल चैरिटेबल ट्रस्ट और लोक मंगलम चैरिटेबल ट्रस्ट ने मिलकर जमालिया गांव, वलसाड में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। इस शिविर से कुल ₹2.1 लाख की लागत से 1,000 से भी ज्यादा मरीज लाभान्वित हुए। क्लब दो महीने में एक बार इन शिविरों का आयोजन करता है। ■

मूडबिद्री में डायलिसिस सेंटर

डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन।

रोटरी क्लब मूडबिद्री, रो ई मंडल 3181 ने जीवी पई मेमोरियल अस्पताल, मूडबिद्री में पूरी तरह से सुसज्जित तीन-मशीन डायलिसिस केंद्र स्थापित किया है। 36,000 डॉलर मूल्य के वैश्विक अनुदान में रोटरी क्लब न्यू टाम्पा नून, रो ई मंडल 6890, यूएसए द्वारा भागीदारी की गई थी। ■

Music & Melody

वाणी जयराम

एक अद्भुत आवाज़ मौन

एस आर मधु

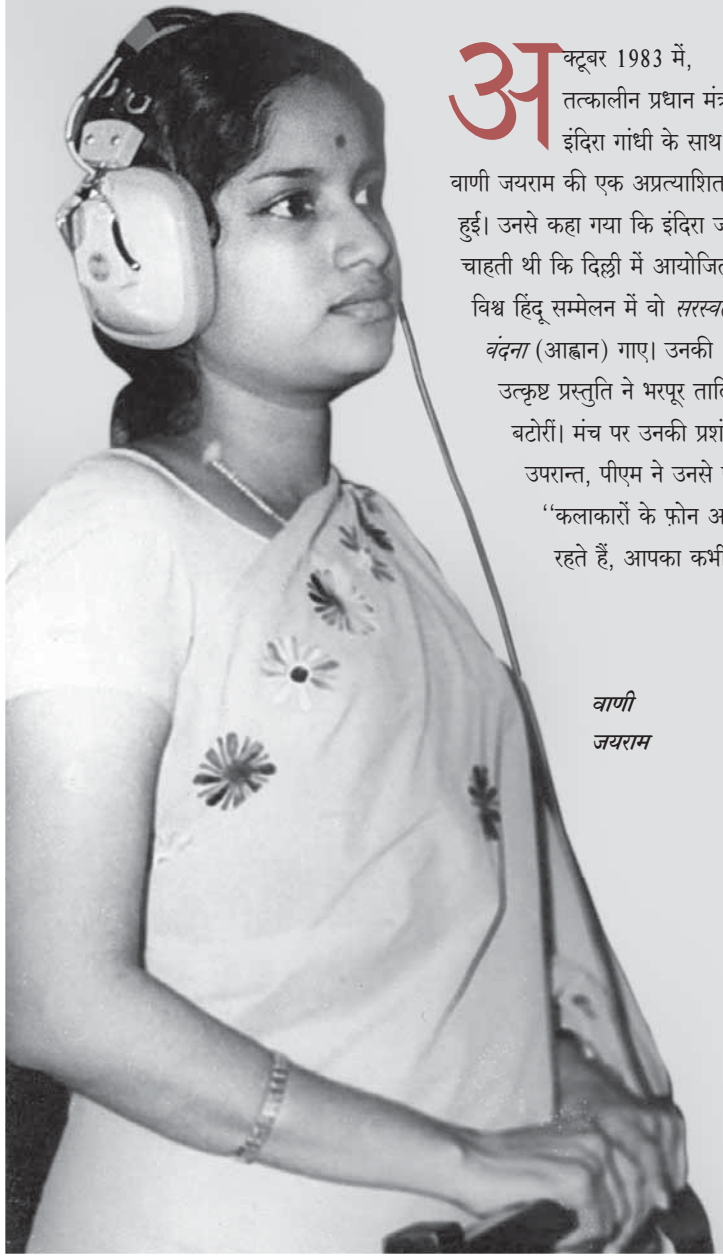

वाणी जयराम

अक्टूबर 1983 में, तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के साथ वाणी जयराम की एक अप्रत्याशित भेंट हुई। उनसे कहा गया कि इंदिरा जी चाहती थी कि दिल्ली में आयोजित विश्व हिंदू सम्मेलन में वो *सरस्वती वंदना* (आह्वान) गाए। उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति ने भरपूर तालियाँ बटोरीं। मंच पर उनकी प्रशंसा के उपरान्त, पीएम ने उनसे पूछा: ''कलाकारों के फ़ोन आते रहते हैं, आपका कभी नहीं आया, क्यों?'' वाणी थोड़ी विचलित हुई और बोली, ''मैं तो एक साधारण नागरिक हूं और आप प्रधानमंत्री हैं, आपको मैं कैसे परेशान कर सकती हूं?'' पीएम अपने पीए की तरफ मुड़ी और बोली ''वाणी जयराम से सोमवार को मिलने का समय निश्चित करें।'' बाद में, इंदिरा ने बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत किया और बहुत विनम्रता, तस्सली और इत्मीनान से बातें की।

वाणी के 50 साल के शानदार करियर में कई अति विशिष्ट व्यक्तियों से हुई मुलाकातों में से यह एक है। उनका जन्म 1945 में वैल्लोर, तमिलनाडु में हुआ था। इस साल 4 फरवरी को 78 साल की उम्र में दुर्घटनावश उनके घर पर गिर जाने की वजह से उनकी मृत्यु हो गई और संगीत जगत स्तब्ध रह गया। 19 भाषाओं में उन्होंने करीब 10,000 से ज़्यादा गाने गाए, तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीते, दो फिल्मफेयर, एक तानसेन सम्मान और कई राज्य सरकार सम्मान, अनगिनत निजी पुरस्कार, और एक पिछले साल न्यूयॉर्क में मिला था। उनकी मृत्यु के कुछ ही दिन पहले उन्हें पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गई थी।

वाणी को चाहने वाले लाखों प्रशंसकों में कई गणमान्य और प्रतिष्ठिर लोग शामिल हैं। एक अवसर पर, दिल्ली में बंगाली एसोसिएशन में प्रस्तुति के बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा

स्वराज ने वाणी से कहा कि गुड्डी फिल्म का गाना *हम को मन की शक्ति देना* इतना प्रेरणादायक था कि वह इसे रोज़ सुनती थीं और उन्होंने वाणी को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। अपने घर पर, सुषमा ने वाणी से गाने का अनुरोध किया, और अपने पति और बेटी - और यहां तक कि अपने कुत्ते को भी - चुपचाप बैठ कर सुनने के लिए कहा।

तमिलनाडु के कई मुख्यमंत्रियों और पूर्व मुख्यमंत्रियों- कामराज, भक्तवत्सलम, करुणानिधि, एमजीआर और जयललिता ने वाणी को सराहा है और सम्मानित किया है।

जब MGR ने AIADMK पार्टी लॉन्च की थी, तो वाणी जयराम द्वारा गाया थीम गीत *वासलेंगुम रेटाई इलाइ कोलामिडुंगल* पार्टी गान बन गया।

जयललिता को, 1975 की अवनधन मनिधान जयललिता-शिवाजी अभिनीत फ़िल्म में वाणी का गीत एंगिरुन्दुरुकुरल वंदु, अदु एन देवदैयिन कुरलो (कहीं से एक आवाज़ आई, मुझे नहीं पता कि किस परी की आवाज़ थी) बहुत पसंद आया। इसका संगीत एमएस विश्वनाथन ने दिया था।

वाणी जयराम का जन्म एक संगीत परिवार में हुआ था। उनकी मां स्वयं एक गायिका थीं। आश्चर्य की बात, पांच साल की उम्र में भी रागों को पहचान लेने की विलक्षण प्रतिभा थी। उन्हें कदालुर श्रीनिवास अयंगर, टी आर बालासुब्रमण्यम और आर एस मणि ने कर्नाटक संगीत में प्रशिक्षित किया। आठ साल की छोटी उम्र में उन्होंने ऑल-इंडिया रेडियो के लिए गाया था और अपनी किशोरावस्था के दौरान भी उन्होंने कई संगीत कार्यक्रम दिए।

पंडित रविशंकर के साथ वाणी जयराम।

स्कूल और कॉलेज में भी वाणी एक मेधावी छात्रा थी, पाठ्येतर गतिविधियों - गायन, नाटक, ड्राइंग, पेंटिंग, खाना पकाने, कढ़ाई में भी पारंगत थीं और अकादमिक प्रदर्शन के साथ साथ अभिनय और गायन दोनों में पुरस्कार जीते थे। लेकिन, जिस चीज ने उन्हें आकर्षित किया वो था हिंदी फिल्म संगीत। उन्होंने कहा, ''रफी, लता, मन्ना डे, किशोर और अन्य के गीतों में माधुर्य और पूर्णता की मैं बड़ी प्रशंसक हूँ।'' हर बुधवार की शाम अमीन सयानी की बिनाका गीतमाला सुनने के लिए वो वह रेडियो से चिपक जाती थी। और वो उस कार्यक्रम में शामिल होने के सपने देखने लगीं ।

उनकी माँ अक्सर कहती थी, ''फ़िल्मी संगीत के लिए इतनी बेचैन क्यों है? शादी तक रुक जाओ। अगर तुम्हारे पति इजाज़त दे दें तो फिल्मों में भी गा लेना।''

आश्चर्य की बात, पांच साल की उम्र में भी वाणी में रागों को पहचान लेने की विलक्षण प्रतिभा थी।

ग्रेजुएशन के बाद वाणी ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी की। 1969 में, एक कॉर्पोरेट अधिकारी जयराम से उनका विवाह हुआ। वे अच्छे सितार वादक थे, जिन्हें स्वयं पंडित रविशंकर ने संगीत की शिक्षा दी थी। उन्होंने वाणी को हिंदुस्तानी संगीत सीखने के लिए राजी कर लिया। पटियाला घराने के प्रसिद्ध उस्ताद अब्दुल रहमान खान ने वाणी की आवाज़ सुन कर सुनकर सहर्ष ही उनका गुरु बनना स्वीकार कर लिया।

उस्ताद बहुत सख्त थे। उन्होंने वाणी से उनकी नौकरी छुड़वा दी और उन्हें न केवल हिंदुस्तानी संगीतकी शिक्षा दी बल्कि सुर और ताल की बारीकियां भी सिखाईं। उन्होंने उस्ताद से ठुमरी, ग़ज़ल और भजन जैसी विभिन्न शैलियों को पूरी तन्मयता के साथ सीखा। उस्ताद ने वाणी को संगीतकार वसंत देसाई से भी मिलवाया था, जो उनकी आवाज़ और प्रतिभा से बेहद प्रभावित हुए और उन्हें महान गायक कुमार गंधर्व के साथ एक मराठी एल्बम के लिए साइन किया था

और वो भी उनकी पहली फीचर फिल्म *गुड्डी* (1971) के लिए।

फिल्म हिट हुई, और अपनी पहली फिल्म में ही वाणी ने अपनी आवाज़ से सनसनी फैला दी थी; उनकी आवाज और शास्त्रीय कौशल ने जम कर प्रशंसा बटोरी। इसका क्लासिक *बोले रे* पपीहारा गीत, हर जगह गुनगुनाया गया और शास्त्रीय फिल्मी गीतों के लिए प्रतिष्ठित तानसेन सम्मान सहित उन्होंने पांच पुरस्कार जीते। 16 सप्ताह तक यह बिनाका गीत माला के चार्ट में पहली पायदान पर बना रहा। ''ऐसा पहली बार हुआ था और ख़ुशी के मारे मैं रो पड़ी,'' उन्होंने कहा। फिल्म का बच्चों पर फिल्माया गया कोरस गीत, *हम को मन की शक्ति देना* ने भी बिनाका चार्ट में दस्तक दी थी । उत्तर भारत के कई स्कूलों में ये स्कूल की प्रार्थना बन गई। वाणी ने वसंत देसाई के साथ पूरे महाराष्ट्र में दौरा किया और इस गीत के साथ बच्चों को अन्य गीत भी सिखाए।

बॉलीवुड के शीर्ष संगीतकारों में वाणी की मांग बढ़ने लगी। आने वाले कई उल्लेखनीय गीतों में से एक था नौशाद के लिए *पाकीज़ा* (1972) का *मोरा साजन सौतन घर जाए*। लेकिन *गुड्डी* की सफलता को फिर से नहीं दोहराया जा सका। बॉलीवुड में वाणी की अगली बड़ी फिल्म क्लासिक *मीरा* (1979) हिट हुई थी। उस्ताद रविशंकर के संगीत में, *मेरे तो गिरिधर गोपाला* सहित 12 आकर्षक भजन गाए, जिसमें उन्होंने सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता था।

तमिल और दक्षिण भारतीय सिनेमा

और 1970 के दशक में, फिर हुआ तमिल और दक्षिण भारतीय सिनेमा में वाणी का युगप्रवर्तक प्रवेश। हालांकि पी सुशीला और एस जानकी जैसी गायिकाऐं तब तक भली भांति स्थापित हो चुकी थीं, पर वाणी को शीर्ष संगीतकारों, संगीत उद्योग और उनकी सुरीली आवाज, संपूर्ण स्वर, शास्त्रीय रागों के ज्ञान, उनकी गायकी के उतार चढ़ाव की विस्तृत श्रृंखला के साथ उनके मधुर स्वभाव को जनता का भरपूर प्यार मिला।

शास्त्रीय प्रशिक्षण की क्या भूमिका और क्या महत्व है, उनका कहना था, ''जब तक आप राग के रंग को नहीं समझेंगे, तब तक आप गीत के साथ न्याय नहीं कर सकते। शास्त्रीय संगीत में लिया गया प्रशिक्षण त्रुटि हीन गायकी में दक्षता निखारता है।''

1974 में, फिल्म *धीरगा सुमंगली* में संगीतकार एम एस विश्वनाथन द्वारा स्वरबद्ध किया गया वाणी का रोमांटिक गीत *मल्लिगैइन मन्नन* तमिलनाडु के हर नुक्कड़ पर बजा

वाणी जयराम फिल्म मीरा के लिए सर्वश्रेष्ठ प्लेबैक सिंगर पुरस्कार महेंद्र कपूर (प्लेबैक गायक) से प्राप्त करती हुयी।

करता था। फिर शुरू हुई एक खूबसूरत और सार्थक शुरुआत वाणी और दिग्गज चडत के बीच, जिनका कहना था कि वाणी को 20 साल पहले तमिल फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश कर जाना चाहिए था। उन्होंने सभी दक्षिणी राज्यों में कई गाने गाए। वास्तव में, वह 10 वर्षों तक मलयालम और उड़िया दोनों फिल्मों की प्रमुख गायिका रहीं।

1975 में, सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका के रूप में अपना पहला राष्ट्रीय पुरस्कार वाणी ने *अपूर्व रागगंगल* में अपने दो प्रतिष्ठित गीतों के लिए जीता - एळु स्वरंगलुक्कुल और *केल्वियिन नायगने/* (फिल्म बॉक्स-ऑफिस पर हिट रही थी, हालांकि *शोले* भी उसी दिन रिलीज हुई थी; यह उल्लेखनीय भी थी क्योंकि इसमें कमल हसन और रजनीकांत दोनों ने अभिनय किया था।) फिल्म में वाणी की बेहद खूबसूरत आवाज़ की वजह से बड़े बड़े संगीतकारों की कतार लग गई। 1977 में, *भुवना ओरु केल्वी कुरी* में *इलैयराजा* के लिए उन्होंने पहली बार गाया था और इसके दो साल बाद, फिल्म अज़गे उन्नई आराधिकिरेन (1979) के लिए इलैयाराजा द्वारा संगीतबद्ध गीत नाने नानयारो थाना के लिए उन्होंने राज्य सरकार का सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्वगायिका पुरस्कार जीता।

1980 में आई तेलुगु फिल्म शंकरभर्नम (निर्देशक के विश्वनाथ, संगीत : के वी महादेवन) ने तूफान मचा दिया था। एक शास्त्रीय गायक की गाथा, इस फिल्म में

जब तक आप राग के रंग को नहीं समझेंगे, तब तक आप गीत के साथ न्याय नहीं कर सकते। शास्त्रीय संगीत में लिया गया प्रशिक्षण त्रुटि हीन गायकी में दक्षता निखारता है।

संगीत निर्देशक वसंत देसाई और निर्देशक ऋषिकेश मुखर्जी के साथ फिल्म गुड्डी के लिए रिकॉर्डिंग करती हुयी वाणी जयराम।

शास्त्रीय राग पर आधारित एक दर्जन गीत थे, और आवाज़ थी एसपी बालासुब्रह्मण्यम और वाणी जयराम की। बाद में इसे तमिल और मलयालम में भी डब किया गया था, इसका दक्षिण भारतीय सिनेमा पर भो उतना ही जबरदस्त प्रभाव पड़ा था जितना 1952 में हिंदी फिल्म *बैजू बावरा* का पड़ा था। *मानस संचार रे* और धोराकुना गीतों के लिए वाणी जयराम को सर्वश्रेष्ठ महिला गायिका का दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

वाणी ने *मुल्लुम मलरुम* (1978), *रोसाप्पू रविक्कैकारी* (1979), *पालइवन सोलई* (1981), *अन्बुल्ल रजनीकांत* (1984), *ओरु कैदियिन डायरी* (1985) और *पुन्नगाई मन्नन* (1986) जैसी फिल्मों में सैकड़ों लोकप्रिय गीत गाए। कभी-कभी तो वह इतनी व्यस्त रहती थी कि एक ही दिन में 20 गाने भी रिकॉर्ड किया करती थी, जिनमें से कुछ बैंगलोर में होते थे!

वाणी ने सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका का अपना तीसरा राष्ट्रीय पुरस्कार जीता 1991 में, केवी महादेवन के संगीत निर्देशन में, के विश्वनाथ द्वारा निर्देशित तेलुगू फिल्म *स्वाति किरणम* के *आनतिनीय्यरा* गीत के मंत्रमुग्ध कर देने वाले गीत के लिए।

अभी हाल के वर्षों में, वाणी फिल्म उद्योग की अपेक्षा भक्ति गीतों के निजी एल्बम और सार्वजनिक संगीत कार्यक्रमों में अधिक सक्रिय थी।

वाणी का केरल सम्बन्ध

मलयालम संगीत के प्रशंसकों का वाणी के साथ हमेशा से भावनात्मक जुड़ाव रहा है, जिन्होंने मलयालम फिल्मों में करीब 600 गाने गाए थे, 1973 में फिल्म *स्वप्नम* में अपने पहले मलयाली गीत *सोरायुधाथिल विदर्नो रु* के बाद, जिसमें सलिल चौधरी का जादुई संगीत था। अनगिनत बेहतरीन गीतों के लिए उन्होंने लगभग सभी प्रमुख संगीतकारों के साथ काम किया है।

कर्नाटक संगीत की गायिका नित्यश्री महादेवन कहती हैं कि वाणी जयराम की आवाज किसी भी पिच, किसी भी सप्तक पर आकर्षित और मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी। संगीत समीक्षक सुरेंद्रन मेनन ने कहा कि अगर वाणी 2023 में 1973 का गाना गाएंगी तो *श्रुति* वही होगी। (''मेरा शरीर बूढ़ा हो गया है, मेरी आवाज नहीं हुई है , वाणी ने खुद टिप्पणी की थी।'')

संगीतकार देवा (देवनेसन) ने कहा था कि वाणी कई शैलियों में बड़ी सहजता से गा सकती है। एसपीबी की तरह, वह एक गाना रिकॉर्ड करने के लिए 15 मिनट से भी कम समय में तैयारी कर लेती थी और किसी भी

गीत की पेचीदगियों और बारीकियों को बहुत जल्दी समझ जाती थी। आभास्वरम रामजी ने कहा कि इतनी अधिक भाषाओं में भक्ति गीत गाने वाली एकमात्र गायिका वाणी ही हैं।

वाणी जयराम अपनी विनम्रता (उन्होंने स्वयं का कभी प्रचार या प्रसार नहीं किया) और अपने शास्त्रीय जड़ों से जुड़ाव के लिए प्रसिद्द थीं। हालाँकि, ये प्रशंसनीय गुण बॉलीवुड में लम्बे चलने के अनुकूल नहीं थे।

वाणी से जब भी पूछा जाता कि क्या मंगेशकर एकाधिकार ने उनके बॉम्बे करियर को समाप्त कर दिया। बस वो मुस्कुराती और कहती कि वह खुद लता की बहुत बड़ी प्रशंसक रही हैं और लता के गीतों को सुनकर बड़ी हुई है, अपने कॉलेज के दिनों में उनके कई गाने गाए थे। उन्होंने अत्यंत शालीनता से कहा, लता मंगेशकर सिर्फ एक ही हो सकती हैं।

हिंदी फिल्म संगीत निर्देशक जयदेव के साथ वाणी जयराम।

वाणी से जब भी पूछा जाता कि क्या मंगेशकर एकाधिकार ने उनके बॉम्बे करियर को समाप्त कर दिया। बस वो मुस्कुराती और कहती कि वह खुद लता की बहुत बड़ी प्रशंसक रही हैं। उन्होंने अत्यंत शालीनता से कहा, लता मंगेशकर सिर्फ एक ही हो सकती हैं।

अभिनेता वाईजी महेंद्र का कहना है कि संगीतकार एमएसवी ने उन्हें कहा था कि वाणी का गला ''ब्लॉटिंग पेपर है!'' यह तुरंत कुछ भी ग्रहण कर सोख सकता है।

लता मंगेशकर के साथ।

YGM ने कहा: ''हम भाग्यशाली हैं कि वाणी बॉम्बे में नहीं रहीं और तमिलनाडु लौट गईं। यह देवी सरस्वती के लौट आने जैसा था, और दक्षिण भारतीय सिनेमा के लिए ये वरदान था। उन्होंने कभी पुरस्कार की चाह नहीं की; वे चल कर उनके पास आए। उनका सेंस ऑफ ह्यूमर भी बहुत अच्छा था और वह मेरे सभी जोक्स पर हंसती थीं।''

उन्होंने याद किया कि 1975 में बंबई में जब एक लिफ्ट दुर्घटना में उनके गुरु वसंत देसाई की मृत्यु हो गई थी, तब वाणी बहुत उत्तेजित हुई थी। उन्होंने टिप्पणी की थी, ''इस तरह किसी को भी नहीं मरना चाहिए।'' लेकिन खुद अपने ही घर में दुर्घटनावश गिर जाने से उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने कहा, ''उन्हें इस तरह नहीं जाना चाहिए था, संगीत की दुनिया को देने के लिए उनके पास अभी बहुत कुछ बाकी था।''

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय डेस्क से

2022-23 वार्षिक कोष चुनौती

हमारे मंडलों/क्लबों/सदस्यों के पास वार्षिक निधि में उनके योगदान के लिए एक विशेष मान्यता अवसर है। इस रोटरी वर्ष में ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के RRFCयों को एक पूरी तरह से नई वार्षिक कोष चुनौती के साथ आने के लिए धन्यवाद जिससे आपको न केवल इस वर्ष के लिए अपने वार्षिक कोष लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलती है बल्कि आपको अपने दानकर्ता आधार और प्रति व्यक्ति दान को बढ़ाने का अवसर भी प्राप्त होता है। अधिक जानकारी के लिए: http://www.highroadsolution.com/file_uploader2/files/2022-23_annualfund_challenge.pdf पर जाएं

नोट: इस वर्ष एपीएफ चुनौती के लिए 1 जुलाई, 2022 से वार्षिक निधि के लिए किए गए सभी योगदानों पर विचार किया जाएगा।

- दानकर्ताओं को डुप्लिकेट आईडी बनने से बचने के लिए अपने *माई रोटरी* लॉगिन का उपयोग करना चाहिए और अपनी सदस्यता आईडी के तहत समय पर योगदान क्रेडिट प्राप्त करना चाहिए
- *माई रोटरी* लॉगिन की अनुपस्थिति में दानकर्ता ऑनलाइन योगदान करते समय अपने पंजीकृत ईमेल का भी उपयोग कर सकते है

- कंपनी/परिवार न्यास खाते से योगदान के लिए इस चैनल का उपयोग न करें। इसके बजाय आप RISAO को चेक/बैंक ड्राफ्ट भेज सकते है
- आयकर अधिनियम के तहत 80जी का लाभ प्राप्त करने के लिए, 'भारतीय रुपया' (INR) के रूप में मुद्रा का चयन करें
- व्यक्तिगत योगदान करते समय, क्लब के नेताओं को इस विकल्प का चयन नहीं करना चाहिए 'दिस डोनेशन इस फ्रॉम माय क्लब ओर इट्स मेम्बर्स।'
- 'डोनेट फ्रॉम मेम्बर्स' का विकल्प सभी क्लब के नेताओं के लिए उपलब्ध है। हालांकि 80जी की रसीद केवल उस क्लब के नेता के नाम पर उपलब्ध होगी जिनके माई रोटरी लॉगिन का उपयोग किया गया होगा
- सभी ऑनलाइन योगदानों के लिए 80जी की रसीद केवल उस व्यक्ति के नाम पर उपलब्ध की जा सकती है जिसके *माय रोटरी* लॉगिन का उपयोग किया गया हो। ■

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about *Rotary Samachar* to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication	:	Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
4. Publisher's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
5. Editor's Name	:	Rasheeda Bhagat
Nationality	:	Indian
Address	:	25, Jayalakshmipuram 1st Street Nungambakkam Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Rotary News Trust Dugar Towers, 3rd Floor 34, Marshalls Road Egmore Chennai - 600 008

I, P T Prabhakar, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008
1st March, 2023

sd/-
P T Prabhakar

साधारण व्यायाम से रक्त शर्करा को नीचे लाएं

भरत और शालन सवुर

मधुमेह से पीड़ित लोग प्रोफेसर मार्क हैमिल्टन को आशीर्वाद देने जा रहे हैं, जो टेक्सास के ह्यूस्टन विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य और मानव प्रदर्शन में विशेषज्ञता रखते हैं। वह एक सरल व्यायाम लेकर आए हैं जो पूरी तरह से किया जा सकता है - जो हैं सोलियस पुशअप।

अपनी कुर्सी पर अपने पैरों को फर्श पर सपाट करके बैठें। फिर, एड़ी को जितना हो सके उतना ऊपर उठाएं, जबकि पैर का अगला हिस्सा फर्श से संपर्क बनाए रखता है। अब एड़ियों को नीचे कर लें। ऐसा 30 बार दोहराएं। आप सप्ताहों में रेप्स बढ़ा सकते हैं और इसे पूरे दिन अपने डेस्क पर भी कर सकते हैं।

यह व्यायाम किस प्रकार मदद करता है? यह सोलियस मांसपेशी को सक्रिय करता है जो पिंडली की मांसपेशी के नीचे होती है। यह रक्त शर्करा और चर्बी को जलाता है। परिणाम: आपकी चर्बी जलती है, और आपका रक्त शर्करा गिर जाता है। खाने के बाद चलने की सदियों पुरानी समझदारी याद है? चलने का कारण यह है: खाने के बाद, आपका रक्त शर्करा बढ़ जाता है, और अग्न्याशय इंसुलिन स्रावित करता है। यह हार्मोन ग्लूकोज को कार्बोहाइड्रेट से मांसपेशियों में ले जाता है जहां इसे ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। जैसे ही ग्लूकोज मांसपेशियों में प्रवेश करता है, रक्त में इसका स्तर सामान्य स्तर तक गिर जाता है - यह प्राकृतिक प्रक्रिया है।

ग्लूकोज की कहानी

शरीर ग्लूकोज को ईंधन के रूप में उपयोग करता है जो मांसपेशियों को चलने और काम करने में मदद करता है; कुछ ग्लूकोज हमारे जिगर और कंकाल की मांसपेशियों में संग्रहीत होने के लिए ग्लाइकोजन में बदल जाता है जिसे बाद में उपयोग किया जा सकता है; और कुछ शरीर में चर्बी के रूप में संग्रहीत होने के लिए फैटी एसिड में परिवर्तित हो जाते हैं।

हालांकि, जब शरीर इंसुलिन के प्रभाव को रोकता है तो ये प्राकृतिक प्रक्रियाएं बाधित और पटरी से उतर जाती हैं। यह रक्त में ग्लूकोज को लटकाए रखता है जो प्री-डायबिटीज की ओर ले जाता है और यदि नियंत्रित या उलटा नहीं होता है, तो टाइप 2 मधुमेह हो जाता है।

सुझाव: 5 किलो वजन घटाएं। सालों पहले, डॉक्टर ने मुझे 5 किलो वजन कम करने के लिए कहा था क्योंकि मैं प्री-डायबिटिक स्टेज पर पहुंच चुकी थी। मैंने किया था। और यह काम कर गया! यदि जीवनशैली में कोई बदलाव नहीं किया जाता है, तो यह अधिक चर्बी का कारण बन सकता है जिससे मोटापा और बाद में, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और गुर्दे की समस्याएं हो सकती हैं।

इस वृद्धि को रोकने के लिए, डॉक्टर हमें अपना आहार देखने और रोजाना चलने के लिए कहते हैं। शरीर को रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करने के लिए हमें भोजन के बाद 30 मिनट तक चलने की भी सलाह दी जाती है।

क्यों चलते हैं?

जब हम चलते हैं तो हमारे पैरों की मांसपेशियां सिकुड़ती हैं और रक्त प्रवाह पर दबाव डालती हैं। मजबूत रक्त प्रवाह, इंसुलिन की सहायता से, ग्लूकोज को मांसपेशियों में धकेलता है। हालांकि, जब शरीर में अतिरिक्त चर्बी बढ़ जाती है और व्यायाम नहीं होता है, तो उसे मांसपेशियों में ग्लूकोज को ले जाने के लिए अधिक से अधिक इंसुलिन की आवश्यकता होती है। मांसपेशियों पर अत्यधिक काम करने वाले ग्लूकोज रिसेप्टर्स इंसुलिन के प्रयासों के प्रति कम संवेदनशील और अधिक प्रतिरोधी बन जाते हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि खाने के आधे घंटे के भीतर 30 मिनट का चलना खाने के बाद रक्त शर्करा को गतिहीन होने की तुलना में 50 गुना कम कर सकता है। चलने के अच्छे प्रभाव हमारे संविधान और चलने की तीव्रता के आधार पर 24 से 48 घंटे तक चल सकते हैं।

स्वस्थ नाश्ता

हर किसी का खाने के बाद तेज गति से चलने का मन नहीं करता है। यहीं पर प्रोफेसर हैमिल्टन का सोलियस पुशअप गेम-चेंजर बन गया। आपको अपनी कुर्सी से उठने की आवश्यकता नहीं है। खाने के बाद बस अपनी एड़ियों को 30 बार ऊपर और नीचे करें। अपने डेस्क पर काम करते समय, टीवी देखते हुए, वेटिंग रूम में, आने-जाने के दौरान इसे करें... चूंकि सक्रिय रहना स्वस्थ है, फिटनेस पेशेवर पूरे दिन में 270 मिनट या 4.5 घंटे सोलियस पुशअप करने की सलाह देते हैं। आप इसे खड़े रहकर भी कर सकते हैं। जर्मनी में, हृदय रोगियों के लिए पुनर्वास कार्यक्रमों में स्टैंडिंग सोलियस पुशअप्स शामिल हैं। इसे एक स्वस्थ स्नैक के रूप में देखें जिसे दिन में कभी-कभी क्रंच किया जा सकता है। आपके दांतों की जगह आपके पैर क्रंचिंग करते हैं।

चलना या पुशअप्स?

आप सोच रहे होंगे कि चलने के लिए सोलियस पुशअप कितना समान या अलग है? मैंने जो समझा है, ये पुशअप्स चलने की तुलना में भोजन के बीच न खाने की अवधि में चयापचय की सामान्य दर को दोगुना दिखाते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि हम इन पुशअप्स से तेजी से चर्बी कम करते हैं? यहां, मैं इंतजार करना और देखना चाहता हूं क्योंकि यह अभी भी एक नई खोज है और अधिक शोध, संगणना और तुलनात्मक अध्ययन को सुनिश्चित करने के लिए लंबे समय तक किए जाने की आवश्यकता है।

इसलिए, अटकलबाजी या गणना के बजाय, नियमित रूप से चलना न छोड़ें क्योंकि यह एक बेहतरीन समय-परीक्षणित आदत है। बस इन सोलियस पुशअप्स को जोड़ें क्योंकि सोलियस मसल को मजबूत करने के अन्य महत्वपूर्ण लाभ हैं: एक, क्योंकि यह हृदय में रक्त के प्रवाह में सहायता करता है, जितना अधिक हम इसे प्रशिक्षित करेंगे, रक्त परिसंचरण उतना ही अधिक होगा। हृदय को अधिक ऑक्सीजन, अधिक पोषक तत्व मिलते हैं और वह मजबूत होता है। दो, जब हम सीधे खड़े होते हैं, चलते हैं, दौड़ते हैं या नृत्य करते हैं तो शरीर को लगातार स्थिर करने के लिए सोलियस मांसपेशी को प्रकृति द्वारा विशेष रूप से डिजाइन किया गया है। यह सुनिश्चित करता है कि हम आगे न गिरें। संक्षेप में, हमारा सोलियस जितना मजबूत होगा, हमारी स्थिरता उतनी ही अधिक होगी।

जीवनशैली में बदलाव

अपने पैरों की आवाज़ को उस सामान से दूर चलना सीखें जो आपको वजन बढ़ा सकता है या आपके रक्त शर्करा के स्तर को बढ़ा सकता है। कुछ सुझाव:

~ मध्यम खाओ। अपनी प्लेट को इस प्रकार विभाजित करें - आधी प्लेट सब्जियां, एक चौथाई कार्बोहाइड्रेट जैसे ब्राउन राइस, साबुत गेहूं या बाजरा, एक चौथाई प्रोटीन पनीर, दालें, टोफू और एक कटोरी कम चर्बी वाला दही। बाजरा गेहूं पर जीतता है क्योंकि वे ग्लूटेन मुक्त होते हैं, कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, फाइबर होता है और इस कारण से सिस्टम में धीरे-धीरे रक्त शर्करा जारी करता है। ये आंत में सूजन को भी कम करते हैं। खाने के साथ नहीं, अलग से फल खाएं। कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले चुनें: चेरी, सेब, संतरा, नाशपाती, स्ट्रॉबेरी, प्लम, आड़ू; सूखे मेवों में: खुबानी और खजूर। लेकिन इनका ज्यादा सेवन न करें।

~ अपने जीवन में तनाव को कम करें। दिन के किसी भी उपयुक्त समय पर व्यायाम करें और सोते समय पैर के अंगूठे से सिर तक शरीर के प्रत्येक भाग को सचेत रूप से शिथिल करने की धीरे-धीरे आराम दें। ज्यादातर बार मौन जीत जाता है!

~ धूम्रपान छोड़ दें। मधुमेह हृदय रोग, नेत्र विकृति, गुर्दा रोग, तंत्रिका क्षति, और पैर की समस्या के जोखिम को बढ़ाता है।

~ शराब भी छोड़ दें। या 1 या 2 मानक पेग पर टिके रहें, अधिक नहीं। इसके साथ प्रोटीन जैसा भुना हुआ चना खाएं. अल्कोहल एक कार्बोहाइड्रेट है, इसलिए आलू वेफर्स की तरह एक और कार्ब एक बुरा विचार है। शराब की जगह जामुन के रस का सेवन करें - यह हमारे रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है।

प्रिय पाठकों, स्वस्थ जीवन जिएं।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और*
बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली
डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस*
फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

बेहतर विकल्प की ओर

प्रीति मेहरा

अगर हम प्रदूषण मुक्त दुनिया चाहते है तो स्थायी गतिशीलता महत्वपूर्ण है।

चार साल पहले, बीस टियर-1, टियर-2 और टियर-3 शहरों में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, शहरी भारत का एक औसत नागरिक एक महीने में लगभग 1000 किमी या एक दिन में लगभग 35 किमी की यात्रा करता है। जब आप इस अनुमान के निष्कर्ष के आधार पर हमारी जितनी बड़ी आबादी द्वारा तय की गई कुल दूरी निकालते है, तो आपको पता चलता है कि यह प्रतिदिन लाखों किलोमीटर हो जाते है। इसका मतलब है कि सामूहिक रूप से हम वायुमंडल को प्रदूषित करने के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। याद रखिये, वाहनों के उत्सर्जन से भारत में वायुमंडल के पार्टिकुलेट मैटर (पीएम 2.5) का

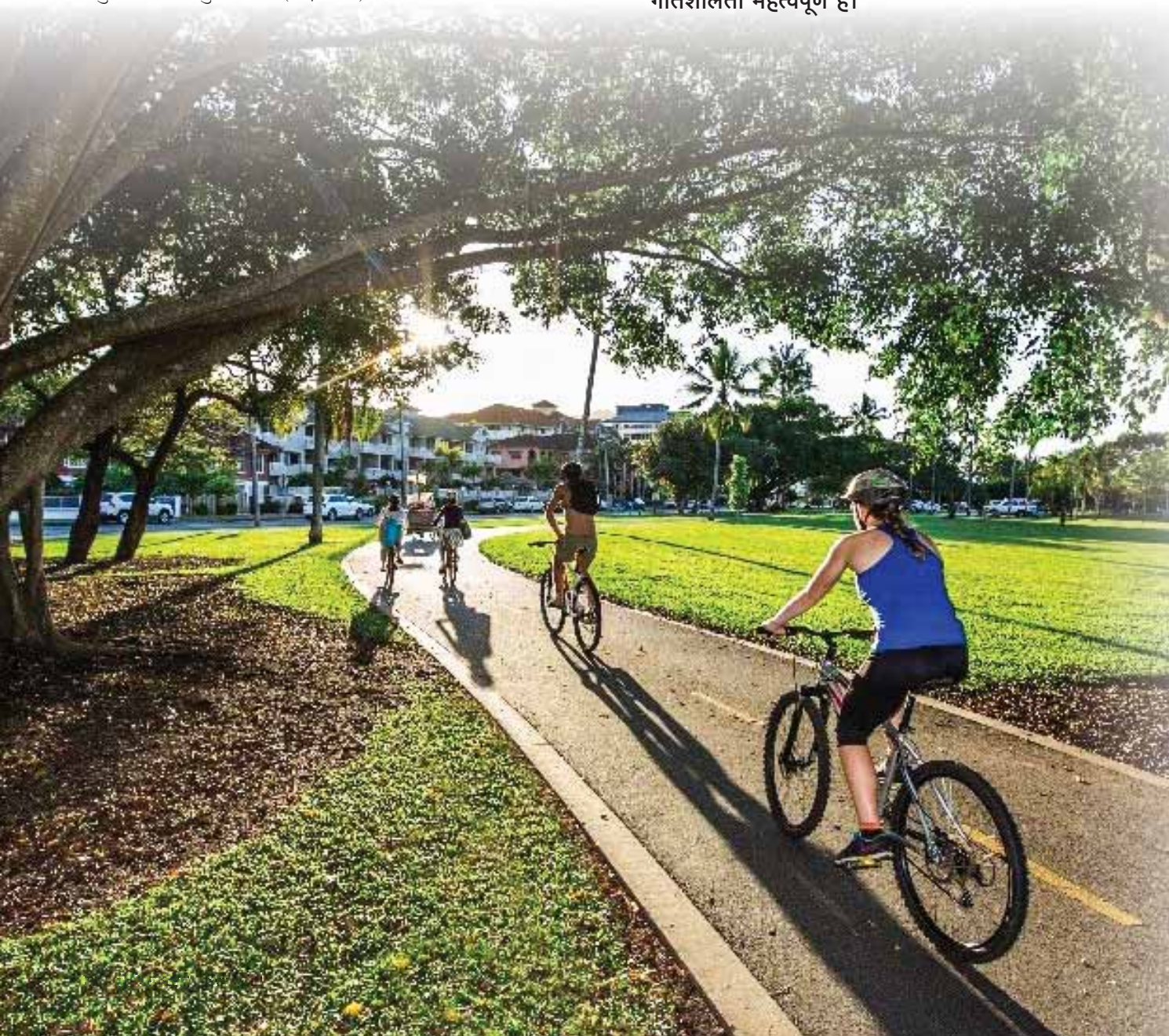

लगभग 20-30 प्रतिशत और कुल ग्रीनहाउस गैसों का 8 प्रतिशत जितना योगदान होता है।

वाहन से निकलने वाले धुंए के कारण होने वाले प्रदूषण की वजह से, उत्सर्जन में कटौती करने और पेट्रोल एवं डीजल से चलने वाली कारों और ट्रकों के बदले इनके इलेक्ट्रिक स्वरूप पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। यह भी सच है कि रातोंरात जीवाश्म ईंधन मुक्त दुनिया में प्रवेश नहीं किया जा सकता, लेकिन जिम्मेदार नागरिकों के रूप में हम कुछ सरल पहलों के माध्यम से वातावरण पर पड़ने वाले उत्सर्जन के भार को कम कर सकते है, जिसके लिए हमारी ओर से थोड़े प्रयासों की आवश्यकता है।

अगर आप पर्यावरण अनुकूल गतिशीलता का हिस्सा बनना चाहते है, तो जहाँ भी संभव हो पैदल जाएं। कार्बन उत्सर्जन को रोकने का इससे बढ़िया तरीका और कुछ नहीं हो सकता। दूसरा विकल्प साइकिल, ई-बाइक या ई-स्कूटर हो सकता है। ये आपको अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करता है, ईंधन की लागत को कम करने के साथ ही यह आपको इस बात की संतुष्टि देता है कि आपने प्रदूषण में वृद्धि नहीं की है।

चूंकि पैदल चलना या साइकिल चलाना कार चलाने का एक बहुत ही बढ़िया विकल्प है। कई यूरोपीय शहर लोगों को काम पर जाने हेतु पैदल चलने या साइकिल चलाने के लिए प्रोत्साहित करते है। लेकिन दुर्भाग्य से, हमारे देश के बड़े महानगरों में सड़कों के बाजू में समर्पित साइकिल ट्रैक नहीं होता है। फुटपाथ अक्सर इतने खराब और संकीर्ण होते है कि आप पास जाने के लिए चलने के बारे में दो बार सोच सकते है। वास्तव में, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और बेंगलुरु में यातायात तेज गति से चलता है और वाहन चालकों के बीच अनुशासन की कमी साइकिल चलाने को खतरनाक बनाते है। यहां तक कि स्कूटर चालकों को भी यातायात अनुशासन की कमी और भारी वाहनों के ओवरटेक करके आगे निकलने की प्रवृत्ति के कारण अपनी किस्मत पर भरोसा करना चाहिए।

दोपहिया वाहनों और पैदल चलने के उपयोग को बढ़ावा देते हुए, सरकार को सड़कों पर यातायात अनुशासन की भावना भी पैदा करनी चाहिए जो पैदल चलने वालों के साथ-साथ ई-स्कूटर और साइकिल जैसे आवागमन के हरित तरीकों का उपयोग करने वालों का सम्मान करती हो।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना एक अच्छा विकल्प है, चाहे वह बस हो या मेट्रो रेल। इस तथ्य के अलावा कि यह सड़कों पर चलने वाले हजारों निजी वाहनों से उत्पन्न होने वाले उत्सर्जन को कम करेगा, यह सस्ता, स्वच्छ और एक महान विकल्प है। वास्तव में, सार्वजनिक परिवहन इतने वर्षों में विकसित हुआ है। हमने कुछ साल पहले पेट्रोल और डीजल वाहनों को उछक्र में तब्दील किया था। हालांकि इससे थोड़ी मदद मिली, लेकिन निजी वाहनों की अपार संख्या ने हवा को साफ करने में किए गए किसी भी लाभ पर पानी फेर दिया। अब सार्वजनिक परिवहन में ई-वाहनों को पेश करने का कदम उठाया गया है, लेकिन यह अभी भी शुरुआती चरण में है क्योंकि इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन या बैटरी स्वैपिंग तंत्र जैसे पर्याप्त बुनियादी ढांचे के निर्माण में लंबा समय लगेगा। इसके अलावा, उच्च लागत इसे अल्पावधि में एक सीमित विकल्प बनाती है।

सौभाग्य से, टियर 2 और टियर 3 शहरों में दोपहिया वाहनों के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा मौजूद है और कुछ में, वे युवाओं के बीच एक चलन बन गए है। हालांकि, देश की शहरी आबादी के बीच निजी से सार्वजनिक परिवहन, जीवाश्म ईंधन से इलेक्ट्रिक, कम दूरी के लिए वाहनों से पैदल चलने या साइकिल चलाने के लिए एक सोच बदलने की आवश्यकता है।

तो, आप स्थायी गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए एक व्यक्ति के रूप में क्या कर सकते है? यदि आप हर दिन काम करने के लिए यात्रा करते हैं और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं, तो आप समान विचारधारा वाले सहयोगियों के साथ कारपूल कर सकते है। आप लागत साझा करते है, पार्किंग पर बचत करते है, और अच्छे दोस्त भी बना सकते है। यह भी एक बुरा विचार नहीं है यदि आप आपकी कॉलोनी में रहने वाले सभी निवासियों को एक साथ लाये और उनके काम पर जाने के मार्ग का एक नक्शा बनाये। इस प्रकार आप आराम से चार यात्रियों को एक कार में फिट कर पाएंगे और

हमें पर्यावरण अनुकूल आवागमन को एक लोकप्रिय और सकारात्मक गतिविधि बनाना चाहिए। यह हमारी सड़कों पर भीड़ कम करने में एक कारगर प्रयास साबित होगा और हमारी ताज़ा हवा में सांस लेने में मदद करेगा।

परिणामस्वरूप अतिरिक्त कारों की भीड़ को सड़कों से दूर कर पाएंगे।

सामाजिक रूप से जागरूक संगठन वाहनों के उत्सर्जन में कटौती को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न इलाकों में कारपूल क्लब बना सकते है। कंपनियों और कार्यालयों को महीने में एक बार कार-फ्री डे रखने के लिए राजी किया जा सकता है जब कर्मचारी दोपहिया वाहन (अधिमानतः साइकिल या ई-स्कूटर) पर काम करने आते हो या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करते हो। कुछ साल पहले, गुरुग्राम में मेट्रो में यात्रियों को एक दूरसंचार कंपनी के उएज और वरिष्ठ प्रबंधन कर्मचारियों को अपने बीच बैठा देखकर सुखद आश्चर्य हुआ था। वे कार-फ्री डे पर काम पर जा रहे थे।

इस तरह की पहलों को लोकप्रिय बनाने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसलिए मेट्रो स्टेशनों और औद्योगिक और वाणिज्यिक परिसरों के बीच अंतिम मील कनेक्टिविटी में सुधार के प्रयास भी होने चाहिए। यह अधिक लोगों को काम पर ड्राइव करने के बजाय मेट्रो से आवागमन करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

अंत में, हमें पर्यावरण अनुकूल आवागमन को एक लोकप्रिय और सकारात्मक गतिविधि बनाना चाहिए। यह हमारी सड़कों पर भीड़ कम करने में एक कारगर प्रयास साबित होगा और हमारी ताज़ा हवा में सांस लेने में मदद करेगा। सन्देश समाप्त

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पट्टुकोट्टई किंग्स - रो ई मंडल 2981

राजामडम में एक विशाल पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मवेशियों की जांच की गई और दवाइयां लिखी गई।

रोटरी क्लब कुंडली - रो ई मंडल 3012

बाल दिवस पर 42 बालीका छात्राओं को साइकिलें भेंट की गई।

रोटरी क्लब मदुरै प्रेसीडेंसी - रो ई मंडल 3000

कैदियों को पढ़ने और लाभान्वित होने के लिए मदुरै सेंट्रल जेल लाइब्रेरी को विभिन्न शैलियों की किताबें दान की गई।

रोटरी क्लब नागपुर मेट्रो - रो ई मंडल 3030

खरगांव गांव में नेत्र-ऑर्थो जांच शिविर से 360 लोग लाभान्वित हुए। लगभग 170 चश्मे वितरित किए गए और 60 रोगियों को मोतियाबिंद सर्जरी के लिए चुना गया।

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ - रो ई मंडल 3011

रोटेरियन राजीव बजाज द्वारा प्रायोजित एक एम्बुलेंस-सह-चलित क्लिनिक *सर्व वाहन* को श्री सत्य साई संजीवनी अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, पलवल, को दान किया गया।

रोटरी क्लब सूरत ईस्ट - रो ई मंडल 3060

गन्ना मजदूरों को ठंड से बचाने के लिए लगभग 650 कंबल वितरित किए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब फगवाड़ा मिडटाउन - रो ई मंडल 3070

IPDG उपिंदर सिंह घई और क्लब अध्यक्ष राज कुमार हीर की मौजूदगी में पांच महिलाओं को सिलाई मशीनें दान की गई।

रोटरी क्लब कानपुर ग्रीन - रो ई मंडल 3110

कानपुर के सांसद सत्यदेव पचौरी के अनुरोध पर क्लब वंचित छात्राओं की स्कूल फीस का खर्च उठा रहा है।

रोटरी क्लब पटियाला ग्रेटर - रो ई मंडल 3090

PDG हरबंस पाठक ने क्लब द्वारा संचालित मूक-बधिर स्कूल के 465 छात्रों के लिए उनकी शादी की सालगिरह के मौके पर दोपहर का भोजन प्रायोजित किया।

रोटरी क्लब कुशीनगर - रो ई मंडल 3120

प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत 179 रिक्शा चालकों, मछली गाड़ी चालकों और कूड़ा बीनने वालों को ₹2 लाख का बीमा कवर प्रदान किया गया।

रोटरी क्लब मुज़ाफ्फरनगर विशाल - रो ई मंडल 3100

परीक्षा पे चर्चा नामक चित्रकारी प्रतियोगिता में कक्षा 9-12 के लगभग 550 छात्रों ने भाग लिया। 25 विजेताओं को सम्मानित किया गया।

रोटरी क्लब तालेगांव दभड़े - रो ई मंडल 3131

झील पुनरुद्धार के हिस्से के रूप में स्वदेशी मछली की किस्मों के लगभग 5,000 वंशजों को एक झील में छोड़ा गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब अंबाजोगाई सिटी - रो ई मंडल 3132

सुन्नने में अक्षम बच्चों के स्कूल ज्ञानसागर कर्णाबधिर विद्यालय को एक भोजन की मेज दान की गई।

रोटरी क्लब हुबली ईस्ट - रो ई मंडल 3170

बेंगेरी गांव में स्थित रोटरी स्कूल में अस्थि घनत्व जांच शिविर से लगभग 80 लोग लाभान्वित हुए।

रोटरी क्लब मुंबई पारलेश्वर - रो ई मंडल 3141

मुंबई में तीन स्वास्थ्य केन्द्रों पर *प्रोजेक्ट प्रोस्पर* के शुभारंभ पर 500 टीबी रोगियों को प्रोटीन की खुराक वितरित की गई।

रोटरी क्लब कोटा सिटी - रो ई मंडल 3182

नेत्र-सह-मोतियाबिंद सर्जरी शिविर में लगभग 140 रोगियों की जांच की गई और 43 रोगियों की मोतियाबिंद सर्जरी की गई।

रोटरी क्लब डोम्बिवली वेस्ट - रो ई मंडल 3142

शिशु हृदय सर्जरी के लिए जुपिटर लाइफलाइन हॉस्पिटल्स को ₹4.2 लाख का चेक सौंपा गया।

रोटरी क्लब बैंगलोर उद्योग - रो ई मंडल 3190

रूट्स एजुकेशन के समर्थन से आयोजित तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम में 5,000 से अधिक सरकारी स्कूल के छात्रों ने भाग लिया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कोयम्बटूर ईस्ट - रो ई मंडल 3201

नेशनल फेडरेशन फॉर ब्लाइंड में 100 परिवारों को पोंगल के उपहार वितरित किए गए। यह कार्यक्रम तीन और क्लबों की मदद से आयोजित किया गया था।

रोटरी क्लब चेन्नई पोर्ट सिटी - रो ई मंडल 3232

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले कैमरों का उपयोग करते हुए राधात्री नेत्रालय के समर्थन से आयोजित दो नेत्र शिविरों में 100 से अधिक लोगों की जांच की गई।

रोटरी क्लब कारामदई - रो ई मंडल 3203

मेट्टुपालयम के सरकारी अस्पताल में ₹5.2 लाख की लागत से डामर की सड़कें बिछाई गई।

रोटरी क्लब जमशेदपुर मिड टाउन - रो ई मंडल 3250

चार्टर अध्यक्ष राज नारायण सिंह की याद में सिद्धू कानू शिक्षा निकेतन में एक पुस्तकालय स्थापित किया गया था। उनकी पत्नी आशा ने पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब अलेप्पी ईस्ट - रो ई मंडल 3211

क्लब ने समाज में वंचित लोगों तक पहुँचने की पहल के हिस्से के रूप में एक विकलांग को व्हीलचेयर दान की।

रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

KSB चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रायोजन से विकलांगों को बारह व्हीलचेयर दान किए गए।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

सर्दी कम पड़ने का दुःख

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

मैं उत्तर भारत में 1958 से रह रहा हूँ, जहाँ हर साल सर्दी कम होती जा रही है। पहले 90 दिनों तक चलनेवाला सर्दी का मौसम अब घटकर आधा रह गया है। 90 के दशक तक सर्दी, नवंबर के मध्य में ठीक दीवाली के बाद शुरू हो कर मार्च के पहले हफ्ते तक रहती थी और तब न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता था। लेकिन आज, फरवरी के पहले सप्ताह में जब ये लेख लिख रहा हूं, अभी से ही न्यूनतम तापमान 12 के इर्द गिर्द मंडरा रहा है, अधिकतम बढ़ता जा रहा है और इसके 22-24 तक पहुँचने की संभावना है।

दिसंबर के तीसरे सप्ताह में भी यही तापमान था, जिसका वास्तव में सीधा सा मतलब ये है कि ठंड का मौसम बमुश्किल 45 दिनों में सिमट गया है जहां तापमान 3-15 की श्रेणी में रहता है। वृद्धों और जिनके सिर पर छत नहीं है, उनके लिए तो यह खबर अच्छी है। लेकिन, लगभग 72 की उम्र का पड़ाव पार करने के बावजूद, मैं इस घटती हुई सर्दी से व्यथित हुए बिना नहीं रह सकता।

संपन्न युवा, जैसा कि अक्सर देखा गया है, वास्तव में सर्दी का इंतज़ार बड़ी बेसब्री से करते हैं। आखिरकार, सिर्फ यही तो वो समय है जब उन्हें गरम सूट, भारी जैकेट, रंगीन विंडचीटर, लंबे मफलर और यहां तक कि गुलाबी मोजे जैसे बढ़िया पश्चिमी परिधान पहनने का मौका मिलता है। सिर्फ यही नहीं। रोज़ाना नहाने की भी ज़रुरत नहीं है। सिर्फ मुंह और पैर धोना ही काफी है। और कहीं आप साफ मोज़े रोज़ बदलते हैं, फिर तो उसकी भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। कुछ लोग तो इतना भी नहीं करते और गंदे मोज़े दुबारा पहन लेते हैं। कभी-कभी आपको उनमें से एक टैक्सी ड्राइवर के रूप में मिल जाता है। पूरा हीटर चलने और खिड़कियां बंद होने की वजह से, यह बहुत तकलीफदेह हो सकता है। खैर, भगवान का शुक्र है कि पहले जिस तरह के पुराने भारी कंबल टैक्सी ड्राइवर इस्तेमाल किया करते थे, उनकी जगह चीनी नायलॉन जैकेट ने ले ली है। कम से कम उनमें से बदबू तो नहीं आती।

कम होती सर्दी अब वास्तव में मैले कोहरे के साथ रहती है। और यह वाकई खराब है, आप ढंग से सांस भी नहीं ले सकते। यह कोहरा पेशावर, लाहौर से होता हुआ आगरा और लखनऊ तक फ़ैल जाता है। तश्तरी की तरह नज़र आने वाले कोहरे का पृथ्वी की तरफ हल्का सा झुकाव इसके अधिक व्युत्क्रमण को सुनिश्चित करता है, जिसमें ऊपर की ठंडी हवा नीचे की प्रदूषित और गर्म हवा को बाहर नहीं निकलने देती। परिणाम: सर्दी का मौसम तो छोटा होता है, लेकिन उसके अनुपात में प्रदूषण बहुत लंबा चलता है। अच्छी चीज को बुरी चीज ने बदल दिया है। युवा हो या वृद्ध, हर समय आंखें जलती रहती हैं और आप तकलीफ झेलते रहते हैं। और यह बद से बदतर होता जा रहा है क्योंकि कार और गाड़ियों की संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

बात यहां सिर्फ कपड़ों की ही नहीं थी जो सर्दियों को इतना आनंद दायक बनाती थी।

सर्दी के दिनों में, हमारे कॉलेज के दिनों और कुंवारेपन में, हम तीन या चार उबले अंडे खाते थे और फिर दो प्लेट हलवा। और कुछ गर्म, मीठी चाय पिया करते थे।

इसमें वो खाना पीना भी शामिल था, जो सड़क किनारे रेड़ियों पर बेचा जाता था - विशेष रूप से बन-आमलेट, उबले अंडे और आलू-पराठे, गाजर का हलवा और मूंग दाल का हलवा, मुंह में पानी आ गया। कॉलेज के दिनों में और शादी से पहले, कुंवारेपन के दौरान, ये हम सभी, पुरुषों और महिलाओं दोनों के मुख्य भोजन हुआ करते थे। पहले हम तीन-चार उबले अंडे खाते और फिर दो प्लेट हलवा डकार जाते। और फिर गरमा गर्म चाय पीते थे। अब तो ये करीब करीब बीते जमाने की बात हो चली है।

सर्दी कम पड़ने का तात्पर्य यह भी है कि अब सर्दियों की बारिश नहीं होती या बहुत कम होती है। दिसंबर के शुरु में और दिसंबर के आखिर में और 26 जनवरी के नज़दीक बारिश हुआ करती थी। पर अब नहीं होती। और पुराना ठंडा कोहरा जो भारी, सफेद और बिलकुल साफ हुआ करता था, अब हल्का हो कर भूरे और मटमैले कोहरे में बदल गया है।

सर्दी की वजह से लड़के, लडकियां , पुरुष और महिला को भारी कपड़ों के कारण आसानी से पहचानना भी मुश्किल था। सोच कर देखिये, इसका अलग ही फायदा था। एक बार की बात है, मेरा दोस्त और उसकी प्रेमिका एक पार्क की बेंच पर आलिंगन कर रहे थे और पीछे से एक कट्टर पुलिसकर्मी आया और लड़की को पुरुष समझकर उसके सिर पर जमा दी। उसने उनके सिर के बालों को देख कर अंदाज़ा लगाया था कि पुरुष कौन था और दोस्त के बाल लम्बे थे, उन दिनों पुरुषों में बाल लंबे रखने का चलन शुरू हो चुका था। जब महिला चिल्ला कर रोने लगी तो उसे वास्तव में पश्चाताप हुआ। लेकिन अफ़सोस, अत्याधिक प्रदूषण के कारण आज पार्क की बेंचों पर बैठा हुआ कोई नज़र नहीं आता। गोया कि प्यार करने का मौसम भी बदल गया है।

संक्षेप में

भारत का पहला 3D-प्रिंटेड घर

चेन्नई स्थित TVASTA मैन्युफैक्चरिंग सॉल्यूशंस ने IIT-मद्रास के पूर्व छात्रों द्वारा परिकल्पित भारत का पहला 3D-प्रिंटेड घर बनाया है। 600 वर्ग फुट में बने इस एक मंजिला घर में एक बेडरूम, हॉल और किचन है। हैबिटेट फॉर ह्यूमैनिटीस टेरविलिगर सेंटर फॉर इनोवेशन इन शेल्टर के सहयोग से विकसित इस घर का निर्माण कंक्रीट 3D प्रिंटिंग तकनीक का उपयोग करके किया गया।

सबसे बड़ी पहनने योग्य केक पोशाक

स्विट्ज़रलैंड की एक बेकर, नताशा कोलिन किमा फाह ली फोकस ने पहनने योग्य सबसे बड़ी केक ड्रेस (समर्थित) के लिए एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने रिकॉर्ड के लिए 131.5 किलोग्राम वजन के केक से बनी पोशाक तैयार करके पहनी। इस पोशाक की परिधि 4.15 मीटर, ऊंचाई 1.57 मीटर और व्यास 1.319 मीटर था।

पायलट ने आसमान में बनाया भारत का नक्शा

एक यूट्यूबर, पायलट और फिटनेस उत्साही गौरव तनेजा ने गणतंत्र दिवस पर ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (GPS) का उपयोग करके आकाश में भारत का नक्शा बनाया। तीन घंटे की यह उड़ान *आसमान में भारत* मिशन के तहत 350 किलोमीटर का GPS आर्ट मैप बनाने के लिए थी।

प्लास्टिक प्रदूषण की सफाई के लिए 25 मिलियन डॉलर

Airbnb और डारीर के सह-संस्थापक जो गेबिया ने डच के एक गैर-लाभकारी संस्थान द ओशन क्लीनअप का समर्थन करने के लिए 25 मिलियन डॉलर का दान दिया है। *सिस्टम 002* नामक एक गैर-लाभकारी संस्थान की पायलट-स्केल महासागर सफाई प्रणाली 2021 से ग्रेट पैसिफिक गार्बेज पैच में तैनात की गई और अब तक करीब 200,000 किलोग्राम प्लास्टिक हटा लिया गया है।

बार्बी ने पहली अश्वेत महिला पायलट को सम्मानित किया

बेसी कोलमैन, जो 1920 में अंतर्राष्ट्रीय पायलट का लाइसेंस प्राप्त करने के लिए फ्रांस की उड़ान भरकर पहली अश्वेत व्यक्ति बनी क्योंकि उस समय अमेरिका में अश्वेत महिलाओं के लिए पायलट प्रशिक्षण हेतु कोई अवसर नहीं थे, वो बार्बी डॉल श्रृंखला में सम्मानित होकर नवीनतम नायक बनी। 'ब्रेव बेसी' गुड़िया एक पारंपरिक जैतून-हरे रंग के एविएटर सूट से सुसज्जित है जिसके साथ उसने एक टोपी पहनी हुई है जिसपर उनके नाम का शुरुआती अक्षर इउ अंकित है।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹40
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

ADVT

Excel group
www.excelgroup.co.in

Customer | Service | Quality
FIRST

EXIM னா Excel தான்..!!

Excel maritime
Your Global Logistics Partner

First time in India,
Excel Maritime loaded the longest windmill blade, measuring 240 feet, at VOC Port in Tuticorin.

Contact: +91 44 49166999
+91 93827 50004
Mail: excel@excelgroup.co.in
/ excelgroup | www.excelgroup.co.in

MMMTRICHY
PDG AKS. Rtn. Muruganandam. M
B.E., M.B.A., M.S., M.F.T., PGDMM., DEM.,
RPIC - Zone 5 (2023-2026) | District Trainer (2023-24)
District Governor (2016-17) | RID 3000
Chairman - Excel Group of Companies

மாறு..!! மாற்று..!!
/ mmmtrichy | www.mmmtrichy.com